३४ वर्षों से अपने दुःख-सुख के साथी

मित्रवर भाई नन्हेमलजी जैन को

सस्नेह भेंट

शरद् पूर्णिमा
वि० सं० २०१५

—गोयलीय

विषय-सूची

श्री अर्श मलसियानी

श्री गोपाल मित्तल

हज़रत असग़र अंसारी

हज़रत अहमद नदीम क़ासिमी

श्री जगन्नाथ आज़ाद

श्रीमान फतेलालजी श्रीचन्दजी गोलेछा
जयपुर वालों की ओर से भेंट ॥

आधुनिक शाइरी

'शाइरीके नये दौर' और 'नये मोड़' के भागोंमें आधुनिक शाइरीके विविध अंगोंका विवरण दिया जा रहा है। इनमे पूर्वके 'शेरो-शाइरी' और 'शेरो-सुखन'के पाँच भागोंमें ग़ज़लका क्रमबद्ध इतिहास, प्रारम्भसे अब तकके लब्ध प्रतिष्ठित ग़ज़ल-गो शाइरोंका जीवन-परिचय एवं कलाम, ग़ज़लपर तुलनात्मक विवेचन दिया जा चुका है।

नज़्म और मर्सियाका इतिहास 'शाइरीके नये दौर' के द्वितीय दौरके 'प्राथमिक' में आ गया है। प्रस्तुत मोड़में ग़ज़लों, नज़्मोंके अतिरिक्त-क़तोंका विशेष रूपसे चुनाव किया गया है।

फ़ारसी और उर्दूमें ग़ज़लकी तरह रुबाई कहनेका रिवाज भी पुराना है। उमरख़ैयाम और हाफ़िज़की रुबाइआत फ़ारसीकी अमर निधि हैं। विश्वकी अनेक भाषाओंमें उनके बहुत सुरुचिपूर्ण संकलन प्रकाशित हुए हैं और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति उत्तरोत्तर मिलती जा रही है।

उर्दूमें भी—अनीस लखनवी, शाद अज़ीमाबादी, जोश मलीहाबादी, आसी ग़ाज़ीपुरी, फ़िराक़ गोरखपुरी, तिलोकचन्द महरूम, अमजद हैदराबादी, यगाना चंगेज़ी, आसीउद्दनी वग़ैरहके रुबाइयोंके संकलन हमारी नज़रोंसे गुज़रे हैं। रुबाइयोंकी लोकप्रियता और उपयोगिता यहाँ तक बढ़ी हुई है कि काफ़ी शाइर, ग़ज़लों और नज़्मोंके अतिरिक्त ख़ास तौर पर रुबाइयाँ कहते हैं और उनके संकलन प्रकाशित कराते हैं। यहाँ तक कि जो

१. 'अनीस' के अतिरिक्त उक्त शाइरोंकी चुनी हुई रुबाइयोंके नमूने शेरो-सुख़नके पाँचों भागों और शाइरीके नये दौर और नये मोड़में दिये गये हैं और अच्छी रुबाइयोंके नमूने आगेके 'दौरों' और 'मोड़ों' में भी दिये जाएँगे।

शाइर रुबाइयात कहनेमें विशेष अभ्यास नहीं रखते, उनमें-से भी अधिकांश शाइर मुशाअरोंमें अपना कलाम पढ़नेसे पहले दो-एक रुबाई पेश करते हैं और श्रोता बहुत चावसे सुनते हैं।

उर्दूके अनुकरणमें कुछ हिन्दी-कवि भी कवि-सम्मेलनोंमें कविता-पाठ करनेसे पूर्व रुबाइयाँ पढ़ने लगे हैं और हिन्दी भाषा भाषी भी बहुत दिलचस्पीसे सुनते हैं।

कता भी रुबाईकी तरह चार मिसरोंका होता है। केवल इतना अन्तर है कि रुबाईके पहले, दूसरे और चौथे मिसरे समान क़ाफ़िये-रदीफ़ में होते हैं और उनकी बह्र ग़ज़लसे भिन्न होती है। कता ग़ज़लकी प्रायः सभी बह्रोंमें कहा जा सकता है और उसके दूसरे-चौथे मिसरे समान काफ़िये-रदीफ़में होते है और जब कतेका पहला शेर मतला बन जाता है। तब उसके भी पहले, दूसरे और चौथे मिसरे समान काफ़िये-रदीफ़में हो जाते हैं। बहुत अच्छी चुनी हुई रुबाइयाँ शेरो सुखनके २, ३, ४ भागोंमें और शाइरीके नये दौरके दोनों दौरोंमें दी जा चुकी हैं और आगेके हिस्सोंमें भी प्रसंगानुसार उल्लेख होता रहेगा। कते प्रस्तुत मोडमें काफी दिये जा रहे हैं, फिर भी दोनोंका अन्तर समझनेके लिए यहाँ एक-एक नमूना दिया जा रहा है।

रुबाइ—

कब कोई जहाँमें छूटता है ग़मसे ?
दिल आख़िरकार टूटता है ग़मसे
सद्‌मातमें खुलती हैं बशरकी आँखें
फोड़ा ग़फ़लतका फूटता है ग़मसे

—महरूम

उक्त चार मिसरोंमें पहला, दूसरा और चौथा मिसराक़समान क़ाफ़िये और रदीफ़में है।

क़तअ

> ज़िन्दगीकी तवील राहोंमें[1]
> मुतल्क़न[2] पेचो-ख़म नहीं होंगे
> एक ऐसा भी वक़्त आयेगा
> जब यह दैरो-हरम[3] नहीं होंगे

—नरेशकुमार शाद

उक्त क़तेमें दूसरा-चौथा मिसरा समान क़ाफ़िये-रदीफ़में है। अगर क़तेका पहला शेर मतला बन जाये तो उसके पहले, दूसरे और चौथे मिसरे भी समान क़ाफ़िये-रदीफ़में रुबाई जैसे ही होते हैं—

क़तअ

> इक मौज मचल जाये तो तूफ़ाँ बन जाय
> इक फूल अगर चाहे गुलिस्ताँ बन जाय
> इक ख़ूनके क़तरेमें है तासीर इतनी
> इक क़ौमकी तारीख़का 'उनवाँ'[4] बन जाय

—अदम

इतनी अधिक समानता होते हुए भी शाइर क़ते न कहकर रुबाइयाँ ही कहते थे। अगर ग़ज़ल कहते हुए कभी कोई भाव एक शेरमें न आ सका तो उसे मजबूरन चार मिसरोंमें या उससे अधिक मिसरोंमें बाँधना पड़ता था और एक ही भावके बोधक ऐसे अशआरपर क़तअ लिखकर ग़ज़लके साथ ही लिखने-पढ़ने थे। उनका कोई पृथक अस्तित्व नहीं होता था।

१. लम्बे मार्गोंमें, २. क़तई, ३. मन्दिर-मस्जिद, ४. इतिहासका शीर्षक।

इसकी ओर अख्तर अंसारीने विशेष ध्यान दिया और उन्होंने रुबाई-आतकी तरह क़तआतका अस्तित्व भी गजल और नज़्मसे सर्वथा भिन्न रक्खा। ख़ुद फ़र्माते हैं—

"आजसे तक़रीबन बीस साल क़ब्ल (१६३५ ई० के पूर्व) जब मैंने शेर कहना शुरू किया तो आग़ाज़कार (प्रारम्भकाल) ही से नज़्म और गजलके साथ कतेको भी अपना मतमहे-नज़र (मुख्य लक्ष्य) बनाया। और इस बारेमें मेरा मख़सूस उसलूब बहुत वाज़ह और मुतऐन (इस सम्बन्धमें मेरा विशेष उद्देश्य बहुत स्पष्ट और स्थिर) हो गया। मैंने शुरू ही से इस बातकी कोशिश की कि क़तेका कोई मिसरा बेकार या भर्तीका न हो। पहले मिसरेसे चौथे मिसरेतक न सिर्फ़ ख़यालका तसलसुल (भावोंका क्रम) बल्कि ख़यालका इरतक़ा (संगठित रूप) भी पाया जाये। गोया पहले मिसरेमें जो बात कही गई है, उसे दूसरा मिसरा आगे बढ़ाये और इसी तरह चौथे मिसरेतक मज़मून फैलता बढ़ता और बुलन्दसे बुलन्दतर होता चला जाये। फिर ख़यालके तदरीजी इरतक़ा (भावोंके शनैः-शनैः गठन) के साथ-साथ तास्सुर (प्रभाव, असर) भी ज़्यादे-से-ज़्यादा गहरा होता जाये। ज़ाहिर है कि इस तरह जो क़तआ वजूद (अस्तित्व) में आयेगा, वह उस क़तअसे यकसर मुख़्तलिफ़ होगा, जिसमें शाइर आख़िरी मिसरा कहकर ऊपरसे तीन मिसरे चिपका देता है; और इन तीन मिसरोंका मज़मून अक्सर वही होता है जो चौथे मिसरेमें अदा किया जा चुका है। यह जदीदुलसलूब (नवीन ढगसे कहा हुआ) क़तआ दरअस्ल एक मिमटी हुई नज़्म होगा और कूज़ेमें दरिया (गागरमें सागर) बन्द कर देनेवाली कैफ़ियतका नमूना पेश करेगा।"

"चारों मिसरोंकी यकसाँ अहमियत, अफ़ादियत (समान महत्ता एवं उपयोगिता) उसकी बुनियादी ख़सूसियत (मौलिक विशेषता) होगी। फिर यही ख़सूसियत एक तरहसे कसौटीका भी काम देगी। यानी हम देखेंगे कि इब्तदाई (पहले) दो मिसरे ख़ारिज कर देनेसे क़तेका मफ़हूम

और तास्सुर मजरूह (आशय और प्रभाव नष्ट) नहीं होता तो हम क़ते को नाकिस और साक़ितुल्फ़न (व्यर्थ और कलाहीन) ख़याल करेंगे।"

"इस मख़सूस उसलूब (ख़ासरंग) की पैरवी मेरे सब नहीं तो बहुत-से क़तोंमें कुछ इस तौरसे हुई है कि क़तेके पहले दो मिसरोंमें एक ख़ास माहौल (वातावरण) की मुसव्वरी की जाती (छवि खींची जाती) है, या एक ख़ास फ़ज़ाके नक़ूश (कैफ़ियतके चित्रों)को उजागर किया जाता है। फिर तीसरे मिसरेमें उस पसे-मंज़रका सहारा लेते हुए एक असूमी अन्दाज (आमढंग) की बात कही जाती है। यह बात उस सारे पसेमंज़रको एक ख़ास रंगमें रंग देती है, या यूँ कहना चाहिए कि पेश करदा माहौलके नक़ूश (उल्लिखित वातावरण) को एक ख़ास ज़ावियेनिगाह (दृष्टिकोण) से देखनेमें मदद देती है। इस तीसरे मिसरे ही के साथ उस तास्सुराती कैफ़ियत (प्रभावक स्थिति) का भी आग़ाज़ (प्रारम्भ) हो जाता है, जिसकी तकमील (पूर्णता) क़तेकी मजमूई तास्सुर (सम्पूर्ण भाव) की हैसियतसे आगे चलकर चौथे और आख़िरी मिसरेमें होती।..."

"क़तेका सारा फ़न ड्रामाइयतका फ़न है। इसमें एक चौंका देने वाला अन्दाज़ होना चाहिए। एक कौन्देकी-सी लपक, एक नश्तरकी-सी चुभन। यही तेज़ी, नोक और धार क़तेको एक तराशे हुए हीरेका रूप देती है और उसकी कामयाबीका मेयार मुतऐन (आदर्श स्थिर) करती है। यही वह चीज़ है जो क़तआतकी शाइरी और ग़ज़लकी शाइरीमें एक और हद्दे-फ़ासिल (अन्तर) क़ायम करती है। ग़ज़लकी शाइरीमें अच्छी और बुरी ग़ज़लके अलावा बहुत अच्छी, बहुत ज्यादा अच्छी और निहायत अच्छी भी ग़ज़ल हो सकती है। मतलब यह कि फ़नकी एतबार (कलात्मक दृष्टि) से ग़ज़लके कितने ही मेयार हो सकते हैं। यह इसलिए कि ग़ज़ल मुतफ़र्रिक़ और मुख़्तलिफ़ (विविध और भिन्न-भिन्न भावोंके) अशआरसे मिलकर बनती है और अगर उसमें चन्द शेर मामूली हैं तो चन्द शेर अच्छे भी हो सकते हैं और एक-आध शेर बहुत अच्छा भी हो सकता है।

क़तेकी शाइरीमें ऐसा नहीं है। क्योंकि क़ता बजाए ख़ुद एक इकाईकी हैसियत रखता है। वह या तो सब कुछ है, या कि कुछ भी नहीं है। अगर तीर निशाने पर बैठ गया तो मैदान मार लिया और अगर नहीं बैठा तो फिर मुकम्मिल शिकस्त (पूरी पराजय) के सिवा कोई दूसरी सूरत मुमकिन नहीं है।"[1]

अख़्तर साहबका क़तेके लिए किया गया प्रयास उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। रुबाइयातकी तरह क़तआत कहनेमें भी शाइर दिलचस्पी लेने लगे हैं। पत्र-पत्रिकाएँ क़ते बहुत चावसे छापते हैं। मुशाअरोंमें क़तआत कहनेका रिवाज बढ़ता जा रहा है और क़तआतके कई अच्छे संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। अख़्तर अंसारी, अहमद नदीम क़ासिमी, और रईस अमरोहवीके क़तआत काफ़ी ख्याति पा चुके हैं। अतः हमने प्रस्तुत पुस्तकमें उक्त महानुभावके क़तआत चुनकर देनेका प्रयास किया है।

प्रस्तुत मोड़में जिन ख्याति-प्राप्त शाइरोंका परिचय एवं कलाम दिया गया है, उनके शाइराना मर्तबेपर और उनकी शाइरीपर तुलनात्मक अध्ययन सम्पूर्ण भागोंके अन्तमें अन्य शाइरोंके साथ प्रस्तुत किया जायगा।

२६ अक्तूबर १९५८ ई०]

१. नरेशकुमार शाद कृत 'क़ाशें' मुक़द्दमा पृष्ठ १४–२२।

दूसरा मोड़

अर्श मलसियानी

श्री० बालमुकुन्द साहब 'अर्श'का जन्म २० सितम्बर १९०८ ई० में पंजाबके एक छोटे-से गाँव मलसियानमें हुआ। मलसियान गाँव शेरो-अदबके लिए बिलकुल बंजर था। वहाँ आपके पिता हज़रत 'जोश' मलसियानीसे पूर्व शायर और साहित्यिक तो दरकिनार कोई पढ़ा-लिखा भी न था। वहींके देहाती स्कूलमें आपकी शिक्षाका श्रीगणेश हुआ। अभी आपको स्कूलमें जाते हुए १-२ माह हुए थे कि आपके पिता मुलाज़िमतके सिलसिलेमें अपने गाँवसे ८ मील दूर नकोदर रहने लगे। तब आप वहाँके स्कूलमें पहले दर्जेमें भर्ती हुए और वहीं व्यवस्थित रूपसे शिक्षा प्राप्त की। अपने दर्जेमें हमेशा अव्वल रहे और शिक्षकोंसे सदैव स्नेह और आशीर्वाद पाते रहे। एफ. ए. में पढ़ रहे थे कि अनिच्छा होते हुए भी ओवरसियरीके मुक़ाबिलेके इम्तिहानमें आपको बैठना पड़ा और क़ुदरतकी सितमज़रीफ़ी देखिए कि जो व्यक्ति फ़ितरतन शायराना दिलो दिमाग़ लेकर पैदा हुआ, उसे ओवरसियरीके इम्तहानमें पास कराके नहर-विभागका ओवरसियर भी नियुक्त करा दिया।

उस ग़ैर शायराना माहौलमें अर्श साहबका मन घुटने लगा। एक सालमें तीन बार इस्तेफ़ा दिया और जैसे-तैसे उस बन्धनसे भाग निकले। लुधियानेके एक स्कूलमें शिक्षक हो गये। यहीं प्राइवेट तौरपर बी. ए. किया। मुशायरोंका चस्का कॉलिजके ज़मानेसे लगा हुआ था। प्रारम्भमें तहतुल्लफ़्ज़ (बिना गाये) पढ़ते थे। फिर तरन्नुमसे पढ़ने लगे तो वाह-वाहके डोंगरे बरसने लगे। शेर कहनेका उत्साह उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। [illegible] [illegible] तत्त्वावधानमें होनेवाले १९३० से १९६० तकके कई महत्त्वपूर्ण मुशायरोंमें बराबर सम्मिलित हुए।

शिमलेके मुशाअ़रोंमें आपका कितने ही ख्यातिप्राप्त शाइरों और साहित्यिकोंसे परिचय हुआ। वहाँ आपको इनाम और पदक भी प्राप्त हुए। एक पदक मि० ग़ुलाम मुहम्मद-द्वारा भी दिया गया। उन्हींकी मेहरबानीसे आपको स्कूलकी मास्टरीसे छुटकारा नसीब हुआ।

दिल्ली आकर पहले सप्लाई विभागमें, फिर मेडिंग पब्लिसिटीमें, फिर लेबर विभाग, फिर मिनिस्ट्री ऑफ इन्फ़ारमेशन एण्ड ब्रॉडकास्टिंगमें रहे। १९४८ ई० मे भारत-सरकारके मासिक उर्दू-पत्र 'आजकल' में सहायक सम्पादक नियुक्त हुए और जनवरी १९५६ से प्रधान सम्पादकके पदपर आसीन हैं।

हिन्दोस्तान और पाकिस्तानके बड़े-बड़े मुशाअ़रोंमें आपकी उपस्थिति आवश्यक समझी जाती है। रेडियो स्टेशनोंसे आपके साहित्यिक भाषण और कलाम प्रसारित होते रहते हैं। आप गुटबन्दीसे दूर रहते हैं। आपके निम्नलिखित दो सकलन हमारे सामने हैं—

१. हफ्त-रंग—प्रकाशक, मरकज़े-तमद्दुनो-तालीम नकोदर (जालंधर) १९५१ ई० पृ० १९२।

२. चंग-ओ-आहंग—प्रकाशक पूर्ववत्, १९५३ ई० पृ० २४०।

उक्त दोनों सकलनोंसे आपका कलाम चयन किया गया है।

कमज़र्फ़ दुनिया

यह दौरे-ख़िरद[2] है, दौरे-जुनूँ[3]! इस दौरमें जीना मुश्किल है,
अंगूरकी मै के धोकेमें ज़हराबका[4] पीना मुश्किल है,

---

१. जा बादमें पाकिस्तानके गवर्नर जनरल बने।

२. अक्लवालोंका युग, चालाकोंका ज़माना, ३. उन्माद युग, भोलेपनका युग, ४. ज़हर मिला पानी।

जब नाख़ुने-वहशत[1] चलते थे, रोकेसे किसीके रुक न सके
अब चाके-दिले-इन्सानीयत[2] सीते हैं तो सीना मुश्किल है,
जो 'धर्म' पै बीती देख चुके 'ईमाँ' पै जो गुज़री देख चुके
इस 'रामो-रहीम'की दुनियामें इन्सानका जीना मुश्किल है,
इक सब्रके घूँटसे मिट जाती, सब तिश्नालबोंकी[3] तिश्नालबी[4]
कमज़र्फ़ीए - दुनियाके[5] सदक़े[6] यह घूँट भी पीना मुश्किल है,
वह शोला[7] नहीं जो बुझ जाये आँधीके एक ही झोंकेसे
बुझनेका सलीक़ा आसाँ है, जलनेका क़रीना मुश्किल है,
करनेको रफ़ू कर ही लेंगे दुनियावाले सब ज़ख़्म अपने
जो ज़ख़्म दिले-इन्साँ पै लगा, उस ज़ख़्मका सीना मुश्किल है,
वह मर्द नहीं जो डर जाए, माहौलके ख़ूनी मंज़रसे[8]
उस हालमें जीना लाज़िम है, जिस हालमें जीना मुश्किल है,
मिलनेको मिलेगा बिलआख़िर[9] ऐ 'अर्श'! सकूने-साहिल[10] भी
तूफ़ाने-हवादससे[11] लेकिन बच जाये सफ़ीना[12] मुश्किल है,

इन्तबाह

[६ में-से ३]

सुख की गरदन काट रही है दुनियाकी तलवार तो देख
जिस तलवारको चूम रहा है उस तलवारकी धार तो देख

१. दीवानगीके नाख़ून, २. मानवताका भग्न हृदय, ३. प्यासोंकी, ४. प्यास, ५. नीच दुनियाके, ६. क़ुर्बान, न्योछावर, ७. अंगारा, ८. वातावरणके रक्त-रंजित दृश्यसे, ९. ज़रूर, १०. दरिया किनारेकी शान्ति, ११. मुसीबतोंके तूफ़ानसे, १२. नौका।

जान यहाँ हर चीज़की क़ीमत, आन यहाँ हर चीज़का मोल
सौदा करनेवाले ग़ाफ़िल ! पहले यह बाज़ार तो देख
डंक निहायत ज़हरीले हैं मज़हब और सियासतके[1]
नागोंकी नगरीके वासी ! नागोंकी फुंकार तो देख,

तेवर तो देख ज़मानेके

हर बातमें आपा-धापी है, चालाकी है तर्रारी है,
दुनियाके फ़सानेका उनवाँ[2] मक्कारी है, ऐय्यारी है,
अफ़सोस कि ऐसी दुनियामें तू मस्ते-मए-ख़ुद्दारी[3] है,
तेवर तो देख ज़मानेके

राहतका[4] यहाँ अब काम नहीं, यह दौर है रंजो-मुसीबतका
मासूमकी गर्दन कटती है, सद्चाक है दामन इस्मतका[5]
है नाज़ शराफ़त[6] पर तुझको, ज़िल्लत[7] है मोल शराफ़तका
तेवर तो देख ज़मानेके

ज़हरीले डंक चलाते है दुनिया पर यह दुनिया वाले
गोरी क़ौमोंकी चाँदी है, मातूबे-मुक़द्दर[8] है काले
तू क्यों है अमलसे बेगाना[9] ऐ कैफ़े-ख़ुदीके मतवाले[10] !
तेवर तो देख ज़मानेके

---

१ राजनीतिके २. ससारकी व्यवस्था रूपी उपन्यासका नाम, ३. स्वाभिमानकी मदिरासे बेहोश, ४. सुख-चैनका, ५. शीलका परिधान फटा हुआ है, ६. भद्रतापर अभिमान, ७. अपमान, बदनामी, ८. दुरदुरित, अभागे, ९. अमलो जीवनमे अपरिचित, १०. आत्मविश्वासी ।

जो ख़ुद मंज़िलसे ग़ाफ़िल है, ऐसे हैं राहनुमा[1] लाखों,
ख़ुद उक़्दा[2] जिनका हल न हुआ, ऐसे हैं उक़्दह कुशा[3] लाखों
लेकिन तू अजजका बन्दा[4] है, जिस बन्देके आक़ा[5] लाखों,
तेवर तो देख ज़मानेके

हर घरमें हविसका[6] डेरा है, हर देशमें हिर्स-परस्ती[7] है,
अक़वामके[8] अम्नकी[9] ख़ुद दुश्मन अक़वामकी ग़ालिब दस्ती[10] है,
कैफ़ीयते-अम्नके शैदाई[11] ! तू माइले-कैफ़ो-मस्ती है,
तेवर तो देख ज़मानेके

ज़रदारके पल्लेमें कुदरत, मुफ़लिसका जहाँमें नाम नहीं
कसरत है ख़ुदाओंकी इतनी, बन्देका यहाँ कुछ काम नहीं
मरनेकी दुआ हर लब पर है, जीनेका कहीं पैग़ाम नहीं
तेवर तो देख ज़मानेका

अब वजहे-फ़िसाद तिजारत[12] है, अब अम्नकी ज़ामिन[13] जंग हुई
नामूसमें[14] मिटनेकी ख़्वाहिश, इस दौरमें वजहे-नंग[15] हुई
अल्लाहके बन्दों पर तौबा, अल्लाहकी ज़मीं भी तंग हुई
तेवर तो देख ज़मानेके

---

१. नेता, २. समस्या, ३. समस्या सुलझानेवाले, ४. नम्रताका सेवक, ५. स्वामी, ६. तृष्णाका, ७. लालचकी पूजा, ८. जनताके, ९. शान्तिकी, १०. जनताकी एक-दूसरेपर अधिकार पानेकी इच्छा, ११. सुख चैनके इच्छुक, १२. लड़ाई झगड़ेका कारण आर्थिक है, १३. ज़मानत देनेवाली, १४. इज़्ज़तपर, १५. बदनामीका कारण ।

अब पिन्दो-नसायह[1] सुनते हैं, हम तोपों और मशीनोंसे
होता है इलाजे-दर्द जहाँ, तलवारोंसे संगीनोंसे
है अब तक लेकिन रब्त तुझे, सज्दोंसे और जबीनोंसे
तेवर तो देख ज़मानेके

जड़ काटके रख तक़लीदकी[2] तू, तेवर भी देख ज़मानेके
बुनियाद भी रख तजदीदकी[3] तू, तेवर भी देख ज़मानेके
उम्मीद भी रख ताईदकी[4] तू, तेवर भी देख ज़मानेके
तेवर तो देख ज़मानेके

जब आदमी वहशी बन गया

बस्तियों-की-बस्तियाँ बर्बादो-वीराँ हो गईं
आदमीकी पस्तियाँ[5] आख़िर नुमायाँ हो गईं
क़त्लो-ग़ारतके हज़ारों दाग़ लेकर वहशतें[7]
आज सुनते हैं कि फिर इस्मत बदामाँ[8] हो गईं
देखिए सरसब्ज़[9] कब होती है कश्ते-जिन्दगी[10]
आँधियाँ कहते तो हैं अब्रे-बहाराँ[11] हो गईं
यूँ कभी मज़हबकी क़द्रोंको न इन्साँ छोड़ता
ऐ ख़ुशा[12]! वह ख़ुद बलाए-जाने-इन्साँ हो गईं

१. उपदेश और शिक्षाप्रद बातें, २. अनुकरणकी, ३. आविष्कारकी, ४. समर्थनकी, ५. पतितावस्थाएँ, ६. प्रकट-उजागर, ७. पागलपन, ८. शीलको लूटने वाली, ९. हरी भरी, १०. जीवन-खेती, ११. वर्षाका रूप, १२. खुशीकी बात है।

कौन अब नेकी करे इन्सानियतके नाम पर
नेकियाँ तो जिस क़दर थीं सर्फ़े-ईमाँ[1] हो गईं
जिन ख़ताओंपर दरे-जन्नत[2] हुआ आदमपै बन्द
वह ख़तायें ही बिनाए-बज़्मे-इमकाँ[3] हो गईं

जश्ने - आजादी [१४ मं-से १]

रोने वालोंकी हँसीको पहिले वापिस लाइए
शौक़से फिर जश्ने-आज़ादी मनाते जाइए

शहीदे - आजम

ज़मीने - हिन्द थर्राई मचा कोहराम आलममें
कहा जिस दम जवाहरलालने "बापू नहीं हममें"
फ़लक[4] काँपा, सितारोंकी ज़ियामें[5] भी कमी आई
ज़माना रो उठा दुनियाकी आँखोंमें नमी आई
कमर टूटी वतन वालोंकी अह्ले-दिलके दिल टूटे
हुए अफ़सुर्दा[6] बाग़े-नेकी-ओ-ख़ूबीके गुल बूटे
हमें क्या होगया था हाय यह क्या ठानली हमने
ख़ुलूसो - आश्तीके[7] देवताकी जान ली हमने

---

१. ईमानके लिए खर्च, २. जन्नतका द्वार, ३. जिन पापोंके कारण कभी स्वर्गका द्वार मनुष्यके लिए बन्द था वही पाप मज़हबी दीवानगीमें स्वर्ग जानेमें सहायक समझे जा रहे हैं, ४. आकाश, ५. नक्षत्रोंकी चमकमें, ६. मुर्झा गये, ७. मुहब्बत और शान्तिके।

जो दौलत लुट चुकी अफ़सोस अब वापिस न आयेगी
हज़ारों साल रहकर भी उसे दुनिया न पायेगी
यह अच्छी क़ौम है जो क़ौमके सरदारको मारे
यह अच्छा धर्म है जो धर्मके अवतारको मारे
निगाहे-अहले-आलममें[1] मलामतका हरफ़[2] हम हैं
हमीने क़त्ल बापूको किया है ना-खलफ़[3] हम हैं,
हमीं हैं मसलके-मुहसन शनासी[4] छोड़नेवाले
किनारे पर पहुँचते ही सफ़ीना[5] तोड़नेवाले
उम्मीदे-क़ौमकी बुनियाद थी जिस एक बन्दे पर
ग़ज़ब है गोलियाँ बरसाएँ हम उस नेक बन्दे पर
अकेली जान उसकी बोझ दुनिया भरका सहती थी
मगर जो बात कहता था वह 'ताबिर होके रहती थी
हज़ारों रहमतें[6] राहे-ख़ुदामें[7] मरने वाले पर
हुसैन इब्ने-अलीकी[8] याद ताज़ा करने वाले पर

ग़ज़लें

मिरी ख़ामोशीए-दिलपर न जाओ
कि इसमें रूहकी[9] आवाज़ भी है

१. संसारकी नजरोंमें, २. लानतके अक्षर, ३. कपूत, ४. कृतज्ञताकी परम्परा, ५. नौका, ६. ईश्वरकी कृपाएँ, ७. सत्यधर्म, ईश्वरके नामपर, ८. शहादतका जाम हजरतअलीके पुत्र हुसैनकी तरह पीनेपर, ९. आत्माकी।

अर्ज़े - वाजिबसे[1] भी रक्खा बे - नियाज़[2]
मुझको ले डूबीं मेरी ख़ुद्दारियाँ[3]
उनसे मिलता है, क़नाअ़तका[4] सबक़
एक नअ़मत[5] है, मेरी नादारियाँ[6]
कोशिशे - इज़हारे - ग़म भी ज़ब्त भी
आह यह मजबूरियाँ, मुख़्तारियाँ
'अर्श' क्यों हँसता है तू झूटी हँसी
किससे सीखी है यह दुनियादारियाँ ?

अ़ज़मते - रहमते - ख़ुदावन्दी[7]
आरज़ूए - गुनाहसे[8] पूछो
उनकी पैहम नवाज़िशोंका[9] असर
मेरे हाले - तबाहसे पूछो

मौतसे कुछ नहीं ख़तर मुझको
वह तो हर वक़्त पास रहती है

मैकदे पर[10] यह किसने दस्तक[11] दी ?
ज़ाहिदे - हक़ - परस्त[12] है शायद

---

१. उचित निवेदन करनेसे, २. उपेक्षित, ३. स्वाभिमान, ४. सबक़ा, ५. नायाब वस्तु, ६. दरिद्रतायें, ७. ईश्वरकी कृपाकी महानता, ८. अपराध करनेकी अभिलाषासे, ९. लगातार कृपाओंका, १०. मदिरालयपर, ११ खटखटाया, १२. ईश्वरीय प्रेमके पुजारी, ज़ाहिद।

इससे बढ़कर अताबे क्या होगा ?
अब मेरे हालपर अताब नहीं

अल्लाह - अल्लाह यह जल्वा आराई[2]
अब उन्हें फ़ुर्सते - हिजाब[3] नहीं

मै का पीना रवा सही लेकिन
मैं पिलाना नहीं रवा साक़ी !

हम जौर[4] भी सह लेंगे मगर डर है तो यह है
ज़ालिमको कभी फूलते - फलते नहीं देखा
अहबाबकी[5] यह शाने - हरीफ़ाना सलामत[6]
दुश्मनको भी यूँ ज़हर उगलते नहीं देखा
वोह राह सुझाते हैं, हमें हज़रते - रहबर[7]
जिस राहपै उनको कभी चलते नहीं देखा

हर गुल हमारी अक़्लपै हँसता रहा मगर
हम फ़स्ले - गुलमें[8] रंगे - ख़िज़ाँ[9] देखते रहे

मेरा कारवाँ[10] लुट चुका है, कभीका
ज़मानेको है शौक़ अभी रहज़नीका[11]
अजब चीज़ है आस्ताने - मुहब्बत
नहीं जिसपै मक़बूल सज्दा किसीका

---

१ नाराज़गी, क्रोध, २ जल्वा दिखानेकी धुन, ३. पर्दा करनेकी फ़ुर्सत, ४ अत्याचार, ५. इष्ट-मित्रोंकी, ६. शत्रुताकी शान सुरक्षित रहे, ७. नेता, पथ-प्रदर्शक, ८. बहारमें, ९. पतझड़का आगमन, १०. यात्रीदल, ११. लूटनेका ।

इक फ़रेबे - आर्ज़ू साबित हुआ
जिसको ज़ौक़े - बन्दगी समझा था मैं,

दरके-बुताँका लेके सहारा कभी-कभी
अपने खुदाको हमने पुकारा कभी - कभी
आसूदा ख़ातिरी[1] ही नहीं मतमए-वफ़ा[2]
ग़म भी किया है हमने गवारा कभी-कभी
इस इन्तहाए-तर्के-मुहब्बतके बावजूद[3]
हमने लिया है नाम तुम्हारा कभी-कभी
बहके तो मैकदेमें नमाज़ों पै आ गये
यूँ आक़बतको[4] हमने सँवारा कभी-कभी

पहुँचे हैं, उस मुक़ामपै अब उनके हैरती
वह खुद खड़े हैं दीदए-हैराँ[5] लिये हुए

रहबर[6] तो क्या निशाँ किसी रहज़नका[7] भी नहीं
गुम - गश्तगाँ[8] गई हैं मुझे छोड़कर कहाँ ?

जिस ग़ममें दिलको राहत[9] हो, उस ग़मका मदावा[10] क्या मानी ?
जब फ़ितरत तूफ़ानी ठहरी, साहिलकी[11] तमन्ना क्या मानी ?

१-२. सुख-चैनकी स्थिति ही भलाईके लिए आवश्यक नहीं, ३. मुहब्बत छोड़ने पर भी, ४. परलोकको, ५. आश्चर्य चकित नेत्र, ६. पथ-प्रदर्शक, ७. लुटेरेका, ८. मार्ग भूली हुई आदत, ९. चैन, १०. इलाज, ११. किनारेकी।

इशरतमें[१] रंजकी आमेज़िशें[२], राहतमें अलमकी आलाइश[३]
जब दुनिया ऐसी दुनिया है, फिर दुनिया, दुनिया क्या मानी ?
ख़ुद शेख़ो-बरहमन मुजरिम है इक जाममें दोनों पी न सके
साक़ीकी बुख़्ल-पसन्दी[४] पर साक़ीका शिकवा क्या मानी ?
इख़लासो-वफ़ाके[५] सजदोंकी जिस दर पर दाद नहीं मिलती,
ऐ ग़ैरते-दिल ऐ इज़्मे-ख़ुदी ! उस दर पर सजदा क्या मानी ?
ऐ साहबे-नक़्दो-नज़र[६] ! माना इन्साँका निज़ाम[७] नहीं अच्छा
उसकी इसलाहके[८] पर्देमें अल्लाहसे झगड़ा क्या मानी ?
मै-ख़ानेमें तू ऐ वाइज़ ! तलक़ीनके कुछ उसलूब[९] बदल
अल्लाहका बन्दा बननेको जन्नतका सहारा क्या मानी ?

न आने दिया राह पर रहबरोंने[१०]
किये लाख मंज़िलने हमको इशारे
हमआग़ोशे-तूफ़ाँ[११] तो होना है इक दिन
सम्भल कर चलें क्यों किनारे-किनारे
यह इन्साँकी बेचारगी[१२] हाय तौबा
दुआओंके बाक़ी हैं अब तक सहारे
यह इक शोब्दा[१३] है, कि है मौज दिलकी ?
किसीको डुबोये किसीको उभारे

---

१. सुख वैभवमें, २. आगमन, ३. सुख-शान्तिमें दुःखका होना, ४. कंजूसी पर, ५. प्रेम प्यारके, ६. आलोचकों, ७. प्रबन्ध, ८. सुधारके, ९. उपदेश देनेका ढंग, १०. मार्ग दिखानेवालोंने, ११. तूफ़ानकी गोद, १२. मजबूरियाँ, १३. जादू, चमत्कार।

हम जिसको दिखाकर दुनियासे कुछ दादे-मुहब्बत पा लेते
अफ़सोस कि ग़मकी चोटोंसे वह दिलका छाला फूट गया

साक़ी ! तेरी सुहबतमें क्या आलमे-मस्ती है,
जन्नत मेरी नज़रोंमें उजड़ी हुई बस्ती है

अगर साहिल नहीं मिलता तो यह कमहिम्मती कैसी ?
भँवरमें क्या सफ़ीनेको डुबाया भी नहीं जाता ?
यह क्या शाने-तक़ाबुल[1] है कि तुम तो खन्दाबरलब[2] हो
तुम्हारे चाहने वालोंसे रोया भी नहीं जाता

तेरे ख्वाबे-गरॉपर[3] ऐ दिले-नादाँ तअज्जुब है,
कि तू सोता रहे सारा जहाँ बेदार[4] हो जाये
उन्हें क्यों कोसता है जो तुझे कहते हैं कम हिम्मत
बुरा क्या है हक़ीक़तका अगर इज़हार हो जाये

यूँ तो कहनेको बशर[5] बीना[6] भी है दाना[7] भी है
क्या कोई इससे बड़ा दुनियामें दीवाना भी है ?

एहसासे-हुस्न बनके नज़रमें समा गये
गो लाख दूर थे वह मगर पास आ गये
इक रोशनी-सी दिलमें थी वह भी नहीं रही
वह क्या गये चराग़े-तमन्ना[8] बुझा गये

---

१. बराबरी रखनेकी शान, २. मुसकराते हुए ओंठ ३. स्वप्नभर, ४. जाग जाये, ५. मनुष्य, ६. देखने योग्य, ७. बुद्धिमान, ८. अभिलाषा-दीप।

दैरो-हरमसे[1] और तो हासिल न कुछ हुआ
सजदे-गरूरे-इश्क़की क़ीमत घटा गये
तनहा-रवीमें[2] यूँ तो मुसीबत था हर कदम
हम अहले-कारवाँसे[3] तो पीछा छुड़ा गये
उल्फतमें फ़िक्रे-ज़ीस्ते[4] नदामतकी[5] बात थी
अच्छे रहे जो जानकी बाज़ी लगा गये

वफ़ापर मिटनेवाले जानकी परवा नहीं करते,
वह इस बाज़ारमें सूदो-ज़ियाँ[6] देखा नहीं करते,
ख़लूसो-इश्क़में[7] ख़ुद मतलबी[8] कैसी, रियाँ[9] कैसी
हम इन दाग़ोंसे दामाने-वफ़ा मैला नहीं करते

रुबाईयात

मग़रिबमें[10] उमड़ते हुए बादल आये
भीगी हुई ऋतु और सुहाने साये
साक़ी, लबे जू, मुतरबे-नौ ख़ेज़, शराबें[11],
है कोई जो वाइज़को बुलाकर लाये ?

रिन्दोंके लिए मंज़िले-राहत[12] है यही
मैख़ानए - पुरकैफ़े - मसर्रत है यही

१. मन्दिर मस्जिदसे, २. अकेले चलनेमें, ३. नेताओंसे, मार्ग-दर्शकोंसे, ४. जीनेकी चिन्ता, ५. बदनामीकी, ६. लाभ-हानि, ७. प्रेममें, ८. स्वार्थ, ९. छल, १०. पश्चिमसे ११. साक़ी, शराबका दरिया, युवती गायिका और शराब सब मौजूद हैं, १२. सुख-चैनकी मंज़िल ।

पीकर तू ज़रा मेरे-जहाँ कर ऐ शैख़ !
तू ढूँढ़ता है जिसको वह जन्नत है यही

हर ज़र्फ़को[1] अन्दाज़ेसे तोल ऐ साक़ी !
यह बुख़्ल भरे[2] बोल न बोल ऐ साक़ी !
मैं और तेरी तल्ख़नवाज़ी[3] तौबा
यह ज़हर न इस शहदमें घोल ऐ साक़ी !

फ़िरदौसके चश्मोंकी[4] रवानी पै न जा
ऐ शैख़ ! तू जन्नतकी कहानी पै न जा
इस वहमको छोड़ अपने बुढ़ापे हीको देख
हूराने-बहिश्तीकी[5] जवानी पै न जा

तू आतिशे-दोज़ख़का[6] सज़ावार कि मैं ?
तू सबसे बड़ा मुल्हदो-ऐय्यार[7] कि मैं ?
अल्लाहको भी बना दिया हूर फ़रोश[8]
ऐ शैख़ ! बता तू है गुनहगार कि मैं ?

हफ्त-ओ-रंगसे

---

१. पात्रको, २. कंजूसी भरे, ३. मदिराके सामने यह कड़वी बातें, ४. जन्नतमें बहनेवाली मदिराकी नहरके बहावपर, ५. जन्नतकी सुन्दरी हूरोंकी, ६. दोज़खकी आगका, ७. काफ़िर, कपटी, ८. स्वर्गीय अप्सरा बेचनेवाला ।

गजलें

१८४८ से १८५२ ई० तक

पूछ अगले बरसमें क्या होगा
मुझसे पिछले बरसकी बात न कर
यह बता हाल क्या है लाखोंका
मुझसे दो-चार-दसका हाल न पूछ
यह बता क़ाफ़िलेपै[1] क्या गुज़री ?
महज़ बाँगे-जरसकी[2] बात न कर
क़िस्सए - शैख़े - शहर रहने दे
मुझसे इस बुल्हविसकी[3] बात न कर

चमनमें कौन है पुरसाने - हाल[4] शबनमका[5] ?
गरीब रोई तो ग़ुंचोंको[6] भी हँसी आई
नवेदे - ऐशसे[7] भी लुत्फ़े - ऐश मिल न सका
लिबासे - ग़म ही में आई अगर ख़ुशी आई
अजब न था कि ग़मे - दिल शिकस्त खा जाता
हज़ार शुक्र तेरे लुत्फ़में कमी आई

---

१. यात्री दल पर, २. यात्रीदलके आगे चलनेवाली ऊँटनीके गलेमें बँधी हुई घंटीकी, ३ कामुककी, ४. बात पूछनेवाला, ५. ओसका, ५. कलियोंको, ७. सुख सन्देशकी खुशखबरीसे, ८. हार

दिये जलाये उम्मीदोंने दिलके गिर्द बहुत
किसी तरफसे न इस घरमें रोशनी आई
हज़ार दीदपै[1] पाबन्दियाँ थीं, पर्दे थे
निगाहे-शौक़ मगर उनको देख ही आई

ख्वाहिशे-मादूम[2] अच्छी ख्वाहिशे-नाकामसे[3]
हैफ़[4] इसपर फूल बनकर जो कली मुरझा गई
अब अयाँ होते फिरो तुम अब तुम्हें देखेगा कौन
दीदकी[5] हसरतमें[6] चश्मे-मुन्तज़िर[7] पथरा गई

कारवाँसे[8] कुछ इस तरह बिछड़े
अब कहीं कारवाँ नहीं मिलता
रहबरोंकी[9] हुई वह अरज़ानी[10]
रहरवोंका[11] निशाँ नहीं मिलता
गुल[12] भी हैं गुलचिनाँ[13] भी हैं मौजूद
इक फ़क़त आशियाँ[14] नहीं मिलता

उनसे ग़रज़ नहीं जो शिकारे-ख़िज़ाँ[15] रहे
लेकिन वह फूल जो हसरते-बाग़बाँ[16] रहे

१. देखनेतक, २. मिटाई गई इच्छाएँ, ३. असफलताओंसे ४. खेद, ५. देखनेकी, ६. इच्छामें, ७. प्रतीक्षा करनेवाली आँखें, ८. यात्री दलसे, ९. पथ-प्रदर्शकोंकी, नेतृत्वकी, १०. भरमार, अधिकता, सस्तापन, ११. मार्ग बतानेवाले इतने अधिक हो गये हैं कि अब मार्ग चलने वाले नहीं मिलते। १२. पुष्प, १३. [illegible], १४ घोंसला, १५. पतझड़के मारे हुए, १६ मालीके अरमानके निशाने।

हिफ़्ज़े-चमनके[1] ग़ममें यह सैय्यादने कहा—
"जो बिजलियोंकी ज़दमें[2] है वह आशियाँ रहे"
हम इस चमनके फूल हुए भी तो फ़ायदा ?
शबनमका आफ़ताब जहाँ पासबाँ[3] रहे

तेरी दोस्तीपै मेरा यक़ीं, मुझे याद है मेरे हमनशीं !
मेरी दोस्तीपै तेरा गुमाँ तुझे याद हो कि न याद हो ?
वह जो शाख़े-गुलपै था आशियाँ जो था वजहे नाज़िशे-गुलसिताँ[4]
गिरी जिसपै बर्क़े-शरर-फ़िशाँ[5] तुझे याद हो कि न याद हो
मेरे दिलके जज़्बए-गर्ममें[6] मेरे दिलके गोशए नर्ममें[7]
था तेरा मुक़ाम कहाँ-कहाँ तुझे याद हो कि न याद हो

जो दरे-हुस्नके फ़कीर हुए
दौलते-इश्क़से अमीर हुए
सारे आलममें हो गये मशहूर
जो मुहब्बतके गोशःगीर[8] हुए
आह इन शाइरोंकी ख़ुश फ़हमी
होके आज़ाद जो असीर[9] हुए

क्यों मिरे ज़ौक़े-तसव्वुरपर[10] तुम्हें शक हो गया ?
तुम ही तुम होते हो कोई दूसरा होता नहीं

१. उद्यानकी रक्षाके, २. निशानेपर, ३. जहाँ ओसका रक्षक सूर्य हो, ४. उद्यानके अभिमानका कारण, ५. आग उगलती बिजली, ६. जोशसे भरे दिलमें, ७. दिलके कोमल कोनेमें, ८. प्रेममें एकान्तवासी, ९. पक्षियोंकी, १० बन्दी, ११. चिन्तनकी रुचिपर ।

हमको राहे-ज़िन्दगीमें इस क़दर रहज़न[1] मिले
रहनुमापर[2] भी गुमाने-रहनुमा[3] होता नहीं
सज्दे करते भी हैं इन्साँ ख़ुद दरे-इन्साँ पै रोज़
और फिर कहते भी हैं बन्दा ख़ुदा होता नहीं
'अर्श' पहले यह शिकायत थी ख़फ़ा होता है वह
अब यह शिकवा है कि वह ज़ालिम ख़फ़ा होता नहीं

दिल ही बेनूर[4] हो तो शायद हो
इश्क़की राह तो नहीं तरीक[5]
मौतके डरसे बे अमल जीना
ज़िन्दगीकी है यह बड़ी तज़हीक[6]
चोट जब तक नहीं कोई लगती
दिलमें होती नहीं कोई तहरीक[7]

जवाबे-तल्ख़में शामिल मलामत और हो जाती
जहाँ सब कुछ हुआ इतनी इनायत और हो जाती
नहीं गो फ़र्क़ कुछ घर और मैख़ानेमें ऐ वाइज़ !
वहाँ पीते तो साक़ीकी ज़ियारत[8] और हो जाती

ख़ताएँ मान लीं सब मैंने यह अच्छा किया वर्ना
पशेमानीसे बचनेकी नदामत और हो जाती

---

१. लुटेरे, २. मार्ग-दर्शकपर, ३. मार्ग-दर्शक होनेका विश्वास, ४. प्रकाश-रहित, ५. अँधेरी, ६. तौहीन, अपमान, ७. हलचल, ८. दर्शनोंका लाभ

नज़्में

किसादात

-७८ शेर मेंसे ८-

ख़याबाँ - ओ - बाग़ो - चमन जल रहे थे
बयाबाँ - ओ - कोहो - दमन जल रहे थे

चले मौज दर मौज नफ़रतके धारे
बढ़े फ़ौज दर फ़ौज वहशतके मारे

न माँकी मुहब्बत ही महफ़ूज़ देखी
न बेटीकी इस्मत ही महफ़ूज़ देखी

हुआ शोर हर सिम्त बेगानगीका
हुआ ज़ोर हर दिलमें दीवानगीका

जुदाईका नारा लगाते रहे जो
जुदाईका जादू जगाते रहे जो

जो तक़सीमपर जानो - दिलसे फ़िदा थे
वतनमें जो रहकर वतनसे जुदा थे

जो कहते थे अब मुल्क बटकर रहेगा
जो हिस्सा हमारा है कटकर रहेगा

जुनूने उठाये वह फ़ितने मुसलसल
कि सारा वतन बन गया एक मक़तल

जंगे-कोरिया

–२५ में-से १२–

सुल्हके नामपर लड़ाई है
अम्ने-आलम[1] तेरी दुहाई है
सुल्ह - जूईसे[2] बढ़ गई पैकारें[3]
आदमी-आदमी से है बेज़ार[4]
आदमीयतका सीना चाक हुआ
क़िस्सा-इन्सानियतका पाक हुआ
आदमी - ज़ादसे ख़ुदाकी पनाह
इसके हाथों है, इसकी नस्ल तबाह
कौन पुरसाँ है ग़मके मारोंका
कमसिनों और बेसहारोंका
खोल दे मैकदा मुहब्बतका
नाम ऊँचा हो आदमीयतका
एक फ़रमानपर[5] चले आलम[6]
हो बिनाये-निज़ामे नौमहकम[7]
तख़्त बाक़ी रहे न कोई ताज
सारे आलमपै हो अवामी राज[8]

---

१. ससारकी शान्ति, २. शान्तिके प्रयाससे, ३. झगड़े, ४. परेशान, ५. नियमपर, ६. ससार, ७. नवीन व्यवस्था स्थायी हो, ८. जनता-राज।

हो उख़ूव्वतकी[1] इस तरह तख़लीक़[2]
काले - गोरेकी दूर हो तफ़रीक़[3]
आदमी - आदमीसे मिलके रहे
ग़ुंचए-सुलहे-आम[4] खिलके रहे
शर्क़पर[5] जोरे-ग़र्ब[6] मिट जाये
दिले-आदमका कर्ब मिट जाये
हो तहे-आबे-बहरे-काहिल ग़र्क़[7]
एशियाई-ओ - यूरपीका फ़र्क़[8]

गजलें

सन् १९३६ से १९४५ ई०

गो फ़स्ले-खिज़ाँ[9] है फिर भी तो कुछ फूल चमनमें बाक़ी है,
ऐ नंगे-चमन ! तू इसपर भी काँटोंका हार पिरोता है ?
अंजामे-अमलकी[10] फ़िक्र न कर, है ज़िक्र भी इसका नंगे-अमल[11]
जो करना है तुझको कर ले, वोह होने दे जो होता है,
तूफ़ाने-मुसीबत तेज़ सही, लेकिन यह परेशानी कैसी ?
किश्तीको बीच समन्दरमें क्यों अपने आप डुबोता है ?

---

१. भाईचारेकी, २ पैदावार, निर्माण, ३. अन्तर, भेद, ४. सर्व-साधारणके मेल-मिलापकी कली, ५. पूर्व दिशापर, ६. पश्चिमी अत्याचार, ७-८ एशिया और यूरपके द्वेषभाव समुद्रमें डूब जायें, ९. पतझड़का मौसम, १०. कर्मकी सफलता-असफलताकी, ११. कर्म-क्षेत्रका अपमान ।

अपनी निगाहे-शौक़से[1] छुपिये तो जानिए
महफ़िलमें हमसे आपने पर्दा किया तो क्या ?
सोचा तो इसमें लाग[2] शिकायतकी थी ज़रूर
दरपर[3] किसीने शुक्रका सजदा[4] किया तो क्या ?
ऐ शेख़ ! पी रहा है तो ख़ुश होके पी इसे
इक नागवार शैको गवारा किया तो क्या ?

तूफ़ानमें उलझ गये लेकर ख़ुदाका नाम
आख़िर नजात पा ही गये नाख़ुदासे[5] हम
पहला - सा वह जनूने-मुहब्बत नहीं रहा
कुछ-कुछ सम्भल गये हैं तुम्हारी दुआसे हम
ख़ूए-वफ़ा[6] मिली दिले-दर्द-आश्ना[7] मिला
क्या रह गया है और जो माँगें ख़ुदासे हम
पाये-तलब भी तेज़ था मंज़िल भी थी क़रीब
लेकिन नजात पा न सके रहनुमोंसे हम

हज़ार पन्दो - नसायह[8] सुना चुका वाइज़
जो बादाख़्वार[9] थे वह फिर भी बादाख़्वार रहे
इधर यह शान कि इक आह लब तक आ न सकी
उधर यह हाल कि पहरों वह अश्कबार[10] रहे

१. चयन दृष्टिसे, २. भावना, संकेत, ३ दरवाज़ेपर, ४. कृतज्ञताका उल्लेख, ५. मल्लाहसे, ६. उपकार करनेकी आदत, ७. सहृदय दिल, ८ उपदेश-नसीहतें, ९. मद्यप, १०. आँसू गिराते रहे ।

हो गया आख़िर मुहब्बत - आफ़रीं[1] उनका शबाब[2]
जिस जगह लुटती है दुनिया वह मुक़ाम आ ही गया

बारगाहे - ख़िज़ॉमें[3] एक है सब
कोई कॉटा हुआ कि फूल हुआ

बे सईए अम्लें[4] ख़ाक है इन्सानका जीना
यह रज़मगए - ज़ीस्त[5] है मदफ़न[6] तो नहीं है ?

नक़ाबे - रुख़ उलटनेको तो उसने बारहाँ[7] उलटी
बुरा हो अपनी हैरतका कि हम ख़ुद कम नज़र निकले

तेरे सिवा कोई सौदा[8] नहीं है सरके लिए,
जबीं है वक़्फ़ फक़त तेरे संग-दरके लिएं[9]
यह मेरी ऑखसे तेरा हिजाब[10] क्या मानी
नज़र है तेरे लिए और तू नज़रके लिए

दुनियासे ग़रज़ है न हमें दीनसे मतलब
इक तुझसे सरोकार है मालूम नहीं क्यों ?

---

१. इश्क करनेके क़ाबिल, प्रेम योग्य, २. यौवन, ३. पतझड़के दरबारमें, ४ कर्तव्यरहित, ५. युद्धका जीवन, ६. क़ब्र ७. बार-बार, ८ इच्छा, भावना, ९ केवल प्रेयसीके द्वारपर नत होनेको यह मस्तक है, १० छिपना, शर्म।

ख़ुदीका राज़दॉ होकर ख़ुदीकी दास्तॉ[2] हो जा
जहॉसे क्या ग़रज तुझको तू आप अपना जहॉं हो जा
शरीके-कारवॉ[3] होनेकी गो ताक़त नहीं तुझमें
मगर इतनी तो हिम्मतकर कि गर्दे-कारवॉं[4] हो जा

किसको दुनियामें हुई राहत[5] नसीब ?
कौन दुनियामें असीरे-ग़म[6] नहीं ?
हर पराये ग़मपै दिल रोता रहा
अब तो अपना भी उसे मातम नहीं

वह आये या नवेदे-रहमते-परवर्दिगार[7] आई
मेरे उजड़े हुए दिलके गुलिस्तॉमें बहार आई
तवाज़ुन[8] ख़ूब यह इश्क़ो-सज़ाए-इश्क़[9] में देखा
तबीयत एक बार आई मुसीबत बार-बार आई
सहारा मौतने आकर दिया तो कब दिया हमको ?
हमारी ज़िन्दगी जब दिन मुसीबतके गुज़ार आई

आता है रश्क[10] मुझको क़फ़समें भी बर्क़ पर
वह आशियॉके पास है मैं आशियॉसे दूर
जौक़े-सजूदमें[11] मेरी मजबूरियॉ न पूछ
दिल आस्तॉके पास है, सर आस्तॉसे[12] दूर

---

१. सोहम्का अभिप्राय समझकर, २. यानी आत्मासे परमात्मा बननेका प्रयास कर, ३ यात्री दलमें सम्मिलित होनेकी, उसके साथ चलनेकी, ४. यात्री दलकी धूल, ५. शान्ति, ६. दुःखी ७. परमात्माकी दयाकी खुशख़बरी, ८. तुलना, बराबरी, ९. प्यारमें और प्यारके दण्डमें, १०. ईर्ष्या, ११ मत्था टेकनेके शौक़में, १२. प्रेयसीकी चौखटसे ।

इस कैफ़ियतपै उम्रकी सब राहतें निसार
तू मेरे पास और मैं सारे जहाँसे दूर
ऐ 'अर्श' उनकी शोब्दाबाज़ी, तो देखना
दिलके क़रीब रहके है वहमो-गुमाँसे दूर

हवाका एक झोंका तुझको जब चाहे बुझा डाले
यह क्या जीना है दुनियामें चराग़े-रहगुज़र होकर

हदीसे-शौक़की[1] होती रहें गो लाख तफ़सीरें[3]
मगर बातोंसे कट सकती है, कब क़ौमोंकी ज़ंजीरें ?
तेरी दुनियाको ऐ वाइज़ ! मेरी दुनियासे क्या निस्बत ?
तेरी दुनियामें तक़दीरें[4] मेरी दुनियामें तदबीरें[5]
फ़रिश्तोंको मेरे नाले यूँ ही बदनाम करते हैं,
मेरे एमाल[6] लिखते है मेरी क़िस्मतकी तहरीरें[7]

अहबाबने[8] की आकर फ़ौरन मेरी दिलजोई[9]
मैं दूर मुसीबतसे जिस वक़्त गुज़र आया
बख़्शी थी हयाने गो सुर्ख़ी रुख़े-ज़ेबाको[10]
दर परदह तबस्सुममें[11] रँग और निखर आया

यगाने[12] तो अपने नहीं बन सकेंगे
तू ग़ैरोंको अपना बनाता चला जा

१. मार्गका दीपक, २. उत्साहपूर्ण बातचीतकी, ३. योजनायें, तरावीह, ४. भाग्यका भरोसा, ५. पुरुषार्थ, ६. आचरण, कर्म, ७. भाग्यरेखा, ८. इष्ट-मित्राने, ९. सहानुभूति, १० कपोलोंको लाली दी, ११. मुसकानसे, १२. अपने।

सब देखने वाले उन्हें ग़श खाये हुए हैं
इस पर भी तअज्जुब है वह शर्माये हुए हैं
हैरान हूँ क्यों मुझको दिखाई नहीं देते
सुनता हूँ मेरी बज़्ममें[1] वह आये हुए हैं
है देखने वालोंको सम्भलनेका इशारा
थोड़ी-सी नकाब आज वह सरकाये हुए हैं

दाग़े-दिलसे भी रोशनी न मिली
यह दिया भी जलाके देख लिया

निगाहे-हविस[2] रोक ऐ इश्क़ ! अपनी
तुझे हुस्नकी पासबानी[3] मिली है

तिनके तो आशियाँके सब तूने फूँक डाले
अब ख़ैर माँगता हूँ ऐ बर्क़ ! मैं क़फ़सकी

क़फ़स नसीबसे क्या पूछता है ऐ सैय्याद !
कि आशियानेमें लुत्फ़े-नवागरी[4] क्या है ?

बिछुड़कर काफ़िलेसे बदहवास इतना हुआ हूँ मैं
कि हर आवाज़ अब बाँगे-दरा मालूम होती है

---

१. महफ़िलमें, २. कामुकदृष्टि, ३. सरक्षकता. ४. चहकनेका आनन्द ।

फिर भी इसका नग़मा इक जादू भरा एजाज़[1] था
गोशा-गोशा[2] हर फ़ज़ाका[3] गोशबर-आवाज़ था
सुबहकी ठण्डी हवामें इत्र अफ़शाँ थी शमीमें[4]
सुबहकी ठण्डी हवा थी बागे-जन्नतकी नसीम[5]
तेज़ झोंकेसे हवाके झूमती थीं डालियाँ
शौक़से इक-दूसरेको चूमती थीं डालियाँ

नहरके पुलपर खड़ा मैं देखता था यह बहार
मेरा दिल था एक कैफ़े-बेख़ुदीसे हम कनार
देखता क्या हूँ कि इक दोशीज़ा[6] मजबूरे-हिजाब[7]
गैरते - हूराने - जन्नत[8] पैकरे - हुस्नो - शबाब[9]
आ रही थी नहरकी जानिब अदासे नाज़से
हर क़दम उठता था उसका इक नये अन्दाज़से
हुस्ने-सादामें अदा भी, बाँकपनका रंग भी
कुछ युँ ही सीखे हुए शर्मो-हयाके ढंग भी
लबपै सादा-सी हँसी और तनपै सादा-सा लिबास
बे हिजाबीमें[10] बढ़ी आती थी बे-ख़ौफ़ो-हिरास[11]
सर-बसर ना-आश्ना शोख़ीके हर मफ़हूमसे[12]
कुछ अगर वाक़िफ़ तो वाक़िफ़ शोख़िए-मासूमसे[13]

---

१. चमत्कार, २ कोना कोना, ३. दृश्यका, ४ इनकी सुगन्धसे परिपूर्ण हवा, ५ हवा, ६. कुआरी, ७. लाजसे मजबूर, ८. जिसे देखकर जन्नतकी हूर भी शर्मायें, ९. सौन्दर्य और यौवनकी साकार मूर्ति, १०. उन्मुक्त, निश्चिन्त, ११. निर्भय, १२ इतनी भोली भाली कि वह शोखी-अदासे अनभिज्ञ थी, १३. केवल सुकुमार सुलभ चचलतासे परिचित थी।

हुस्नमें अल्हड़, तबीयतमें जरा नादान-सी
सादा लौहीका मुरक़्क़ा[1] बे समझ अनजान-सी
हुस्नकी मासूमियतमें काफ़री अन्दाज़[2] भी
बा-ख़बर भी बेख़बर मस्ते-शराबे-नाज़[3] भी
शमअ वोह जिसपर शबिस्तानोंकी रौनक़ हो निसार
कैफ़[4] वोह जिसके लिए सौ मैकदे हों बेक़रार

नाज़ वह जिससे रबाबे-हुस्नकी तकमील हो,
शेर वह जिससे किताबे-हुस्नकी तकमील हो,
एक बाज़ूके सहारेसे घड़ा थामे हुए
दूसरेसे ओढ़नीका इक सिरा थामे हुए
नहरपर पहुँची घड़ा भरकर ज़रा सुस्ता गई
थक गई या सोचकर कुछ ख़ुद-ब-ख़ुद शर्मा गई
मुझको देखा तो जबींपर[5] एक बल-सा आ गया
उफ़-री शाने-तमकनत[6] मैं ख़ौफ़से थर्रा गया
इसपै हैरत यह कि लब उसके तबस्सुम रेज़[7] थे
क्या कहूँ अन्दाज़ सब उसके क़यामत ख़ेज़ थे
थाम कर आख़िर घड़ा वह इक अदासे फिर गई
एक बिजली थी कि मेरे दिलपै आकर गिर गई
मुझको यह हसरत कि दे सकता सहारा ही उसे
कब मगर एहसान लेना था गवारा ही उसे

---

१. भोलेपनकी तसवीर, २ रूपके इस भोलेपनमें काफ़िराना अदाएँ निहित थीं, ३. यौवन-मदिराके कारण कुछ सुध-बुध थी, कुछ न थी, ४. मस्ती, ५. माथेपर, ६. जलाल, ७. मुसकान लिये।

गुनगुनाई कुछ मगर सुननेका किसको होश था
मैं जबाँ रखता था लेकिन सर-बसर ख़ामोश था
जा रही थी वह, खड़ा था मैं असीरे-इज़्तराब[1]
दिल ही दिलमें कर रहा था इस तरह उससे खिताब[2]

ऐ नगीने-खातिमे निसवानियत सद आफ़रीं[3]
ऐ अमीने जौहरे-इन्सानियत[4] सद आफ़रीं
आफरीं ऐ गौहरे-यकताए-इस्मत[5] आफरीं
आफ़रीं ऐ पैकरे-हुस्नो-मुहब्बत[6] आफ़रीं
हुस्न तेरा गो रहीने-जल्वा सामानी नहीं[7]
गो तेरे रुख़सारपर पौडरकी तावानी नहीं[8]
तुझमें शहरी औरतोंकी गो नहीं आराइशें[9]
गो नहीं तुझको मयस्सर ज़ाहिरी जेबाइशें[10]
परतवे-हुस्ने-हकीक़त[11] फिर भी तेरा हुस्न है
मायए-हुस्ने-शराफत फिर भी तेरा हुस्न है
मायए-उफ़्फ़त[12] है तू निसवानियतकी[13] शान है
तुझ पै हर तक़दीस[14] हर पाकीज़गी[15] क़ुरबान है

१ आश्चर्यचकित, २. वार्तालाप, ३. स्त्रीत्वका सौन्दर्य तुझपर समाप्त हो गया, सौ बार शाबास, ४. मानवताके सौन्दर्यकी स्वामिनी, ५. शीलरूपी-अनुपम मोती, ६. सौन्दर्य प्रेमकी साक्षात् मूर्ति, ७. तेरा रूप प्रसाधनका मुँहताज नहीं, ८. चमक, ९. सजावटें, १०. शृंगार, ११. वास्तविकरूपका आकार, १२ पाकदामन, १३. महिलाओंकी १४. पाकदामनी १५. पवित्रता।

झुक नहीं सकता किसी दरपर तेरा हुस्ने-ग़यूर[1]
तू सिखा सकती है दुनियाकी निगाहोंको शऊर
सादगीसे तेरी पुररौनक़ यह दिल्कश वादियाँ[2]
साइले-हुस्ने-तमद्दुन शहरकी आबादियाँ[3]
तू हविससे[4] दूर है, हिर्सो-हवासे तू नफ़ूर[5]
है तेरे ज़ेरे-क़दम भी ताजदारोंका ग़रूर
होशसे बढ़कर तेरी हर लग़ज़िशे[6]-मस्ताना है
जो तुझे पागल समझता है वह ख़ुद दीवाना है,
बे-अदब कम इल्म कहकर याद करता है जहाँ
बेशऊरी पर भी तेरी याद करता है जहाँ
तू अरस्तूको सिखा सकती है आईने-हयात[7]
देख सकती है निगाहोंमें तू नब्ज़े-कायनात[8]
सामने तेरे उरूजे-तख़्ते-शाही[9] हेच है
हेच है तेरी नज़रमें कजकुलाही[10] हेच है,
जा! मगर मुड़कर मेरे इस दिलकी बर्बादीको देख
मेरी मजबूरीको देख और अपनी आज़ादीको देख

रुबाई

तूफ़ाँके तलातुममें[11] किनारा क्या है,
गरदाबमें[12] तिनकेका सहारा क्या है,
सोचा भी ऐ ज़ीस्तपै[13] मरनेवाले!
मिटती हुई मौजोंका इशारा क्या है?

१. अभिमानी रूप, २. घाटियाँ, ३ शहरी लोग बनावटी रूपोंपर फिदा हैं, ४. कामुकतासे, ५. तृष्णासे तुझे नफ़रत है, ६. पाँवोंका कम्पन, ७. जीवन-दर्शन, ८. विश्वकी नब्ज़, ९. बादशाहोंका तख़्त, १०. शानदार कुलाह, ११. बहावमें, १२. भँवरमें, १३. ज़िन्दगीपै।

गजल

[१६२६ से १६३५ तक कही गईं]

हो गये महफ़ूज़[1] हम ऐशे-फ़ना अंज़ामसे[2]
यह भी राहत है कि राहतसे बसर[3] होती नहीं
वह करम उस वक़्त करते है हमारे हालपर
जब हमारे हालकी हमको ख़बर होती नहीं

मिल गया आख़िर निशाने-मंज़िले-मक़सद[4] मगर
अब यह रोना है कि ज़ौक़े-जुस्तजू[5] जाता रहा

न हरममें[6] है वोह न दैरमें[7] है
हम तो दोनों जगह पुकार आये
मौतने आसरा दिया भी तो क्या ?
जब मुसीबतके दिन गुज़ार आये

कुछ नज़र आये थे साथी, ऐ ग़ुबारे-कारवाँ[8] !
तूने आकर बीचमें क्या पर्दा हायल[9] कर दिया ?

मेरे इश्क़ ही का यह एहसान है,
तुम्हें देखिए, क्या-से-क्या कर दिया

१. सुरक्षित, २. अस्थायी भोग विलासके परिणामसे, ३. यह सुखकी बात है कि सुखमें जीवन व्यतीत नहीं हो रहा है, ४. उद्देश्य पूर्तिका साधन, ५. तलाश करनेका शौक, ६. मस्जिदमें, ७. मन्दिरमें, ८. यात्रियोंके पगोंकी धूल, ६. विघ्न ।

लुटाकर दौलते-ईमाँको पहुँचा अम्ले-ईमाँ तक
ज़माना होशियारी जिसमें सीखे मैं वह ग़ाफ़िल हूँ

चंगो-आहंग

हज़ार पन्दो-नसायह[1] सुना चुका वाइज़
जो बादा-ख्वार थे, वह फिर भी बादा-ख्वार[2] रहे

यह सादगी थी कि हम इतने पुरख़ता[3] होकर
तेरी निगाहे-करमके[4] उम्मीदवार रहे

क्या बात है गुलज़ार[5] है क्यों बज़्मे महफ़ूज़[6],
ये यहाँ मेरी शाख़े-नशेमन[7] तो नहीं है ?
हाँ दीदए-तहक़ीक़से[8] ऐ ज़ौक़े-नज़र[9] देख
रहबर[10] जिसे समझा है वह रहज़न[11] तो नहीं है ?
ये मर्दुमे-अमल[12] ख़ाक है इन्सानका जीना
यह रस्म गर्दे-ज़ीस्त[13] है, मक़सद[14] तो नहीं है ?

अज़मते - रहमते - ख़ुदावन्दी[15]
आरज़ूए - गुनाहसे[16] पूछो
उसकी पैहम नवाज़िशोंका[17] अगर
मेरे हाले - तबाहसे पूछो

१. नसीहतें, २. मद्य-सेवी, ३. बड़े अपराधी, ४. कृपा-दृष्टिके, ५. उद्यान, ६. विश्वकी सुरक्षित, ७. घोंसलेकी शाखा पत्ती सहित, ८. वास्तविक दृष्टिसे, ९. वास्तव शौक रखनेवाले, १०. पथ प्रदर्शक, ११. लुटेरा, १२. अमलकी महाचारी बीमारीसे, १३. कर्मक्षेत्र, १४. ध्येय, १५. ईश्वरकी दयालुताकी महानता, १६. पापोंसे १७. लगातार कृपाओंका।

गजल

[१९२६ से १९३५ तक कही गईं]

हो गये महफ़ूज़[1] हम ऐशे-फ़ना अञ्जामसे[2]
यह भी राहत है कि राहतसे बसर[3] होती नहीं
वह करम उस वक़्त करते हैं हमारे हालपर
जब हमारे हालकी हमको ख़बर होती नहीं

मिल गया आख़िर निशाने-मंज़िले-मक़सद[4] मगर
अब यह रोना है कि ज़ौक़े-जुस्तजू[5] जाता रहा

न हरममें[6] हैं वोह न दैरमें[7] है
हम तो दोनों जगह पुकार आये
मौतने आसरा दिया भी तो क्या ?
जब मुसीबतके दिन गुज़ार आये

कुछ नज़र आये थे साथी, ऐ गुबारे-कारवाँ[8] !
तूने आकर बीचमें क्या पर्दा हायल[9] कर दिया ?

मेरे इश्क़ ही का यह एहसान है,
तुम्हें देखिए क्या-से-क्या कर दिया

१. सुरक्षित, २. अस्थायी भोग विलासके परिणामसे, ३. यह मुलकी बात है कि सुखमें जीवन व्यतीत नहीं हो रहा है, ४. उद्देश्य पूर्तिका साधन, ५. तलाश करनेका शौक़, ६. मस्जिदमें, ७. मन्दिरमें, ८. यात्रियोंके पगोंकी धूल, ९. विघ्न ।

लुटाकर दौलते-ईमाँको पहुँचा अस्ले-ईमाँ तक
ज़माना होशियारी जिससे सीखे मैं वह ग़ाफ़िल हूँ

संगो-आहंग

हज़ार पन्दो-नसायह[1] सुना चुका वाइज़
जो बादा-ख़्वार[2] थे, वह फिर भी बादा-ख़्वार रहे

यह सादगी थी कि हम इतने पुरख़ता[3] होकर
तेरी निगाहे-करमके[4] उम्मीदवार रहे

क्या बात है गुलज़ार[5] है क्यों बर्क़से महफ़ूज़[6],
बे बर्ग मेरी शाख़े-नशेमन[7] तो नहीं है?
हाँ दीदए-तहक़ीक़में[8] ऐ ज़ौक़े-सफ़र[9] देख
रहबर[10] जिसे समझा है वह रहज़न[11] तो नहीं है?
ये सईए-अमल[12] ख़ाक है इन्सानका जीना
यह रस्म रहे-ज़ीस्त[13] है, मदफ़न[14] तो नहीं है?

अज़मते - रहमते - ख़ुदावन्दी[15]
आग़ूश - गुनाहसे[16] पूछो
उनकी पैहम नवाज़िशोंका[17] असर
मेरे हाले - तबाहसे पूछो

१ नसीहतें, २. मद्य-सेवी, ३. बड़े अपराधी, ४. कृपा-कटाक्षके, ५. उद्यान, ६. बिजलीसे सुरक्षित, ७. घोंसलेकी शाखा पत्ती रहित, ८. वास्तविक दृष्टिसे, ९. यात्राका शौक़ रखनेवाले, १०. पथ-प्रदर्शक, ११. लुटेरा, १२. अमलकी सफलताकी कोशिशें, १३. जीवनपथ, १४. क़ब्र, १५. ईश्वरकी दयालुताकी महानता, १६. पापोंसे १७. [illegible] कृपाओंका।

गजल

[१९२६ से १९३५ तक कही गईं]

हो गये महफ़ूज़[1] हम ऐशो-फ़ना अञ्जामसे[2]
यह भी राहत है कि राहतसे बसर[3] होती नहीं
वह करम उस वक़्त करते हैं हमारे हालपर
जब हमारे हालको हमको ख़बर होती नहीं

मिल गया आख़िर निशाने-मंज़िले-मक़सद[4] मगर
अब यह रोना है कि ज़ौक़े-जुस्तजू[5] जाता रहा

न हरममें[6] हैं वोह न दैरमें[7] हैं
हम तो दोनों जगह पुकार आये
मौतने आसरा दिया भी तो क्या ?
जब मुसीबतके दिन गुज़ार आये

कुछ नज़र आये थे साथी, ऐ ग़ुबारे-कारवाँ[8] !
तूने आकर बीचमें क्या पर्दा हायल[9] कर दिया ?

मेरे इश्क़ ही का यह एहसान है,
तुम्हें देखिए क्या-से-क्या कर दिया

---

१. सुरक्षित, २. अस्थायी भोग विलासके परिणामसे, ३. यह दुखकी बात है कि सुखमें जीवन व्यतीत नहीं हो रहा है, ४. उद्देश्य पूर्तिका साधन, ५. तलाश करनेका शौक़, ६. मस्जिदमें, ७. मन्दिरमें, ८. यात्रियोंके पगोंकी धूल, ९. विघ्न ।

लुटाकर दौलते-ईमाँको पहुँचा अस्ले-ईमाँ तक
ज़माना होशियारी जिससे सीखे मैं वह ग़ाफ़िल हूँ

चंगो-आहंग

हज़ार पन्दो-नमायह[1] सुना चुका वाइज़
जो बादा-ख्वार थे, वह फिर भी बादा-ख्वार[2] रहे

यह सादगी थी कि हम इतने पुरख़ता[3] होकर
तेरी निगाहे-करमके[4] उम्मीदवार रहे

क्या बात है गुलज़ार[5] है क्यों बर्क़से महफ़ूज़[6],
बे बर्ग मेरी शाखे-नशेमन[7] तो नहीं है ?
हाँ दीदए-तहक़ीक़से[8] ऐ ज़ौक़े-सफ़र[9] देख
रहबर[10] जिसे समझा है वह रहज़न[11] तो नहीं है ?
बे सईए-अमल[12] ख़ाक है इनसानका जीना
यह रज़्म गहे-ज़ीस्त[13] है, मदफ़न[14] तो नहीं है ?

अज़मते - रहमते - ख़ुदावन्दी[15]
आरज़ूए - गुनाहसे[16] पूछो
उनकी पैहम नवाज़िशोंका[17] असर
मेरे हाले - तबाहसे पूछो

१. नसीहतें, २. सुरा-सेवी, ३. बड़े अपराधी, ४. कृपा-दृष्टिके, ५. उद्यान, ६. बिजलीसे सुरक्षित, ७. घोंसलेकी शाख पत्ती रहित, ८. वास्तविक दृष्टिसे, ९. यात्राका शौक़ रखनेवाले, १०. पथ प्रदर्शक, ११. लुटेरा, १२. असली या सदाचारी जीवनके, १३. कर्मक्षेत्र, १४. क़ब्र, १५.ईश्वरकी दयालुताकी महानता, १६.पापोंसे १७. लगातार कृपाओंका।

ऐ सितम परवर[1] ! मेरे इस हौसलेकी दाद दे
सामने तेरे अगर फ़रियाद कर लेता हूँ मैं

किये दिलने हर-इक जगह तुझको सज्दे[2]
जबीं[3] ढूँढ़ती ही रही आस्तानाँ[4]

जफ़ाके[5] वास्ते मेरी ही जाने-नातवाँ[6] चुन ली
यह उनकी खास बख़शिश है यह उनका ख़ास एहसाँ है

नहीं है राज़[7] कोई राज़ दीदावरके[8] लिए
नकाब पर्दा नहीं शौककी नज़रके लिए,

५ मई १९५८ ई०]

१. जालिम, २. मस्तक झुकाये, ३. मस्तक, ४. चौखट, ५. जुल्म-
---के, ६. कमजोर जान, ७. भेद, ८. देखनेकी शक्ति रखनेवालेके।

गोपाल मित्तल

श्री० गोपाल मित्तल साहब ७ जनवरी १९५६ ई० के पत्रमें लिखते हैं—"सन् १९०६ ई० में पंजाबकी एक छोटी-सी रियासत मालियर कोटलामें पैदा हुआ। एफ. ए. तक वहीं तालीम पाई और बी. ए. का इम्तहान सनातन धर्म कॉलेजसे पास किया।

पहली नज्म १९२४ ई० में शाया (प्रकाशित) हुई। उस वक्त मैं सातवीं जमातका तालिबे इल्म (सातवीं श्रेणीका विद्यार्थी) था। १९२७ ई० से सियासत (राजनीतिक कार्यों) में हिस्सा लेना शुरू किया। इसकी एक वजह तो रियासती माहौल (वातावरण) था। जिसमें हर उस शख्सको, जो सर उठा कर चलता था, बाग़ी तसव्वुर किया (विद्रोही समझ लिया) जाता था। दूसरी वजह अजमेरके मशहूर इन्क़लाबी रहनुमा श्री अर्जुनलाल सेठीसे[1] इत्तफ़ाक़ी मुलाक़ात थी, जो किसी मज़हबी जलसेमें हुई थी।

सन् १९३० ई० में ब-ग़रज़ तालीम (शिक्षाके लिए) लाहौर गया तो वहाँ तालीमके साथ-साथ सियासी और अदबी सरगर्मियों (राजनीतिक और साहित्यिक कार्यों) में और इज़ाफ़ा हो गया। तालीमके बाद अदब

१. पं० अर्जुनलाल सेठी अपने युगके प्रसिद्ध देशभक्त थे। आपका सम्बन्ध प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोससे था। लार्ड हार्डिंगपर जो दिल्लीके चाँदनी चौकमें १९१२ ई० में बम फेंका गया था, उस षड्यन्त्रसे आप सम्बन्धित थे। आपके कई शिष्योंको फाँसी हुई और स्वयं ५-६ वर्ष नज़रबन्द रहे। बहुत ओजस्वी वक्ता और उग्र क्रान्तिकारी थे।

—गोयलीय

और सहाफ़तको पेशा (साहित्यिकता और पत्रकारिताको आजीविकाका साधन) बना लिया और अभी तक यही सिलसिला जारी है। क़यामे-लाहौरके दौरान मुतअ़द्दिद (कई) किताबें तालीफ़ कीं (लिखीं) और 'दोराहा' नामसे कलामका मजमूआ भी शाया (संकलन भी प्रकाशित) हुआ। तक़रीबन तीन साल शम्सुल-उल्मा मौलाना 'ताजवर' की मइय्यत (तत्वावधान) में ऐडीट किया और चन्द माह 'अदबे-लतीफ़' को भी तरतीब दिया। चन्द साल रोजाना अख़बारोंमें भी काम किया।

तक़सीम (विभाजन) के बाद 'सन् १९४९ ई० का बेहतरीन अदब' और 'सन् १९५१ के बेहतरीन अफ़साने' तरतीब दिये (सम्पादित किये)। ताज़ा तरीन तालीफ़ (नवीन कृति) 'आज़ादीका अदब' है। इसमें हिन्द और पाकिस्तानके उन अदीबोंके निगारशात (रचनाएँ) शामिल हैं, जो अदबके इश्तिमाली नज़रिये (साम्यवादी विचारों) के मुक़ाबिले में जम्हूरी अन्दाज़ेनज़र (प्रजातन्त्र दृष्टिकोण) रखते हैं। सन् १९५३ ई० से 'तहरीक' माहनामा (मासिक पत्र) जारी किया, जो अदबके जम्हूरी रुजहानोंका तर्जुमान (साहित्यिकोंके प्रजातंत्र सम्बन्धी विचारोंका प्रतिनिधि) है, और बाक़ायदगी (व्यवस्थित ढंग) से निकल रहा है।"

अब हम आपका ख़ुदका पसन्दीदा कलाम दे रहे हैं, जो कि आपने अपनी बहुत-सी नज़्मों और ग़ज़लोंसे चुनकर भेजनेकी कृपा की है।

शबे-ताब

यह बरसता हुआ मौसम यह शबे-तीरा-ओ-तार
किसी मद्धिम-से सितारेकी ज़िया भी तो नहीं
उफ़ यह वीरानीए-माहौल यह वीरानिए-दिल !

आस्मानोंसे कभी नूर भी बरसा होगा
बर्क़े-इल्हाम भी लहरा गई होगी शायद
लेकिन अब दीदए-हसरतसे सुए-अर्श न देख
अब वहाँ एक अँधेरेके सिवा कुछ भी नहीं

देख उस फ़र्शको जो ज़ुल्मते-शबके बा-वस्फ़
रोशनीसे अभी महरूम नहीं है शायद
इक-न-इक ज़र्रा यहाँ अब भी दमकता होगा
कोई जुगनू किसी गोशेमें चमकता होगा
यह ज़मीं नूरसे महरूम नहीं हो सकती

किसी जाँबाज़के माथेपै शहादतका जलाल
किसी मजबूरके सीनेमें बगावतकी तरंग
किसी दोशीज़ाके होंटोंपै तबस्सुमकी लकीर
क़ल्बे-उश्शाकमें महबूबसे मिलनेकी उमंग
दिले ज़ुहहादमें ना-करदा गुनाहोंकी खलिश
दिलमें इक फ़ाहिशाके पहली मुहब्बतका खयाल

कहीं एहसासका शोअला ही फ़रोज़ाँ होगा
कहीं अफ्कारकी कन्दील ही रोशन होगी
कोई जुगनू, कोई ज़र्रा तो दमकता होगा

यह ज़मीं नूरसे महरूम नहीं हो सकती
यह ज़मीं नूरसे महरूम नहीं हो सकती

सुबहे-काज़िब

यह जो इक नूरकी हल्की-सी किरन फूटी है,
कौन कहता है इसे सुबहे-दरख़्शाँ ऐ दोस्त !
मुझको एहसास है, बाक़ी है शबे-तार अभी
लेकिन ऐ दोस्त ! मुझे रक़्स तो कर लेने दे
कम-से-कम नूरने उल्टा तो है इक-बार नक़ाब
एक लमहेको तो टूटा है तिलस्मे-शबे-तार
इससे साबित तो हुआ सुबह भी हो सकती है
पर्दए-ज़ुल्मते-शब चाक भी हो सकता है
सुबहे-काज़िब भी तो है, सुबहे-दरख़्शाँकी नवेद
एक ऐलान कि हंगामे - विदाए - शब है
काफ़िला नूरे-सहरका है बहुत ही नज़दीक
जल्द होनेको है ख़ुर्शीदे - दरख़्शाँको नमूद

कलके नग़्मे

तेरी तन्क़ीद है ऐ दोस्त ! बजा और दुरुस्त
मुझको इस बातसे ख़ुद भी कोई इन्कार नहीं
मेरा नग़्मा है फ़क़त वक़्तकी आवाज़े-नहीफ़
मेरा नग़्मा है फ़क़त मेरे ही दिलकी धड़कन
इसमें मौजूद नहीं है अबदीयतका जलाल
इसमें शामिल ही नहीं नूरे-अज़लका परतव
एक शाइर हूँ पयम्बर तो नहीं हूँ ऐ दोस्त !
इक मुझी पर तो नहीं ख़त्म सरूदे-हस्ती

इक ख़ुशी पर तो नहीं रौनक़े-दुनियाका मदार
मैले-नग़मा तो हर-इक क़ल्बमें आसूदा है
जज़्बे-माहौल लगा दें न अगर मुहरे-सुकूत
हर गुआला है यहाँ कृष्ण कन्हैया प्यारे!
देख हर लम्हा निखरते हुए माहौलको देख
जब्रके दाग़ हर-इक आन मिटे जाते हैं,
और उभरते ही चले आते हैं, दिलकश ख़दो-ख़ाल
यह हर-इक लम्हा निखरता हुआ माहौलका हुस्न
नग़मए-शौक़की तनवीर भी कर डालेगा
इक नई तान, नए साज़का मूजिब होगा
बदले माहौलके ख़ुश-वक़्त मुग़न्नीकी क़सम
फ़न्के नग़मे मेरे नग़मोंसे हसीं-तर होंगे,

शैतानकी मौत

दैर वीराँ है, हरम है बे-ख़रोश
बरहमन चुप है, मोअज़्ज़न है ख़मोश
सोज़ है श्लोकमें बाक़ी न साज़
अब न ख़ुत्बेमें वह हिद्दत है न जोश

हो गई बेसूद तल्क़ीने-सवाब
अब डरायें भी तो क्या ख़ौफ़े-अज़ाब
अब हरीफ़े-शैख़ कोई भी नहीं
ख़त्म है हर-इक मौज़ूए-ख़िताब

आज मद्धिम-सी है आवाजे-दरूद
आज जलता ही नहीं मन्दिरमें ऊद
क्या क़यामत है यकायक हो गया
महफ़िले-ज़ुहहादपर तारी जमूद

रब्बे-बरहक़, ख़ालिक़े-आली जनाब !
हो गये अपने मिशनमें कामयाब
सिलसिला रुश्दो-हिदायतका है ख़त्म
आस्माँसे अब न उतरेगी किताब

मर गया ऐ वाये शैताँ मर गया

फ़िलबदी शेर

१५ अगस्तके स्वतन्त्रता दिवसके उपलक्ष्यमें होनेवाले लालकिलेके मुशाअ़रेमें 'जोश' मलीहाबादीकी शराब सम्बन्धी रुबाइयाँ सुनकर आपने यह फ़िलबदी शेर कहे तो मुशाअ़रा दादो-तहसीनसे गूँज उठा।

वतनमें हो अगर ऐशो-मसर्रतकी फ़रावानी
मुझे क्या गर कोई लुत्फ़े-मए-गुल्फ़ाम लेता है
मगर जब क़ौमके हाथोंमें हो कासा गदाईका
कोई ख़ुद्दार अपने हाथमें कब जाम लेता है ?
कमर-बस्ता वतन हो जब पए-तकमीले-आज़ादी
वह बे गैरत है जो साक़ीका दामन थाम लेता है
शराबे-नाब कैसी शीरे-मादर है हराम उसपर
जो ऐसे वक़्तमें बादा-कशीका नाम लेता है

ग़ज़लोंके शेर

रोशन उमीदो-जूसे शबिस्ताने-ज़िन्दगी
तेरा ख़याल शमए-फ़रोज़ाने-ज़िन्दगी

ख़ुदा या नाख़ुदा अब जिसको चाहो बख़्श दो इज़्ज़त
हक़ीक़तमें तो किश्ती इत्तिफ़ाक़न बच गई अपनी
बड़ा जी चाहता है यह फ़क़त नुक़्से-बिसारत हो
बड़ी मुरअ़तसे दुनिया खो रही है दिलकशी अपनी

निगहे - इल्तिफ़ातके क़ुर्बां
आ गया ख़ुदपै एतबार हमें
कुछ निगाहोंसे भी पिला साक़ी!
चाहिए नश्शए - पाएदार हमें

ख़ुशा बख़्ते! मयस्सर मैकदेकी शाम आती है
कभी तो राहपर भी गर्दिशे-ऐय्याम आती है
जलाओ शमए-मैख़ाना कि शायद रोशनी फैले
भयानक शबका दीबाचा न हो जो शाम आती है
तसव्वुरमें तुम्हारी यादके जुगनू चमकते हैं
शबे-हिजराँ फ़क़त यह रोशनी ही काम आती है

जिस बज़्ममें अदूकी हविस मुहतरिम बनी
मेरा ख़ुलूस मोरिदे - इल्ज़ाम हो गया
कुछ इस अदासे झूम उठे बादा-कश कि आज
पिन्दारे - ज़ुहद लरज़ा - बर - अन्दाम हो गया

क़ुर्बे-मंज़िलका यह एहसास है अल्लाह-अल्लाह
गर्दिए-यक-गाम भी दुश्वार नज़र आती है,

गर ख़न्दए-गुल है जामादरी ऐ दीदावरो ! ऐसा ही सही
जब फ़स्ले-बहारॉ आती है, हर बातके इमकॉ होते है
तू शिकवा ब-लब इस बातपै है तरतीबे-गुलिस्ताँ नाक़िस है
मैं हैरॉ हूँ कब गुल-बूटे शायाने-गुलिस्ताँ होते है ?

तेरा गिला है न कुछ शिकवए-जहॉ प्यारे !
हमीने उम्र गँवादी है रायगॉ प्यारे !
कुछ इतना सहल न था जादए-जुनूँ ऐ दोस्त !
तेरा ख़याल रहा दिलका पासबॉ प्यारे !

वह ख़ुश-क़िस्मत थे जिनका ख़ून ग़ाज़ा बन गया वर्ना
तुझे ऐ रूए-गेती था ब-हर सूरत निखर जाना
नज़रमें था हमारी हुस्ने - दिल अफ़रोज़ मंज़िलका
अरे यह झूठ है रस्तेको हमने बे - ख़तर जाना

मै तूफ़ानोंका ख़ू-गर हूँ मुझे मजधारमें ले चल
डरा सकती नहीं डूबे हुओंकी दास्तॉ मुझको

क्या समझता था नज़र आने लगा है क्या मुझे
चश्मे - बीनाने कहींका भी नहीं रक्खा मुझे
मुझमे पहले कोई शायद इतना दीवाना न था
घूरने लगता है हर - इक ज़र्रए-सेहरा मुझे

कमाले-जज़्बे-मुहब्बत अरे मआज़ - अल्लाह !
जबीँको जैसे कोई दिल्मे रस्मो - राह नहीं

यह जो शिकवा है जमानेसे बजा है तो सही
लेकिन ऐ दिल ! कोई अपनी भी खता है तो सही
इसलिए चुप हूँ कि बात और न बढ़ जाए कहीं
वर्ना सच यह है कि कुछ तुमसे गिला है तो सही

इश्क़ फ़ानी न हुस्न फ़ानी है,
इनका हर लमहा जावदानी है
एक बे-कैफ़-सा तसलसुल है
कोई ग़म है न शादमानी है

न लुत्फ़े-खासपै कर इसको महमूल
नजर इसकी जमाना-साज भी है
उठा हर राज़के चेहरेसे पर्दा
मगर कुछ मावराए-राज़ भी है

जन्नतकी अब न ख्वाहिशे-बेजा करेंगे हम
दुनियाको अपने हस्बे-तमन्ना करेंगे हम
ज़ाहिद ! फिर एक बार जहन्नुमका ज़िक्र छेड़
फिर एहतमामे - साग़रो - मीना करेंगे हम

अब वह नहीं है जलवए-शामो-सहरका रंग
तेरा जमाल शामिले - हुस्ने नज़र नहीं
उड़ भी चलें तो अब वोह बहारे-चमन कहाँ
हाँ - हाँ नहीं मुझे हविसे-बालो-पर नहीं
तर्के - तअ़ल्लुक़ात ख़ुद अपना क़ुसूर था
अब क्या गिला कि उनको हमारी ख़बर नहीं

ख़ुदा करे कि फ़रेबे-वफ़ा रहे क़ायम
कि जिन्दगीका कोई और अब सहारा नहीं

मेरी मस्ती पै इतना तअ़न क्यों है
कोई इस बज़्ममें हुशियार भी है
न दे दाद इस क़दर भी ज़ब्ते-ग़मकी
यह ग़म ना-क़ाबिले-इज़हार भी है

हविसको सहल न समझो हविसके रस्तेमें,
कहीं-कहीं तो मुहब्बतका एहतिमाल भी है
अ़ताबे-ज़ुहद फ़क़त बादा तक न था महदूद
कि ज़दमें अब मेरी रंगीनिए-ख़याल भी है,

जबसे जुदा हुए हैं तबियत उदास है
और लुत्फ़ यह कि तुझसे कोई मुद्दआ नहीं

फिर फ़र्ते-एहतियातसे घबरा रहा है दिल
बेगानए-मआल हुआ जा रहा है दिल

देख हवा है मुश्क बार, देख फ़ज़ा है ज़र-निगार
देख निगाहे-इन्तज़ार, देख वह आ गया कोई

ग़लत कि उनकी जफ़ाको भुला दिया मैंने
मगर यह सच है कि वह याद आये जाते हैं,

कौन कहता है बेवफ़ा तुझको
किसके मुँहमें ज़बान है प्यार!

यूँ दिलको छेड़कर निगहे-नाज़ झुक गई
छुप जाए कोई जैसे किसीको पुकारके

यह रूए-दिल-नवाज़ यह गर्दे-फ़सुर्दगी
क्या-क्या सितम किये हैं, ग़मे-रोज़गारने
तू ख़ुद भी जिनकी कोई तलाफ़ी न कर सके
रंज इस क़दर दिये हैं तेरे इन्तज़ारने
तुमको दिले-हज़ींकी तसल्लीसे क्या ग़रज़
इक बोझ तुम तो आये थे सरसे उतारने

न पूछ मुझसे मेरी बेख़ुदीका अफ़साना
किसीकी मस्त निगाहीका माजरा हूँ मैं

मुझे जिन्दगीकी दुआ देनेवाले
हँसी आ रही है तेरी सादगी पर

दिले-आगाह क्या दिया तूने
आफ़तोंमें फँसा दिया तूने

दिमागो-दिलपै लतीफ़-सी बेख़ुदी नशा बनके छा रही है
न छेड़ इस वक़्त मुझको हमदम ! किसीकी आवाज़ आ रही है
तरानए-ग़म न छेड़ बुलबुल यहाँ कोई हम-नफ़स नहीं है
यहाँ तो बेगानगी है इतनी कि हर कली मुसकरा रही है

ख़ामाने-अश्क[1] मिद्हते-वफ़ा[2] मनाओ ख़ैर
सुनते हैं अब जुनूने-वफ़ा[3] आम हो गया
आ ही गई ज़बान पै सब बात क्या करूँ
दिल बेनियाज़े - इशरते - अंजाम[4] हो गया
जिस बज़्ममें अदूकी हविस[5] मोहतरिम[6] बनी
मेरा ख़ुलूस[7] मूरदे - इल्ज़ाम[8] हो गया
कुछ इस अदासे झूम उठे बादाकश कि आज
पिन्दारे-ज़ुहद लरज़ाबर - अन्दाम हो गया

अम्न

क्रान्ता और उम्मते-लेनिन[9] ?
दस्ते - क़ातिलमें फूलकी पत्ती ?
एक जल्लाद और मोमीज़ार[10] ?
नामए-अम्नमें[11] फ़रेब न खा,
यह रज़ज़के सिवा कुछ और नहीं
सिर्फ़ क़ातिलने भेस बदला है

---

१. आँसुओंकी, २. सच्ची भलाईकी, ३. नेकी करनेका उन्माद, ४. किये हुए कार्योंके परिणामोंसे उदासीन, ५. शत्रुकी विषय-वासना, ६. आदरणीय, ७. सदाचार, ८. अपराधी, ९. लेनिनके अनुयायी, १०. मंगीतर, ११. शान्ति-प्रस्तावमें ।

कुहन - इन्साँ शिकार[1] उट्ठे हैं,
दामे - ताज़ाका एहतमाम किये[2]
लब पै हैं सुल्हो-दोस्तीकी नवेद[3]
आस्तीनोंमें दश्नए - पिन्हाँ[4]
ग़ाज़ए-अम्न मलके[5] निकले हैं
वारिसाने - हलाकू - ओ - चंगेज़[6]

क्या क़यामत है क़ातिले-जमहूर[7]
दुश्मने - इरतक़ाए - इन्सानी[8]
दावते इन्क़िलाब देते हैं,
हैं वही अम्नो-आश्तीके नक़ीब[9]
जिनके सीने हैं बुग्ज़से मामूर[10]
जिनके जबड़ोंसे ख़ूँ टपकता है

पूछ इन अम्नके नक़ीबोंसे
जंगजू कौन है ज़मानेमें ?
कौन था कोरियामें बानीए-जंग[11]?
किसने तिब्बतको पायमाल किया ?
किसने पोलैण्डको किया था शिकार ?

---

१. अनुभवी शिकारी, २. नवीन जालकी व्यवस्था करते हुए, ३. ओठोंपर सुलह-शान्तिका सन्देश, ४. खञ्जर छिपाये, ५. सुलह-शान्तिका पाउडर ६. हलाकू और चंगेजके वंशधर, ७. प्रजातन्त्रके शत्रु, ८. मानवताकी उन्नतिके विरोधी, ९. सुलह-शान्तिके दूत, १०. द्वेषसे भरे हुए, ११. लड़ाईका ज़िम्मेवार।

इतना तारीक नामए - ऐमाल[1]
और यह शोरे - पाक-दामानी ?
ऐ रियाकार[2] ! ऐ मुजाहिदे अम्न[3] !
रूसके रामराजके हामी !
तेरी ऐसा दवामियोंका जवाब
इक हिक़ारत भरा तबस्सुम है

२५ फरवरी १६५८ ई०]

१. पाप-पुण्यका [illegible] बस्ता, २. धोखेबाज़, ३. शान्तिके लिए लड़नेवाले और मरनेवाले।

जगन्नाथ आज़ाद

श्री० जगन्नाथ 'आज़ाद' ख्यातिप्राप्त शाइर श्री तिलोकचन्द 'महरूम'के सुपुत्र हैं। भारत-विभाजनके कारण लाहौर छोड़कर दिल्ली बसनेपर मजबूर होना पड़ा। मगर पंजाबकी याद आपको भुलाये नहीं भूलती। एक मुशाअ़रेमें निमंत्रित होकर जब आप वायुयानसे पाकिस्तान गये तो वायुयानको देखकर आपके मुँहसे अनायास निकल गया—

गुज़रे हुए दौरको[2] बुलानेवाले!
बिछड़ी हुई दुनियासे मिलानेवाले!
अल्लाह तुझे और मुबारकबार[3] करे
ऐ मुझको वतनमें लेके जानेवाले!

आहूए-रमीदाको[4] ख़ुतनमें ले जा,
बिछुड़े हुए बुलबुलको चमनमें ले जा,
'आज़ाद'के मुन्तज़िर हैं याराने-वतन
'आज़ाद'को याराने-वतनमें ले जा॥

बिछुड़े हुए बालककी जो मनःस्थिति माँकी गोद पुनः प्राप्त हो जानेपर होती है, उसी तरहकी स्थिति अपने देशमें पहुँचनेपर आज़ादकी हुई—

छोड़ी हुई अंजुमनमें[5] वापिस आया,
महजूरे-वतन[6] वतनमें वापिस आया,
ऐ अहले-चमन! चमनमें ऐलान करो,
शैदाए-चमन[7] चमनमें वापिस आया॥

---

१. आपका परिचय एवं कलाम शेरो-सुख़नके चौथे भागमें दिया जा चुका है, २. ज़मानेको, समयको, ३. हल्का-फुल्का, ४. भटके हुए उन्मत्त हिरनको, ५. महफ़िलमें, ६. देशसे बिछुड़ा हुआ, ७. उद्यानपर आसक्त।

नहीं भूला अभी तक मैं चमन-ज़ारों पै[1] क्या गुज़री,
चमन - ज़ारोंमें जब ऐ दोस्त ! हंगामे - बहार[2] आया,
गिरा पत्थरकी सूरत ख़ाकपर हर क़तरए-बाराँ[3],
हर-इक झोंका सबाका[4] मिस्ले-तेग़े - आबदार[5] आया ॥

नशेमन[6] जल उठे, शाख़ें गिरीं अशजारसे[7] कटकर,
चमन अन्दर चमन इक आतिशी-रौ[8] चल गई गोया,
ख़ुलूसो - सिदक़पर थी बज़्मे - अरबाबे - चमन क़ायम[9],
वोह बुनियादें हिलीं यकसर, वोह महफ़िल जल गई गोया ॥

इधर सैयाद फिरते थे, उधर सैयाद फिरते थे,
कुछ इस अन्दाज़से मेरे गुलिस्ताँमें बहार आई,
इधर भी आग भड़की थी, उधर भी आग भड़की थी,
ज़मीने - बाग़पर यूँ रहमते - परवर्दगार[10] आई ॥

१. उद्यानोंपर, २. बसन्तकी आँधी, ३. वर्षाकी बूँद, ४. हवाका, ५. चमकती तलवारकी तरह, ६. नीड़, घोंसले, ७. वृक्षोंसे, ८. आगकी लहर, ९. इष्ट-मित्रोंकी उद्यान-गोष्ठी, परस्परके प्रेम और सद्व्यवहारपर स्थिर थी । १०. ख़ुदाकी मेहरबानी इस शानसे आई ।

हुआ जब दूर धरमोंका अँधेरा अपनी दुनियासे,
उफ़क़परे हमनशीं[2] ! जिस सुबहको ताज़ा किरन फूटी,
न जाने वोह कोई मसऊद[3] या मनहूस[4] साअ़त[5] थी,
कि तद्बीरे-वतन जागी, तो तक़्दीरे-वतन फूटी ॥

....

इसी हिंदोस्ताँमें धर्मकी, मज़हबकी दुनियामें,
तमद्दुनको[6] जुनूँकी[7] लहरमें बहता हुआ देखा,
मईनुद्दीन चिश्तीकी[8] ज़मींपर, कृष्णके घरमें,
मसर्रतको अलमकी दास्ताँ कहता हुआ देखा ॥

उसी पंजाबमें, जिसकी मुहब्बत-खेज़ दुनियामें,
गुरू नानकने अपने दिल्नशीं नग़मात[9] फ़रमाये,
किये बढ़-बढ़के अफ़आले ज़बूँ[10] वोह इब्ने-आदमने[11]
दरिन्दोंको[12] तो क्या इब्लीसको[13] भी जिनसे शर्म आये ॥

. . ..

१. आसमानपर, २. पड़ोसी, ३. शुभ, ४ अशुभ, ५. घड़ी, पल, ६. सभ्यता, संस्कृति, ७. पागलपन, ८. एक औलिया जिनकी अजमेर [illegible] दरगाह [illegible] मुसलमान सम्मानित [illegible] हैं, ९. दिलकश गीत, १०. हीन कर्म, कुकर्म, ११. मानवसन्तानने, १२. हिंसक जानवरोंको, १३. शैतानको।

भड़कती आग देखी, हर जगह कटते बशर[1] देखे,
ग़ज़ब था अशरफ़ुल मख़लूकका[2] जज़्बे-बहमयाना[3]
लहूकी नदियोंमें हर तरफ़ बहती हुई देखी,
हक़ीक़त वोह कि जिससे मात खा जाये हर अफ़साना ॥

....

१६ बन्दकी 'जब हिजाबात उठे' नज़ममें फ़र्माया है—

....

यह मुसावातका[4] नक़्शा भी अजब नक़्शा था ।
आदम आदमसे हिरासाँ[5] नज़र आता था अभी,
दुश्मन इन्सानका इन्साँ नज़र आता था अभी ॥

यह मुसावात जो देखी तो नज़र घूम गई ।
भूकके हाथमें जनताको सिसकते देखा,
माओंकी गोदमें बच्चोंको बिलकते देखा ॥

सो गया रातको सरदीमें सड़कपर जो ग़रीब,
सुबहसे क़ब्ल[6] सड़क ही पै वोह दम तोड़ गया,
और 'इन्सान' उसे देखके मुँह मोड़ गया ॥

....

१ मनुष्य, २. विश्वके समस्त प्राणियोंमें अपनेको श्रेष्ठ समझनेवाले मानवोंका, ३. अन्धविश्वासकी भावना, ४. बराबरीका, समानताका, ५. भयभीत, ६. पहले ।

मौज़ूए-सुख़न

– १२६ में से ४ –

....

क्या इसी दिनके लिए हमने दुआ माँगी थी ?
कि ख़िज़ाँमे रहे महफ़ूज़[1] गुलिस्ताने-वतन ॥
क्या इसी दिनके लिए बाँधके निकले थे कफ़न ?
मौतको जानके इक खेल जवानाने-वतन ॥
क्या इसी दिनके लिए जेलमें सड़-सड़के मरे ?
दौरे-अफ़रंगके दुश्मन[2] वोह मुहिब्बाने-वतन[3] ॥

उनके दिल पे तुझे मालूम भी है क्या गुज़रे ?
एक पलको भी जो लौट आयें शहीदाने-वतन ॥

सितारोंसे ज़र्रों तकसे

१५ अगस्त १९४७ ई०

– १० में से ४ –

न पूछो जब बहार आई तो दीवानों पे क्या गुज़री ?
ज़रा देखो कि इस मौसममें फ़र्ज़ानों पे क्या गुज़री ?
बहार आते ही टकराने लगे क्यों साग़रो - मीना ?
बता ऐ पीरे-मैख़ाना ? यह मैख़ानों पे क्या गुज़री ?

१. पतझड़में सुरक्षित, २. विदेशी शासनके शत्रु, ३. देशभक्त।

फ़ज़ामें हर तरफ़ क्यों धज्जियाँ आवारा हैं उनकी ?
जुनूने - सरफ़रोशी ! तेरे अफ़सानों पै क्या गुज़री ?

....

कहो दैरो-हरम वालो[1] ! यह तुमने क्या फ़सूँ[2] फूँका ?
ख़ुदाके घरपै क्या बीती, सनमख़ानोंपै क्या गुज़री ?

....

न पूछ 'आज़ाद' ! अपनों और बेगानोंका[3] अफ़साना ।
हुआ था क्या यह अपनोंको यह बेगानोंपै क्या गुज़री ?

नई महफ़िल

– १८ मेंसे २ –

... .

जहाँ चारों तरफ़से आँधियाँ मज़हबकी चलती हों ।
वहाँ हम अक़्लकी मशअ़ल जलायें भी तो क्या होगा ?
जहालतके जहाँ पत्थर - ही - पत्थर रास्तेमें हों ।
वहाँ हम नुत्क़का[3] दरिया बहायें भी तो क्या होगा ?

... .

१. मन्दिर-मस्जिद वालो, २. जादू, ३. परायोंका, ४. वाणीका ।

आज़ादीके बाद

– १७ मॅं से २ –

गर्द दामनसे गुलामीकी छुड़ानेवाले !
तेरे माथे पे गुलामीका निशाँ आज भी है ॥

यह अलग बात है तू इसको न देखे लेकिन—
तेरे माहोलमें[1] आहोंका धुआँ आज भी है ॥

नया दौर—नये रहज़न

–१२ मॅं-मे ४–

....

इस नये दौरमें देखे हैं वोह रहज़न[2] हमने
जो बहारोंको गुलिस्तोंसे चुरा ले जायें,
दें निगाहोंको जो धोका तो पता भी न चले,
और तू अंजुमे-तारोंसे[3] उड़ा ले जायें ॥

इस तरह उनकी नज़र फूलपै डाका डाले,
फूल मौजूद रहे, फूल में खुशबू न रहे,
हिर्सकी[4] आँखसे वोह तेरी तरफ़ देख जो लें,
तेरा पैकर[5] रहे मौजूद मगर तू न रहे ॥

–१९४९ में

१. वातावरणमें, २. लुटेरे, ३. चन्द्रमाकी चाँदनीका समूह, ४. लालचकी, ५. शरीर ।

'आज़ाद' साहबने अपनी आँखें शाइरीके वातावरणमें खोलीं, आपके पिता 'महरूम' साहब आपके जन्मसे पहले ही आसमाने-शाइरीपर चमक रहे थे। एक तरहसे आपको शाइरी विरसेमें मिली। मगर आपको केवल इतनेसे ही सन्तोष नहीं हुआ। आपने अपनी जुदागाना लाइन इख़्तियार की। सरदार जाफ़री फर्माते हैं—"उसने ख़ुद अपनी काविश (अध्यवसाय) से शाइरीको सँवारा और निखारा है, और इसमें अपने ख़ूने-जिगरका इज़ाफ़ा (परिवर्द्धन) किया है।...आज़ादका मौज़ूँ (शाइराना रुझान) दुखिया, इन्सानियत और उसकी तमन्नाएँ हैं।"

इन्क़लाबे-शाइर 'जोश' मलीहाबादीने 'आज़ाद' के सम्बंधमें लिखा है—"आज़ाद एशियाकी रूहमें डूबकर और इन्सानी जिन्दगीका ख़ुर्दबीनी मुतायला (गहरा अध्ययन) करके ऐसी नज़्में कहता है, जो दिलचस्प भी होती हैं और नौए-इन्सान (मानवता) के वास्ते मुफ़ीद भी।"
डा० एहतमाम हुसेन साहब फर्माते हैं—

"आज़ादकी शाइरी एक दर्दमन्द दिलकी आवाज है।"

आज़ादका जन्म पश्चिमी पंजाबमें सिन्धु नदीके उस पार एक छोटे-से गाँव ईसाख़ैलमें ५ दिसम्बर १९१८ ई० के प्रातःकाल हुआ। आपके पिता हज़रत तिलोकचन्द 'महरूम' स्कूलके हेडमास्टर थे, फिर भी आपका शिक्षारम्भ स्कूलमें न होकर घरपर ही हुआ। आपकी कुशाग्र बुद्धि बाल्या-वस्थासे ही प्रकट होने लगी थी। अभी आप उर्दू-वर्णमालासे परिचित हुए थे कि महरूम साहबने दीवाने-ग़ालिबसे वह ग़ज़ल आपसे पढ़वाई जिसका मतला यह है—

कोई उम्मीद बर नहीं आती।
कोई सूरत नज़र नहीं आती॥

ग़ज़ल सुनकर महरूम साहबने फ़र्माया—"तुम इम्तहानमें पास हो।" इस वाक्यसे 'महरूम' साहबका अभिप्राय क्या था, उस वक्त तो आज़ाद

कुछ न समझे, किन्तु कई साल बाद पूछा तो जवाब मिला—"मैं देखना चाहता था कि तुम सही पढ़ सकते हो या नहीं।"

ईसाखैलसे महरूम साहबका स्थानान्तर कुलूरकोटका हुआ, तब आपकी उम्र पाँच वर्षकी थी। कुलूरकोट जाते हुए सिन्धु नदीको नाव द्वारा पार करना पड़ा। मार्गमें पहाड़ोंपर बने मकानोंको देखकर महरूम साहबने यह मिसरा देकर—

पहाड़ोंके ऊपर बने हैं मकान

गिरह लगानेको कहा। आपने तुरन्त गिरह लगाई—

अजब उनकी सूरत अजब उनकी शान

महरूम साहबने फ़र्माया—"सूरत नहीं, शौकत कहो।" सूरतके बजाय शौकत कहनेसे मिसरेमें क्या निखार आ गया? उस वक्त तो ५ वर्षके 'आज़ाद' कुछ न समझ पाये! किन्तु कुछ मुद्दतके बाद जब आपको दोनों शब्दोंका अर्थ और अभिप्राय[1] मालूम हुआ तो समझमें आया कि तनिक-से संशोधनसे क्या बात पैदा हो जाती है।

बारह वर्षकी उम्रमें आपने कुलूरकोटसे आठवाँ दर्जा पास किया। दो वर्षमें मियाँवालीसे मैट्रिक परीक्षा पास की। १९३७ई० में आपने रावलपिण्डी कॉलेजमें प्रवेश किया। यहींसे आपकी वास्तविक रुचि शाइरीकी तरफ बढ़ी। इससे पूर्व कभी-कभार कोई मिसरा मौजूँ कर लेने या कोई शेर कहलेनेके सिवा इस तरफ कोई खास दिलचस्पी न थी। महरूम साहबने अपना तबादला भी रावलपिण्डी करा लिया था। अतः उनके पास अक्सर शाइर और अदीब आते रहते थे। दिन-रात शेरो-अदबके चर्चे चलते रहते थे। इस वातावरणका प्रभाव आज़ाद साहबपर होना लाज़िमी था। परिणाम इसका यह हुआ कि एफ़० ए० पास करनेपर बी० ए० में प्रवेश किया

१. सूरतका अर्थ है शक्ल और शौकतके मआनी हैं—दबदबा, रौब, जाहो-जलाल, मर्तबा, शानो-शौकत।

तो सहपाठियोंके सहयोगसे 'बज़्मे-अदब'की आपने कॉलेजमें नींव डाली। जिसके तत्वावधानमें अक्सर मुशाअ़रे और साहित्यिक जल्से होने लगे। कॉलेज मेगज़ीनके भी आप सम्पादक चुने गये। कॉलेज-मेगज़ीनके अलावा लाहौरकी 'अदबी दुनिया' और कानपुरके 'ज़माने' में भी आपका कलाम प्रकाशित होने लगा। बी० ए० पास करके आप लाहौर आये तो वहाँका वातावरण शाइरीके लिए बहुत ही अनुकूल पाया। वहीं आपका अल्लामा 'ताजवर' नजीबाबादी[1]—जैसे विद्वान्‌से परिचय हुआ। जो कि युवकोंको बाँह पकड़कर उठानेमें, शाइर और साहित्यिक बनानेमें अपना जवाब नहीं रखते थे। लोहा पारसके छूनेसे सोना बन पाता है या कोरी कल्पना है, कुछ कहा नहीं जा सकता, परन्तु ताजवर नजीबाबादीके आस्तोंपर जिसने भी सिज्दा किया, वह शाइर या साहित्यिक जरूर हुआ, यह दावेके साथ कहा जा सकता है। उनके पास—

जो बैठा बा-अदब होकर, वह उठ्ठा - बा-ख़बर होकर

एम० ए० में आपको सौभाग्यसे डाक्टर सर इक़बाल, सैयद आबिद अली, सूफ़ी ग़ुलाम मुस्तफ़ा 'तबस्सुम' और डाक्टर मुहम्मद अब्दुल्ला—जैसे ख्याति प्राप्त शिक्षकोंसे लाभान्वित होनेका अवसर मिला।

एम० ए० करनेके बाद 'तहरीके रिफाक़त'[2] में आप शामिल हो गये। उसके संगठनके लिए पंजाबके गाँव-गाँवमें आपने अलख जगाई, किन्तु पंजाबकी दूषित साम्प्रदायिक मनोवृत्तिने यह तहरीक चलने न दी और उसने वहाँके विषैले-प्राण-घोटूँ वातावरणमें दम तोड़ दिया।

— —

१. आपका परिचय एवं कलाम शेरो-सुखन चौथे भागमें दिया जा चुका है।

२. पंजाबके मुख्यमन्त्री सर सिकन्दर हयातख़ाँने हिन्दू मुस्लिम-ऐक्यके लिए यह संस्था स्थापित की थी।

उसके बाद पंजाब कॉंग्रेसके 'जयहिन्द' पत्र कार्यालयसे आप सम्बन्धित हो गये और अगस्त १६४७ ई० तक वहाँ कार्य करते रहे। फिर भारत-विभाजनकी बाढ़में आप भी लाखों अभागोंकी तरह डूबते-उभरते दिल्लीके किनारे आ लगे। तबसे वहीं क़याम फ़र्माते हैं। प्रारम्भमें चन्द माह 'मिनिस्टिरी ऑफ लेबर' आफिसमें काम किया। इसके बाद 'आजकल'के सम्पादकीय विभागमें नियत हुए। जून १६५५ ई० में उन्नति पाकर 'इन्फ़ारमेशन ऑफीसर' पदपर प्रतिष्ठित हुए और वर्त्तमानमें उसी पदको सुशोभित कर रहे हैं।

आजादको शाइरीके क्षेत्रमें अवतीर्ण हुए ब-मुश्किल चन्द साल हुए हैं, किन्तु इसी अल्प-कालमें आपने अपना स्थान बना लिया है। भारतके बड़े-बड़े मुशाअरोंमें आपकी उपस्थिति आवश्यक समझी जाती है। पाकिस्तान वाले भी आपको बुलाते रहते हैं। आकाशवाणी दिल्लीके मुशाअरोंमें आपका दिलकश कलाम अक्सर सुननेमें आता है। स्वयं आजाद अपनी शाइरीके सम्बन्धमें फ़र्माते हैं—

"अगर्चे शेर कहनेका शौक़ मुझे बचपनसे है, लेकिन तक़सीमे-हिन्द तक मैंने शेर कहनेकी तरफ कोई खास तवज्जह नहीं की थी, और इसे ताश खेलने या सिनेमा देखनेसे ज्यादा अहमियत कभी नहीं दी थी।... लेकिन न जाने १६४७ के क़त्लो-खून और उसके बाद पैदा होनेवाले वाक़यातमें क्या बात पिनहाँ (निहित) थी कि एक बिजलीकी तरह मेरे जहनपर चमके और हमेशाके लिए अपना असर छोड़ गये। मुझे यूँ महसूस हुआ कि जज़्बात-ओ-खयालात (भावों और विचारों) के बन्द चश्मे (झरने) थे कि इशारा पाते ही फूट पड़े हैं। एक बर्फ़ज़ार (बर्फीला पर्वत) था, जो महरे-नीम-रोज़ (सूर्यवाष्प) का मुहताज था और जब उसको भरपूर किरणोंसे दो-चार हुआ तो एक सैलाब (बहाव) बनकर बह निकला[1]।"

---

१. सितारोंसे जर्रों तक पृ० ११।

'आज़ाद' शौक़िया या मनबहलावके लिए शाइरी नहीं करते, अपितु जब किसी घटनासे प्रभावित हो जाते हैं, अथवा कलाम कहनेको जब उनका हृदय तड़प उठता है, तभी कहते हैं।

आपके निम्नलिखित दो संकलन हमारे सामने हैं—

१. बेकराँ—२० × ३० = साइज़के १६ पेजी पृ० ३५२ द्वितीय संस्करण जुलाई १९५४ ई०।

२. सितारोंसे ज़रोंतक—उक्त आकारके १९२ पृष्ठ प्रथम संस्करण मई १९५० ई०।

इन्हीं दो संकलनोंसे चन्द ग़ज़लोंके शेर दिये जा रहे हैं—

ऐ दोस्त ! तेरी यादने बख़्शा वोह सहारा।
हर तल्ख़िए-दौरॉको[1] किया हमने गवारा[2]॥

जिस ग़मसे तसकीं[3] मिलती हो, उस ग़मका मदावा कौन करे ?
जिस दर्दमें लज़्ज़त पिन्हाँ[5] हो, उस दर्दका दरमाँ[4] क्या होगा ?
तहज़ीबका परचम[7] लहराया हर शहर - ओ - चमन वीरान हुआ।
तामीरका[8] है सामाँ जो यही, तख़रीबका[9] सामाँ क्या होगा ?
ऐ भागनेवाले ! वक़्त है यह, हाँ सहने-चमनसे[10] भाग निकल।
जब बाग़ क़फ़स[11] बन जायेगा, उस वक़्त गुरेज़ाँ[12] क्या होगा ?

---

१. ससारकी कडुवाहटको, २. सहन, ३. शान्ति, चैन, ४. इलाज, ५. छिपी हुई, ६. चिकित्सा, ७. सभ्यताका झंडा, ८. निर्माण-योजना, ९. विध्वंसका, १०. उद्यानसे, ११. कारागार, पिंजरा, १२. भागना।

अब हैं सरगरमे - तलाशे - मंज़िले - जानाँ[1] न हम।
छोड़ आये हैं हदूदे - काब - ओ - बुतख़ाना[2] हम॥
यह फ़क़त आँसू नहीं ऐ चश्मे-ज़ाहिरबीने[3] - दोस्त!
अपनी पलकोंपर लिये बैठे हैं इक अफ़साना[4] हम॥
ज़िन्दगी दुश्वार - से - दुश्वारतर होती गई।
छेड़ बैठे या इलाही! कौन - सा अफ़साना हम॥

क्या जानिए 'आज़ाद'! मेरा इश्क़े -जुनूँ-ख़ेज़[5]।
जीनेका सहारा है कि मरनेका बहाना॥

आज इन्सान क्या-से-क्या हो गया है, यह पशुसे भी बदतर बन गया है। इसी भावको किस अनोखेपनसे व्यक्त किया है—

इन्सानियत ख़ुद अपनी निगाहोंमें है ज़लील।
इतनी बलन्दियोंपे[6] तो इन्साँ न था कभी॥

रात जिन्होंने महफ़िलको अन्दाज़ सिखाये जीनेके।
ख़ाकिस्तरको[7] देखने वाले! हाँ यह वही परवाने हैं॥

यह दोस्तोंका रवैया, यह दुश्मनोंका सुलूक?
जो मुझसे पूछो तो दोनोंमें कोई फ़र्क़ नहीं॥

१-२. अपने प्यारेकी खोजमें इतने लीन हैं कि काबा-काशी पीछे छूट गये हैं, ३. ऊपरी नजरोंसे देखनेवाले, ४. उपन्यास, ५. उन्मत्त प्रेम, ६. उन्नतिपर, ऊँचाई पर, ७. परवानेकी खाकको।

इक बेवफ़ाकी नज़्र करूँ फिर वक़ारे-इश्क़[1]।
क्या आर्ज़ू है जिसपै मिटा जा रहा हूँ मैं॥

वोह अज़्म[2] है जो ले आता है क़दमों तक खींचके मंज़िलको।
इस राज़को[3] रहबर[4] क्या समझे, इस भेदको मंज़िल क्या जाने?
मझधारमें जब किश्ती पहुँची, किश्तीवालोंपर क्या गुज़री?
यह तूफ़ानोंकी बातें हैं, आसूदए-साहिल[5] क्या जाने?
जब इश्क़ हो अपनी धुनमें रवाँ[6], बे ख़ौफ़ो-ख़तर मंज़िलकी तरफ़।
वोह राहकी मुश्किल क्या समझे, वोह दूरिए-मंज़िल क्या जाने?

मुमकिन नहीं, कि बज़्मे-तरब[7] फिर सजा सकूँ।
अब यह भी है बहुत कि तुम्हें याद आ सकूँ॥
यह क्या तिलिस्म है कि तेरी जलवा-गाहसे?
नज़दीक आ सकूँ न कहीं दूर जा सकूँ॥

ज़रा इतना तो फ़र्मा दें कि मंज़िलकी तमन्नामें।
भटकते हम फिरेंगे ऐ अमीरे-कारवाँ[8]! कब तक?

—बेकरार से

---

१. प्रेमकी प्रतिष्ठा, २. इरादा, ३. भेदको, ४. पथ-प्रदर्शक, ५. किनारोंपर रहनेवाले, ६. जाता हुआ, ७. आनन्दकी महफ़िलें, ८. यात्रीदलके नेता।

ग़ज़ब तो यह है कि हमसफ़ीर[1] इसको भी शिकायत समझ रहे हैं।
उभर रहा है जो दिलकी गहराइयोंसे इक ग़म भरा तराना॥
तुम्हीं तो सैयाद हो कि अपनोंका रूप भरकर चमनमें आये।
करो न अब मेरी अश्कशोई[2] उजाड़कर मेरा आशियाना॥

कभी वोह दिन थे अपने दिलको हम अपना न कहते थे।
मगर अब हर बशरके[3] दिलको अपना दिल समझते हैं॥

ऐ नशेमन ! मुझे फरेब न दे।
जा चुकी अब तो हसरते-परवाज़ें[4]॥

हरमवालो ! पुराने दोस्तो ! ईमानसे कहना।
बसर की[5] है तुम्हारे साथ कैसे ज़िन्दगी मैंने ?
मुनव्वर[6] कर लिया है, दाग़े-दिलसे, राहे-मंज़िलको।
कभी माँगी नहीं शम्सो-क़मरसे[7] रौशनी मैंने॥

उलझके रह गये पहले क़दमपै फ़रज़ाने[8]।
गुज़र गये हदे-दैरो-हरममें दीवाने[9]॥
जुनूँसे पूछ यह राज़े-निहाँ[10] ख़िरदसे[11] न पूछ।
जमाले-शमअ़पै[12] क्यों टूटते हैं परवाने ?

---

१. साथी, २. आँसू पूँछना, ३. मनुष्यके, ४. उड़नेकी इच्छाएँ ५. व्यतीत, ६. प्रकाशमान, ७. चाँद-सूरजसे, ८. चतुर, ९. दीवानगीने, १०. छिपा हुआ भेद, ११. अक्लसे, १२. दीपकके प्रकाशपर।

दिले-नादाँ यहाँ ख़ामोश रहना।
न हो जाये मिज़ाजे-दोस्त बरहम[1]॥

कहा फूलने "देख मेरा तबस्सुम[2]।
मेरी ज़िन्दगी किस क़दर मुख्तसर है" ?

यूँ गुलिस्ताँमें आई बादे-नसीम[3]।
हम सफ़ीरोंका[4] साथ छूट गया॥
मैंने पूछा कि ज़िन्दगी क्या है ?
हाथसे गिरके जाम टूट गया॥

तेरी तलाशकी मंज़िल अभी है दूर ऐ दोस्त !
अभी तो ख़ुद मुझे अपना निशाँ नहीं मिलता॥

तेरी यादसे हुए महव[5] हम, तेरे ज़हनसे[6] हम उतर गये।
यह भी मंज़िलें थीं कि तै हुईं यह भी मरहले थे गुज़र गये।

तुझे भुला न सकूँ, तुझको याद रख न सकूँ।
यह राहे-इश्कमें आया अजब मुक़ाम ऐ दोस्त !
न मिल सका तो, अब इसके सिवा मैं क्या समझूँ ?
कि दिलमें तेरी तमन्ना अभी है रवाम[7] ऐ दोस्त !

—सितारोंसे ज़र्रोंतक

उक्त सकलन और परिचय अगस्त १६५४ ई० में लिखा गया था। हमारी प्रार्थनापर आज़ाद साहबने १६५४ के बाद कहे हुए ताज़ा कलाम-में-से चन्द ग़ज़लें और नज़्म ५ मई १६५७ को लिख भेजनेकी कृपा की।

१. क्रुद्ध, २. मुसकान, ३. प्रातःकालीन पवन, ४. साथियोंका, ५. लीन, एकाग्र, ६. खयालसे, ७. व्यर्थ, झूटी।

स्थानाभावके कारण ग़ज़लोंके चन्द शेर और एक नज़्मके सिर्फ़ चार बन्द देकर लोभ सँवरण करना पड़ रहा है।

अगर हो आस्ताँसे रब्ते-दिल[1], तब बात बनती है।
फ़क़त रब्ते-जबीनो-आस्ताँसे[2] कुछ नहीं होता॥

नज़र फिर दुश्मनोंको ढूँढती है।
ज़फ़ाए-दोस्ताँ[3] है और मैं हूँ॥

तेरे क़रीबसे गुज़रा हूँ इस तरह कि मुझे।
ख़बर भी हो न सकी, मैं कहाँसे गुज़रा हूँ॥

तुम्हारी बर्क़े-रफ़्तारी[4] बजा[5] ऐ काफ़िले वालो!
मगर रफ़्तारे-मीरे-कारवाँ[6] कुछ और कहती है॥

सकूँ[7] मिला जो नज़रको तो दिल तड़प उट्ठा।
दिलो-नज़रको बहम[8] मिल सका कभी न क़रार॥
ख़िज़ाको सहने-चमनमें[9] गये ज़माना हुआ।
अभी फ़ज़ाए-गुलिस्ताँमें उड़ रहा है गुबार[10]॥
मुक़ामे-वाज़ कहाँ और मुक़ामे-राज़[11] कहाँ।
मुक़ामे-वाज़ है मेम्बर, मुक़ामे-राज़ है दार[12]॥

---

१. प्यारेकी चौखटसे दिली मुहब्बत, २. प्यारेकी चौखटपर माथा रगड़नेसे, ३. मित्रोंके बुरे व्यवहार, ४. बिजली जैसी चाल, ५. उचित, ६. यात्री दलके नेताकी रफ़्तार, ७. चैन, ८. आपसमें, एक साथ, ९. उद्यानके वातावरणमें, १०. धूल, ११. व्याख्यान देनेमें और वास्तविक सत्य कहनेमें अन्तर है, १२. भाषण तो मंचसे दिया जाता है, परन्तु सत्यके लिए सूलीपर चढ़ना होता है।

फ़ुग़ाँ[1] कि मिलके भी हम-तुम उसे न रोक सके।
शबे-विसाल[2] हुदूदे-सहरतक[3] आ पहुँची॥

तुझे ऐ ताइरे-शाख़े-नशेमन[4]! क्या ख़बर इसकी।
कभी सैयादको भी बाग़बाँ कहना ही पड़ता है॥
यह दुनिया है यहाँ हर काम चलता है सलीक़ेसे।
यहाँ पत्थरको भी लाले-गराँ[5] कहना ही पड़ता है॥
ब-फ़ज़्ले - मस्लहत[6] ऐसा भी होता है ज़मानेमें।
कि रहज़नको[7] अमीरे-कारवाँ[8] कहना ही पड़ता है॥
न पूछो क्या गुज़रती है, दिले-ख़ुद्दारपर[9] अक्सर।
किसी बे-महरको[10] जब महर्बाँ कहना ही पड़ता है॥

तू रह न सकी फूलमें, ऐ फूलकी ख़ुशबू!
काँटोंमें रहे और परेशाँ न हुए हम॥

---

१. हाय अफ़सोस, २. मिलन-रात्रि, ३. प्रातःकालमें परिणत होने आ रही है, ४. टहनीपर बने घोंसलेमें बैठे हुए पक्षी, ५. कीमती लाल, ६. दूरन्देशीके कारण, ७. रास्तेके लुटेरोंको, ८. यात्रियोंका नेता, ९. स्वाभिमानीके हृदयपर, १०. नाराज़ मनुष्यको।

ऐ किश्वरे हिन्दोस्ताँ !···

– २९ में से ४ –

ऐ किश्वरे हिन्दोस्ताँ[1] !···
ऐ ख़ित्तए - जन्नतनिशाँ[2] ! !
ऐ सिज्दागाहे - क़ुद्सियाँ[3] ! ! !
ऐ मबए-अनवारे - हक़[4] !
ऐ काबए - रूहानियाँ !
ऐ किब्लए - इर्फ़ानियाँ[5] !
ऊँचा रहे तेरा निशाँ,
ऐ किश्वरे हिन्दोस्ताँ !

तू है वक़ारे-इल्मो-फ़न[6]
तू एतबारे[7]-इल्मो-फ़न
सरमायेदारे इल्मो-फ़न[7]
गुलज़ारे-हस्तो-बूदमें[8]
तू है बहारे-इल्मो-फ़न
ऐ इल्मो-फ़नके पासबाँ[9]
ऊँचा रहे तेरा निशाँ
ऐ किश्वरे हिन्दोस्ताँ !

. ····· ············

१. भारत-देश, २ जन्नतके ऐश्वर्यसे परिपूर्ण, ३. फ़िरिश्तों अथवा देवताओंका उपासनास्थल, ४. सत्यकी ज्योतिके स्रोत, उद्गमस्थान, ५. ज्ञानियोंका तीर्थ, ६. ज्ञान और कलाकी प्रतिष्ठा, ७. प्रमाण, विश्वास-योग्य, ७. गुणोंका भण्डार, धनी, ८. अग्नि-नास्तिके उद्यानमें, ९. रक्षक, पहरेदार।

तू अहले-दिल[1], अहले-बसर[2]
तू नाक़िदे-ज़ौक़े-नज़र[3]
तू नुक्ताँचीं[4], तू दीदावर[5]
तू है अहिंसाका अमीं[6]
तू अम्नका पैग़ाम्बर[7]
ऐ हामिले-अम्नो-अमाँ
ऊँचा रहे तेरा निशाँ
ऐ किश्वरे-हिन्दोस्ताँ !

ऐसा तेरा इक़बाल[8] हो
जौरो-जफ़ा पामाल[9] हो
सारा जहाँ खुशहाल हो
और फिर तेरा रूए-हसीं[10]
मारे ख़ुशीके लाल हो
ऐ ख़ित्तए-राहतरसाँ[11]
ऊँचा रहे तेरा निशाँ
ऐ किश्वरे-हिन्दोस्ताँ !

१५ फरवरी १९५८ ई०]

१ सहृदय, २. दिव्य द्रष्टा, ३. सुरुचिपूर्ण दृष्टि वाला आलोचक, ४ सूक्ष्म से-सूक्ष्म बात जाननेवाला, ५. देखनेवाला, ६. अहिंसाका सन्देश-वाहक, ७. शान्तिका दूत, ८. भाग्य, ९. अत्याचार संसारसे नष्ट हों, १०. सुन्दर मुख, ११. सुख-चैनका भण्डार।

अख़्तर अंसारी

अख़्तर अंसारी १ अक्तूबर १९०९ ई० में उत्तर प्रदेशीय जिला बदायूँमें उत्पन्न हुए। आपके पिता दिल्लीमें सिविलसर्जन थे और मकानादि बनवाकर वहीं बस गये थे। अतः आपका लालन-पालन एवं शिक्षा-दीक्षा दिल्लीमें ही हुई। १९३० ई० में आपने मिशन कॉलेज दिल्लीसे इतिहासमें बी. ए. ऑनर्स किया।

आपके पिता सिविल सर्विसकी परीक्षाके लिए आपको लन्दन भेजना चाहते थे कि अकस्मात् उनका निधन होगया और अनुभव-हीन अख़्तर-के कन्धोंपर एक सम्भ्रान्त परिवारके भरण-पोषणका भार आ पड़ा। फिर भी आपने साहससे काम लिया और अनेक विघ्न-बाधाओंके होते हुए भी अध्ययनके लिए लन्दन चले गये, परन्तु हायरे दुर्भाग्य कि सफलता देवी आपसे रूठी रही और आप घरकी बची-खुची जमा-पूँजी गँवाकर भारत लौट आये।

लन्दनमें रहते हुए माँ, भाई-बहन, पत्नी-बच्चोंके अभाव-ग्रस्त चेहरे दृष्टिसे ओझल थे तो थोड़ा-बहुत दिलको चैन नसीब था। भारत आये तो पिताकी स्मृतिमें परिवारको बिलकते-सुबकते और आर्थिक चिन्ताओंसे मुर्झाये हुए देखा तो कलेजा मुँहको आने लगा। व्यापार करनेको न पास पैसा न अनुभव और नौकरी! वहाँ भी खोजने जाते वह आपसे कोसों दूर भागती। कई वर्ष इधर-उधर भटकनेके बाद मजबूरन आपने १९३४ ई० में अलीगढ़से बी. टी किया और वहींके मुस्लिम-यूनिवर्सिटी-हाईस्कूलमें मास्टर हो गये। मजबूरी और लाचारीमें हाईस्कूलकी नौकरीका सहारा भी ग़नीमत था। लेकिन आपको स्कूल-मास्टरी कभी रुचिकर न हुई। यह क़िस्मतकी सितमज़रीफ़ी नहीं तो और क्या थी कि डिप्टी कलेक्टरी और कलेक्टरीके लिए प्रयास करनेवाला व्यक्ति स्कूल-मास्टर बननेपर

मजबूर हो। एक सिविल सर्जनका सम्भ्रान्त परिवार, जिसके रहन-सहनका स्तर उच्च और खर्चीला हो। स्कूल मास्टरके अवचेतनमें किसप्रकार जीवन-यापनको बाध्य हुआ होगा? अख्तर लन्दनसे वापिस आये तो पूरे अंग्रेज बनकर। आपकी अंग्रेजियत और खर्चीले स्वभावकी एक झलक अज़ीज अहमद साहब यूँ पेश करते हैं—

"मैं पाँचवीं या छटी जमाअतमें था कि एक दिन किसीने पूरी क्लासको इत्तिला दी—'अख्तर साहब बहुत बड़े शाइर हैं।' यक़ीन जानिए हम यही समझे कि अख्तर साहब अंग्रेजी शाइरी करते हैं। और अर्सेतक हम एक दूसरेसे कहते रहे—'अख्तर साहब अंग्रेजीमें शाइरी करते हैं और उनकी नज़्में लन्दनके रिसालोंमें छपती हैं।"

"इसकी दो वजूह (वजह) थीं। पहली तो यह कि अख्तर साहब हमेशा सूटेड-बूटेड रहते थे। जूतेकी चमकती पालिशसे लेकर फ्रांसीसी तर्ज़के तराशीदा बालों तक हर चीज नख-सिखसे दुरुस्त। क्या मजाल कि जूतेपर गर्द जम जाये या बालोंकी एक-आध लट परेशान हो जाय। और फिर आम तौरपर यह मशहूर था कि 'अख्तर साहब रोज सूट तब्दील करके आते हैं। अगर पूरा सूट नहीं तो कोट पतलूनमें-से एक चीज तो जरूर, और अगर इत्तफाकसे दोनोंमें-से कोई चीज़ भी तब्दील नहीं की गई तो टाई तो यक़ीनी तौरपर वह नहीं होगी, जो वे कल बाँधकर स्कूल आये थे। फिर लिबासकी मुनासबतसे सिगरिटकी बजाए पाइप मुँहमें दबाये रहते। फिर हमलोग यह भी जानते थे कि अख्तर साहब विलायत हो आये हैं। इन वजूहकी बिनापर हमलोग अख्तर साहबको मुकम्मिल अंग्रेज तसव्वुर करते थे। यह दूसरी बात है कि अख्तर साहबको रंगकी मुनासबतसे अंग्रेजोंसे दूरका भी वास्ता नहीं। हमलोगोंका मुकम्मिल यक़ीन था कि अख्तर साहब घरके अन्दर, बैठते, खाते-पीते हत्ता कि लेटते और सोते भी मग़रबी (पश्चिमीय) अन्दाज़में होंगे बल्कि बीवी बच्चोंसे भी अंग्रेज़ोंकी तरह मिलते होंगे।'''अब मैं

नहीं अमाअतमें पहुँचा तो अख्तर साहबको क़रीब-क़रीब (समीप) से देखनेका मौक़ा मिला। जब कि अख्तर साहब अंग्रेज़ीके उस्ताद (शिक्षक) की हैसियतसे क्लासमें तशरीफ़ लाये।" ... ..

"अख्तर साहब फ़ितरतन बहुत नफ़ासत पसन्द हैं।... घरसे हमेशा कील-काँटेसे लैस होकर निकलते हैं। मंज़िलपर पहुँचकर रुमालसे चेहरे और चश्मेके शीशोंको साफ़ करना उनका सबसे पहला काम होता है। इसके बाद कंघा निकालकर बालोंमें फेरते हैं, ख्वाह बाल बिखरे हुए हों या न हों। जूतेको रगड़कर चमकाते हैं। चेहरे और जूतेको साफ़ करना उनके लिए लाज़िम-ओ-मल्ज़ूम (अविनाभावी सम्बन्ध) है। वे कहा करते हैं कि 'अगर जूते पर गर्द जमी हुई हो तो उस गर्दका अक्स सारी शख़्सियत (व्यक्तित्व) पर पड़ता हुआ मालूम होता है'। इन चीज़ोंसे फ़ारिग़ (निवृत्त) होनेके बाद पाईपमें तम्बाकू डालते हैं। तब कहीं जाकर बात-चीतका सिलसिला शुरू होता है। मट्टी और धूलसे अख़्तर साहब बुरी तरह भागते हैं। अगर सड़कपर गुज़रते हुए या बैठे हुए ख़ाक-धूल उड़कर उनके ऊपर आ जाये तो अख्तर साहब अपना चेहरा लपेट लेते हैं। अपने शाने (कन्धे) और कोटको इस तरह झाड़ना शुरू कर देते हैं, जैसे मातम कर रहे हों। वे अलीगढ़में मई और जून-को लुओंमें कमरेको चारों तरफ़से बन्द किये पसीनेमें शराबोर पड़े रहते हैं। एक एक रोज़न (छिद्र) को अच्छी तरह बन्द कर देते हैं। ताकि उनमें-से धूलके ज़र्रे न आयें[1]।"

अख़्तर साहबकी अंग्रेज़ियतकी झलक दिखाते हुए आपके ख़र्चीले स्वभावका उल्लेख करते हुए लिखते हैं—

"अख़्तर साहबके पास पाइप हमेशा ज़रूरतसे ज़ाइद रहे। लेकिन कोई इस क़द्र क़ीमती न था जो उनके शौक़की सही तौरपर तक्मील करता।

१. नक़ूश शख़्सियात न० २ अक्तूबर १९५६ पृ० ११२२-२८।

लिहाजा ७० रु० का Dunhill खरीदा। इस तरह ५० रु० का Ronson लाइटर खरीदा गया। अखतर साहब सिगरेट नहीं पीते। एक मर्तबा दिल्ली गये। पन्द्रह रुपएका सिगरेटकेस पसन्द आ गया, खरीद लाये। दरियाफ्त किया—'भई यह किसलिए?' जवाब मिला—'बस युँ हीं'। एक मर्तबा दिल्लीसे बड़ी छानबीनके बाद ४५ रु० का जूता और एक पैल्टहैट खरीदकर लाये। हर दोस्तसे फ़ख्रिया कहा—'कमज कम देहलीमें इससे अच्छा जूता नहीं था। पूरे दिन भाग-दौड़के बाद दस्तयाब हुआ।......'

"अखतर साहब जब भी कोई चीज खरीदते हैं तो सबसे आला क्वालीटीको पसन्द करते हैं। उम्दा और हसीन चीज़ खरीदना एक तरहसे उनकी Hoby है। वे जब कभी दूकान पर जाते हैं तो खामोशीके साथ दूकानकी एशिया (चीजों) का जाइजा (निरीक्षण) लेते रहते हैं। वे आमतौर पर दूकानदारसे चीजें कम तलब करते हैं, बल्कि मतलूबा एशिया (मनपसन्द चीजों) की तरफ इशारा करते जाते हैं और दूकानदार पैक करता जाता है। कीमत ठहराना उनके बसकी बात नहीं[1]।"

इस स्तरके रहन-सहनके आदी और खर्चीले अखतर साहबको स्कूल-मास्टरी क्योंकर पसन्द आती? अल्प वेतनके अतिरिक्त स्कूल-मास्टरके नाते उनको वह सम्मान भी प्राप्त न हो सका, जो उन-जैसे शाइर और लेखकके लिए जरूरी था।

"एक मर्तबा अखतर साहब अपने किसी अजीज़के यहाँ बरेली गये। एक शाम उनके मेहर्बानने किसी क्लबमें वहाँके मुअज़्ज़िज शहरियों (प्रतिष्ठित नागरिकों) से तार्रुफ़ (परिचय) कराया। उन लोगोंने अखतर साहबका ब-हैसियत शाइर और अदीब बड़े तपाकसे ख़ैरमक़दम (स्वागत सत्कार) किया। लेकिन ज्यों ही उन लोगोंको यह मालूम हुआ

---

१. नकूश शख्सियात न० २ अक्तूबर १९५६ पृ० ११२९।

कि यह एक स्कूल मास्टर हैं तो उनके सारे इश्तियाक़ (शौक़-उत्साह) पर जैसे ओस पड़ गई। एक ख़तमें स्कूलकी ज़िन्दगीके मुतअल्लिक़ अख़्तर लिखते हैं—"यह १७ साल अलीगढ़में जिस ज़िल्लत, मुसीबत और पस्तीकी हालतमें गुज़ारे हैं, उनकी याद उम्रभर दिलमें नासूर डालती रहेगी[1]।"

अख़्तर-जैसा योग्य व्यक्ति स्कूलके अहातेमें घिरकर रह जाये, यह उनके हितैषियोंको भी पसन्द न था, किन्तु करते भी क्या! अख़्तर एम० ए० होते तो किसी कॉलेजमें लेक्चररका पद मिल सकता था। अतः आपके इष्ट-मित्र आपसे एम० ए० कर लेनेका अनुरोध करते रहे, किन्तु अख़्तर कुछ ऐसे बुझ से गये कि बार-बार वायदा करनेपर भी एम० ए० की परीक्षामें न बैठ सके। लेकिन हितैषी बन्धुओंने भी पीछा न छोड़ा और १३ वर्षकी लगातार प्रेरणाके बाद १९४७ ई० में आपको एम० ए० करना ही पड़ा।

एम० ए० करनेपर मुस्लिम-यूनिवर्सिटीके उर्दू-विभागमें आप लेक्चरर नियुक्त कर दिये गये, परन्तु दुर्भाग्य अन्तरिक्षमें खड़ा हँस रहा था। भारत विभाजनके कारण वह जगह कमीमें आ गई, जिस पर आपकी नियुक्ति हुई थी। अतः आपको पुनः स्कूल वापिस जानेका आदेश मिला। इससे आपके स्वाभिमानको बहुत ठेस पहुँची। स्कूलमें उम्रभर मास्टरी करते रहना किसी तरह गवारा कर सकते थे, किन्तु उच्च पदपर पहुँचकर और अच्छा वेतन पानेके बाद फिर स्कूल वापिस जाना बहुत अपमानजनक प्रतीत हुआ। उसी आत्म-ग्लानिके क्षणोंमें अपने मित्रको पत्रमें लिखा—

"बहरहाल मैं यह तय कर चुका हूँ कि स्कूल वापिस नहीं जाऊँगा। अपने आपको काफ़ी तबाह कर चुका, अब उसमें ज़्यादाका हौसला नहीं।

---

१. नक़ूश शख़्सियात पृ० ११२३।

१७ सालसे अलीगढ़में पड़ा घिस घिस कर रहा हूँ और आजतक २१०रु० का लेक्चरर न हो सका।"[1]

१७ वर्षसे निरन्तर असफलताओं और आपदाओंमे घिरे रहनेके कारण अख़्तर साहब निराशावादी और एकान्तप्रिय हो गये हैं। मर्दानगीका तक़ाज़ा तो यह था कि वे मुसीबतों परेशानियों और नाउम्मीदियोंका मुँह चिढ़ाते हुए दिन-दूने, रात चौगुने हौसलेसे काम लेते और बदक़िस्मती-को ख़ुशक़िस्मतीका लिबास बदलनेको मजबूर कर देते। मगर अख़्तर साहब जिस आरामदेह फ़ज़ामें पलकर परवान चढ़े, वह संघर्षोंसे जूझनेके बजाय छुई-मुईकी तरह नाज़ुक था। अख़्तर साहब स्वभावतः उद्योग और पुरुषार्थसे घबराते हैं। आप 'शाद' अज़ीमाबादीके इस शेरके—

यह बज़्मे-मै[2] है यहाँ कोताहदस्तीमें[3] है महरूमी[4]
जो बढ़कर ख़ुद उठाले हाथमें मीना[5], उसीका है

क़ाइल न होकर 'आतिश'के इस मिसरेसे अधिक प्रभावित मालूम होते हैं—

क़िस्मतमें जो लिखा है वह आयेगा आपसे

उन्नतिके लिए हाथ-पाँव मारनेके बजाय घर बैठे, आये हुए कई अच्छे अवसर आपने खो दिये। रेडियो-विभागमें कुछ स्थान बढ़ाये गये और पूर्ण आशा थी कि आप-जैसे शाइर और अदीबको ज़रूर चुन लिया जायगा। लेकिन आपने प्रार्थना-पत्र भेजना भी उचित न समझा। 'अन्दलीब' शादानीने ४८० रु० की मासिक प्रोफ़ेसरीपर दावा बुलाया, मगर आप न गये। दोस्तोंके इसरारपर फ़र्माया—"कौन इस बरसों पुराने सहनका छोड़कर पत्थरोंसे सर टकराये।"

१. नक़ूश शख़्सियात न० २ पृ० ११२५।
२. मदिरालय, ३. हाथ पीछे रखनेमें, ४. वंचित रहना है, ५. सुरा-पात्र।

इस मक़्लूकमन्दीका नतीजा यह हुआ कि बग़ैर हाथ-पाँव मारे, मन चाही कामियाबियाँ तो क़दमोंमें आकर गिरी नहीं और मुसीबतें-ना-उम्मीदियाँ बग़ैर बुलाये आती रहीं। परिणाम स्वरूप आप निराशावादी और एकान्त-प्रिय हो गये। आपको उन्नतिके मार्गोंमें भी अवनतिके चिह्न दीखने लगे। हर भले काममें बुरे आसार नज़र आने लगे। अपने मित्रको लिखे पत्रसे आपकी इस मनोदशाका कुछ आभास मिलता है—

"ग़ालिबने अपने ख़तूतमें कहीं अपनी इस ख़सूसियतका ज़िक्र किया है कि 'मैंने जिससे इश्क़ किया उसको मार रखा और जिस फ़र्मारवा-की शानमें क़सीदा (प्रशंसात्मक कविता) लिखा, उसकी सल्तनतका बेड़ा ग़र्क़ हुआ।' तो भई ग़ालिबकी कोई अच्छी ख़सूसियत मुझमें भला कहाँसे होती? मगर यह एक बुरा वस्फ़ जो उनमें था, मेरे अन्दर ब-दर्जए उत्तम पाया जाता है। मुख़्तसर यह कि अव्वल दर्जेका मनहूस हूँ। जहाँ जाता हूँ, इस नहूसतका असर साथ ले जाता हूँ। आपको याद होगा कि आजसे १७ साल पहले १६३४ में जब मैं सिटी स्कूलमें टीचर होकर आया था तो यह स्कूल क्या फलता फूलता इदारा था। रुपयेकी यह फ़रावानी थी कि जब किसी तरह ख़र्च नहीं होता था तो उस्तादों (शिक्षकों) को सालमें दो-दो इन्क्रीमेंट (वेतन वृद्धि) दे दिये जाते थे। मेरे आते ही उसकी माली हालत ख़राब हो गई और वहाँ उस्तादों-को सालाना तरक़्क़ियाँ बन्द रहीं। और इसके बाद जब तक मैं रहा, वह स्कूल पनप नहीं सका और उसकी हालत गिरती ही चली गई। फिर जब मैंने खुद-ख़ुदा करके एम. ए. किया और शोबए-उर्दू (उर्दू विभाग) में लैक्चरर हो गया तो मेरे तक़र्रुर (नियुक्ति) के बाद जो १४ अगस्त १६४७ ई० को अमलमें आया। चौबीस घंटेके अन्दर-अन्दर हिंदोस्तान तक़सीम हो गया। उर्दूको इस मुल्कसे देश निकाला मिल गया। और शोबए-उर्दू दम तोड़ने लगा। गोया मैं उर्दूमें न एम. ए. करता, न हिंदोस्तानमें उर्दूका निकाला सहलाता। और साहब तकल्लुफ़ बरतरफ़' मैं यह समझता हूँ कि दूसरी बड़ी लड़ाई भी सिर्फ़ इसलिए लड़ी गई

कि १९३९ तक मेरी तनख्वाह किसी क़दर माकूल हो गई थी और सख्त ज़रूरत इस बातकी थी कि मँहगाई ज़्यादे-से-ज़्यादा हो जाये ताकि मैं ब-दस्तूर भूका बंगाली बना रहूँ। फिर शायद आप यह भी जानते हैं कि मुझे खाक-धूलसे किस क़दर वहशत होती है! आस्मानपर आँधीका पहला गुबार नज़र आता है तो मेरा चेहरा पीला पड जाता है और ग़ालिबन आपको यह भी मालूम होगा कि अलीगढ़ तेज़ीके साथ सहरा (रेगिस्तान) बनता जा रहा है। आपके सरकी कसम अगर मैं पहाड़की चोटीपर सकूनत इख्तियार करलूँ तो वहाँ भी खाक उड़ने लगे।"

यूनिवर्सिटीसे नौकरी छुटनेपर अज़ीज़अफ़्रोंको एक ख़तमें लिखा—"मैं जबसे यूनिवर्सिटीमें आया था, बहुत खुश था और बहुत मुतमइन (सन्तुष्ट) था और 'डरता हूँ आस्मानसे बिजली न गिर पड़े' के मिसदाक़ यह सोच-सोचकर लरज़ रहा था कि देखिए क्या मुसीबत नाज़िल होनेवाली है! खौफ़ भरी नज़रोंसे बारी बारी अपने सब बच्चोंको देखता था और सोचता था कि खुदा जाने इनमें-से कौन अल्लाहको प्यारा होनेवाला है! बारे उस माबूद हक़ीक़ीने मेरे बच्चोंकी जानबख़्शी की और सिर्फ़ मेरी मुलाज़मतकी जानपर बनी।"[1]

शुक्र है कि अलीगढ़में ही ट्रेनिंग कॉलेजमें स्थायी रूपसे लेक्चरर पदपर अफ़्सर साहबको नियुक्ति हो गई और आपको स्कूल वापिस आनेकी ज़हमत न उठानी पड़ी। वेतन भी २६० रु० नियत हो गया। अभिलाषानुसार वेतन और पद मिल गया, फिर भी आपको मनोवृत्तिमें अन्तर नहीं पड़ा। वही भविष्यकी आशंकाओंमें भयभीत और हर घड़ी निराशाओंमें डूबे नज़र आते हैं। लिखते हैं—"हाँ एक बात लिखनी भूल गया। बड़ी तेज़ीके साथ ज़िन्दगीकी राह तै कर रहा हूँ। मेरा मकान यूनिवर्सिटीकी आखिरी हद है। मेरे मकानसे कोई सौ क़दम आगे ट्रेनिंग कॉलेज है। जहाँ

१. नक़ूश ख़ुतूत नं० २ पृ० ११२८-२९।

तक मैं पहुँच चुका हूँ। ट्रेनिंग कॉलेजसे १०० क़दम आगे क़ब्रिस्तान है। वह मेरी आख़िरी मंजिल होगी, जैसा कि हर इंसानकी हुआ करती है। जिन्दगीके मराहल (रास्ते-दर्जे) तै करनेका मतलब यह भी था कि अब मेरी उम्र ४१ सालकी होगी। बाल सफ़ेद हो गये, आँखोंकी रोशनी कम हो गई और चेहरेसे बुढ़ापा टपकता है। ज़िन्दगी बड़ी ज़ालिम साबित हुई[1]।''

अख़्तर साहबकी जीवनी दुःख-दर्दसे ओत-प्रोत है। फिर भी उनके पत्रोंमें कितनी व्यंग्यपूर्ण वास्तविकताका उल्लेख है। उनकी मनोव्यथाकी झलक उन्हींके कतोंमें देखिए—

यह रूदाद[2] नहीं, लुत्फ़े - ज़िन्दगानीकी
यह दास्तान नहीं, ऐशो - कामरानीकी[3]
मेरी तड़पती हुई रूहकी[4] फ़ुग़ाँ है[5] यह
पुकार है यह मेरी दु:खभरी जवानीकी

नग़मोंमें[6] कभी था काम हमें, अब आहोंमें जीको खोते हैं
था शग़्ल[7] फ़क़त हँसना ही कभी, अब आठों पहर खूँ रोते हैं
अल्लाह यह कैसी आफ़त है? क्या ज़ुल्म है यह? क्या क़हर[8] है यह?
होना है उन्हींके दरपै गम जो नाज़ोंके पाले होते हैं

१. मकतूब शाहिजहाँ नं० २ ता० १९३१। २. जीवन-कथा, ३. सुख-सम्पन्नता, ४. आत्माकी, ५. आहें, ६. संगीतोंमें, ७. काम, ८. अत्याचार।

जिनको है ऐशे - दिल मयस्सर वोह
हाय, क्या खिलखिलाके हँसते हैं
और हम बेनसीब ऐ 'अख़्तर' !
मुसकरानेको भी तरसते है

आप शाइर होनेके अतिरिक्त उपन्यास-लेखक और आलोचक भी है। आपकी कहानियोंके तीन संकलन और आलोचनात्मक तीन ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। शाइरीके निम्न ग्रन्थ हमारे सामने हैं—

१. आबगीने—प्रकाशक मकतबा उर्दू-लाहोर, प्रकाशन तिथि अंकित नहीं। पृ० १२६। इसमें २३७ कतआतका सकलन हुआ है।

२. ख़न्दए-सहर—प्रकाशक, मतबूअए-जमाल प्रेस दिल्ली। १९४४ में प्रकाशित ११८ पृष्ठमें १९२८ ई० से १९३७ तक कही गई नज़्मोंका सकलन है।

३ रूहे-असर—प्रकाशक कुतुबख़ाना शनाउल्ला ख़ाँ लाहोर। १९४४ ई० में प्रकाशित, पृ० ११०। इसमें गीतों, ग़ज़लों, कतों और नज़्मोंका संकलन है।

४. ख़ूनाब—प्रकाशक, मकतबा उर्दू लाहोर। १९४३ मे प्रकाशित पृ० १११ में ६२ ग़ज़लें और ५० फुटकर अशआर हैं।

इन्हीं संकलनोंसे आपका कलाम चुनकर दिया जा रहा है। पहले क़तोंकी झलक देखिए—

बरसात

महीन फुआरके क़तरे हैं बर्फ़के रेज़े[1]
भरी हुई हैं हवाओंमें ख़ुनकियाँ[2] यकसर
फ़िज़ा है भीगी हुई और जल रहा हूँ मैं
खुदाकी मार सुलगती हुई जवानी पर !

तासीरे-अव्वली

किसी ख़यालमें मदहोश जा रहा था मैं
अँधेरी रात थी, तारीकियोंकी[3] बारिश थी
निकल गई कोई दोशीज़ा दिलको छूती हुई
यह मेरे नाज़े-जवानीकी[4] पहली लग़्ज़िश[5] थी

आरज़ू[6]

दिलको बर्बाद किये जाती है
ग़म बदस्तूर दिये जाती है
मर चुकीं सारी उम्मीदें 'अख़्तर'
आरज़ू है कि जिये जाती है

१. कण, २. ठंडक, ३. अँधेरोंकी, ४. मुँहज़ोर, ५. यौवन-गर्वकी, ६. कामना, भूख।

ग़म

ग़मे-माज़ी[1], ग़मे हिरमाँ[2], ग़मे-दिल और ग़मे-दुनिया
यही तुग़यानीए-ग़म[3] ज़िन्दगी मालूम होती है
मेरी हस्ती पै ग़म इस तरह छाया है कि अब 'अख्तर'!
ख़ुशीकी आर्ज़ू दीवानगी मालूम होती है

पैकरे-हुस्न

बातें करनेमें फूल झड़ते हैं
बर्क़[4] गिरती है, मुसकरानेमें
नज़रें, जैसे फराख़ दिलें[5] साक़ी
खुम लुँढ़ाएँ[6] शराब ख़ानेमें

तसव्वुर

एक सब्र-आज़मा जुदाई है
मिलने-जुलनेकी बन्द है राहें
मैंने उस माहरूकी[6] गर्दनमें
डाल दी हैं ख़यालकी बाहें

---

१. भूतकालीन दुःख, २. निराशाका खेद, ३. दुखोंकी बाढ़, ४. बिजली, ५. उदार हृदय, ६. मदिराके घड़े ढुरावे, ६. चन्द्रमुखीकी।

ग़ैरते-अश्क

इन आँसुओंको टपकने दिया न था मैंने
कि ख़ाकमें न मिलें मेरी आँखके तारे
मैं इनको ज़ब्त न करता अगर ख़बर होती
पहुँचके क़ल्बमें[1] बन जायेंगे यह अंगारे

हिन्दुस्तानकी रातें

किस क़दर आन-बानकी रातें!
इक जुदागाना शानकी रातें!
तीरहो-तार[2] और पुर-इसरार[3]
आह! हिंदुस्तानकी रातें!

तसव्वुर

यह तसव्वुरकी[4] लज़्ज़तें अल्लाह!
उसकी गर्दन है और मेरी बाहें
दिल भी महवे-नियाज़[5] है इस वक़्त
रूह[6] भी झुक गई है, सिजदेमें[7]

---

१. दिलमें, २. अँधेरी घनेरी, ३. भेदपूर्ण, ४. ध्यान, चिन्तनकी
५. प्रार्थनामें लीन, ६. आत्मा, ७. प्रणाम करनेमें।

शमए-आर्ज़ू

आह 'अख़्तर'! ग़मे-मुहब्बतमें
एक ऐसा भी वक़्त आता है.
यासकी[1] आँधियोंमें जब इन्सान
आर्ज़ूका[2] दिया जलाता है

महरूमी[3]

जिनको है ऐशे-दिल[3] मयस्सर[4], वोह
हाय क्या खिलखिलाके हँसते हैं
और हम बे-नसीब ऐ 'अख़्तर'!
मुसकरानेको भी तरसते हैं

शेरगोई

ख़ूँ भरे जाम उँडेलता हूँ मैं
टीस और दर्द झेलता हूँ मैं
तुम समझते हो शेर कहता हूँ
अपने ज़ख़्मोंसे खेलता हूँ मैं

१ निराशाकी, २. आशाआकांक्षा, ३. भोग-विलास, ४. प्राप्त।

मुहब्बत

मुहब्बत है इक ख़ुशनुमा शोख़ काँटा
जो चुभता है आँखोंके पर्दोंमें पहले
वह फिर बैठ जाता है दिलकी रगोंमें
ख़ालिश[1] अव्वल और बादमें दर्द बनके

लुत्फ़े-माहताब[2]

हर तरफ़ एक बे-हिजाबी[3] है,
बे - नक़ाबी ही बे - नक़ाबी है,
तुम भी आ जाओ चाँदनी बनकर
आजकी रात माहताबी[4] है,

गुज़िश्ता शब[5]

हवा थी ठण्डी-ठण्डी चाँदनी थी और दरिया था
कहीं नज़दीक ही जंगलमें कोई गीत गाता था
फ़ज़ामें[6] रस भरे नग़मोंकी[7] हल्की-हल्की बारिश थी
मेरे दामनमें छम-छम आँसुओंका मेंह बरसता था

१. चुभन, २. चाँदका आनन्द, ३. बेपर्दगी, ४. चाँदनी, ५. गत-रात्रि, ६. वातावरणमें, बहारमें, ७. संगीतकी।

निगाहे-मुहब्बत

रुखे - रंगी[1] पै पड़गईं नज़रें
और नज़रोंसे लड़गईं नज़रें
मिलके पलटीं तो यह हुआ मालूम
उम्र भरको उजड़ गईं नज़रें

पैकरे-लतीफ़

इस लताफ़तको[3] पा नहीं सकता
चाँदनीका जमाले - पाकीज़ा[4]
तेरा पैकर[5] लतीफ़ है ऐसा
जैसे कोई ख़याल पाकीज़ा[6]

अफ़सुर्दा चाँदनी

मौतकी - सी पुरसँकूँ वीरानियाँ
अर्शसे ता - फ़र्श[10] है छाई हुई
चाँदनी फैली हुई है हर तरफ़
रातकी मैय्यत[11] है कफ़नाई हुई

---

१ रंगीन कपोलोंपर, २. सुरुचिपूर्ण परिधान, ३. सौन्दर्य्यको, नजाकतो लिबासको, ४. पवित्र रूप, ५. लिबास, परिधान, ६. सुन्दर, पवित्र, सुरुचिपूर्ण, ७. पवित्र, ८. कुम्हलायी, मुर्झायी, ९. नीरव, सन्न, १० आकाशसे पृथ्वी तक, ११. रात्रिरूपी अर्थी ।

मुब्तलाए-मुहब्बत[1]

तू जो रातोंको उठके रोता है
आह ! क्यों अपनी जान खोता है ?
"हम तुम्हें चाहते हैं, तुम हमको"
बस फ़सानों[2] ही में यह होता है

मुसकराहट और हँसी

मुसकराई वह जब तो मैं समझा
किसी बरबतसे[3] नग़्मा[4] फूट पड़ा
हँस पड़ी वह तो यह हुआ मालूम
दस्ते-साक़ीसे[5] जाम[6] छूट पड़ा

धूप और मेंह

हल्की-हल्की फुआरके दौरानमें
दफ़अतन[7] सूरज जो बेपर्दा हुआ
मैंने यह जाना कि वहशतमें[8] कोई
रोते-रोते खिल-खिलाकर हँस पड़ा

---

१. प्रेम-बन्दी, २. कथा-कहानियोंमें, ३. वाद्यसे, ४. संगीत, ५. मधुबालाके हाथसे, ६. मदिरा-पात्र, ७. एकाएक, ८. पागलपनमें,

फितरत[1]

यहाँसे दूर जंगलमें रहा करती है इक देवी
वह ग़मदीदा[2] दिलोंको ग़मके बदले ऐश देती है
मैं जब रोता हुआ जाता हूँ उसकी बज़्मे-इशरतमें[3]
तो बढ़कर रेशमी आँचलसे आँसू पूँछ लेती है

एक शाम

जा रहा था मैं सर झुकाये हुए
गुज़री इक माहरू[4] बराबरसे
भरके अपनी नज़रमें कुछ किरनें
उसने सीनेमें डाल दीं मेरे

ग़मनसीबकी[5] सुबह

यह नसीमे-सहर[6] है 'अख्तर'!
यह फ़ज़ा[7] भर रही है सर्द आहें?
और उफ़क़पर[8] यह आफ़ताब[9] है, या
जख्म है आस्माँ के सीनेमें?

---

१. कुदरत, प्रकृति, २. दुखी, ३. भोग-विलासकी महफ़िलमें, ४. चन्द्रमुखी, ५. दुःखीकी सुबह, ६. प्रातःकालीन वायु, ७. बहार, ८ आकाशपर, ९. सूर्य ।

निगाह

जिस तरह इक नसीमकी[1] झोंका
डाल देता है झीलमें हलचल
यूँ ही तेरी निगाहने इस वक़्त
कर दिया मेरी रूहको[2] बेकल

ख़लिश[3]

क्या कहूँ क्या है दिलकी हालत आज
बस यह महसूस[4] कर रहा हूँ मैं
नन्हे - नन्हे नुकीले काँटोंका
एक गुच्छा निगल गया हूँ मैं

बरसात

फ़ज़ा[5] उमड़ी हुई है इक छलकते जामकी[6] मानिन्द
हवा मख़मूर[7] है बादल ग़रीक़े - रंगो मस्ती[8] हैं
मेरा सरशार[9] दिल मुझसे यह कहता है कि ऐ 'अख़्तर' !
यह बूँदें पड रही हैं या तमन्नाएँ बरसती हैं ?

---

१. वायुका, २. प्राणोंको, ३. चुभन, ४. अनुभव, ५. बहार, ६. मदिरालयकी, ७. नशीली, ८. मस्ती और राग-रंगमें डूबे हुए, ९. नशेमें चूर, आनंदित ।

जफ़ाए-आर्ज़ू[1]

वह काँटा कि थी जिससे चाहत मुराद
मेरे दिलमें पाई जगह, रह गया
किया दिलको वीराँ लहू चूसकर
मगर खुद चुभा-का-चुभा रह गया

फ़नूने-लतीफ़ा[2]

कोई रंगोंमें, कोई शेरमें, कोई सुरमें
दर्द अपना कोई नालोंमें कहा करता है
एक नासूर है फ़ीअस्ल[3] गमे-हस्ती[4] भी
और नासूर बहर नोअ[5] बहा करता है

जन्नते-अर्ज़ी

यह सब्ज़ा[6], यह तेरा नग़माँ[7], यह महताब[8]
यह कलियोंकी चटक, यह रौनक़े-गुल
अगर ऐसेमें जन्नत भी अता[9] हो
तो ठुकरा दूँ उसे मैं बे-ताम्मुल[10]

१. इच्छाओंके अत्याचार, २. कोमलकला, ३. वास्तवमें, ४. जीवन-दुःख, ५ हर समय, ६. हरियाली, ७ संगीत, ८. चाँदनी, ९. प्रदान, १०. तुरन्त ।

शगुफ़्तगी[1]

ग़मसे-पुर[2] है अगरचे क़ल्बे-हज़ीं[3]
कभी होता नहीं मैं चीं-ब-जबीं[4]
इस तरह हँसके बात करता हूँ
जैसे ग़मको मैं जानता ही नहीं

अन्दोहे-नाकामी[5]

तमाम उम्र मैं आँसू बहाऊँगा 'अख़्तर'!
तमाम उम्र यह सदमा रहेगा मेरे साथ
कि अपने आपको मैंने फ़रोख़्त[6] कर डाला
किसीको पानेकी नाकाम आर्ज़ूके हाथ

इख़फाए-हक़ीक़त[7]

जो पूछता है कोई "सुर्ख़ क्यों है आज आँखें ?"
तो आँख मलके मैं कहता हूँ "रात सो न सका"
हज़ार चाहूँ मगर यह न कह सकूँगा कभी
"कि रात रोनेकी ख़्वाहिश थी और रो न सका"

---

१. खिलखिलाहट, प्रसन्नता, २. भरपूर, ३. दुःखी दिल, ४. माथेपर बल नहीं डालता, ५. असफलताका दुःख, ६. बिक्री, ७. वास्तविकताका छिपाना, सत्य-गोपन।

पहली नजर

हाय क्या क़हर[1] थी वोह पहली नज़र
जिसमें महसूसे[2] यह हुआ 'अख़्तर' !
मुझ पै गोया किसीने फेंक दी है
एक मुठ्ठीमें बिजलियाँ भर कर

दाग़े-मुहब्बत

मुझसे इक दिन कहा मुहब्बतने-
"मेरे प्यारे ! इधर तो आओ तुम
मैं तुम्हें एक दाग देती हूँ
ताकि मुझको न भूल जाओ तुम"

इजहारे-मुहब्बत

मैंने हसरतसे कहा "तुमसे मुहब्बत है मुझे"
तुमने शर्माते हुए मुझको जवाब इसका दिया
आह लेकिन दिले-नाशाद (यह ग़ारत हो जाये)
इस क़दर ज़ोरसे धड़का कि मैं कुछ सुन न सका

१. आफत, २. अनुभूत।

ग़मे-बेकराँ[1]

ग़मज़दोंका कोई ख़ुदा भी है ?
कोई यह ज़ुल्म देखता भी है ?
अब यह ग़म है कि मिट गया ग़मे-दिल
आख़िर इस ग़मकी इन्तहा[2] भी है ?

याद

दिल अभी तक है, आज़ू-आबाद[3]
कम नहीं होती लज़्ज़ते-फ़रियाद
मुझको इस हाफ़िज़ेने[4] मारा आह
भूलती ही नहीं किसीकी याद

महरूमियाँ[5]

उफ़रे महरूमियोंकी तुगयानी[6]
नदी ख्वाहिशकी[7] चढ़ती जाती है
ग़मके जरआत[8] मिलते हैं ज्यूँ-ज्यूँ
ऐशकी[9] प्यास बढ़ती जाती है

१. दुःख-समुद्र, २. अन्त, ३. आशापूर्ण, अभिलाषाओंसे परिपूर्ण, ४. स्मरणशक्तिने, ५. वंचितपना, ६. बाढ़, ७. इच्छाओंको, ८ कण, ९. सुखोंकी।

ख़्वाबे-नाज[1]

एक तसवीर खींच दी गोया
कैफ़े - सहबाए - अरग़वानीकी[2]
क्यों न मस्ती छलक पड़े रुख़से[3]
नींद और नींद भी जवानीकी !

आतिशे-नग़्मा[4]

नग़्मा है आग, जानता हूँ मैं
लेकिन अल्लाह ! बात यह क्या है ?
आग तो मुस्तहव[5] है, बरबतमें[6]
और धुआँ मेरे दिलसे उठता है

सईए-रायगाँ[7]

अपने दिलके बाग़से चुन-चुनके फूल
उम्र भर इक हारमें गूँथा किया
किसको पहनाऊँगा यह सोचा नहीं
आह ! ऐ 'अख़्तर' ! यह मैंने क्या किया ?

—आबगीनेसे

१. सुन्दरीका शयन, २. अंगूरी मदिरासे होनेवाली मस्तीकी, ३. कपोलोंसे, ४. संगीत-ज्वाला, ५. छिपी हुई, ६. वाद्यमें, ७. व्यर्थ प्रयास ।

चन्द नज़्में

फितरत

फ़साने कहती हैं रातें सियाह-बख़्तीके[1]
मगर सितारे तेरे मुसकराये जाते हैं
बहुत सक़ीम हैं गो मंज़रे-हयात[2], मगर
हसीं नज़ारे तेरे मुसकराये जाते हैं

है ज़िन्दगी लबे-इंसानियत पै एक कराह
यह ला-ज़वाल[3] तबस्सुम तेरा, ख़ुदाकी पनाह

शबाब

सनम-तराशकी[4] ज़ौक़े-जमाले - आराई[5]
ख़याले - शाइरे - रंगीं नवाकी रअनाई[6]
शराबे-नोशके[7] महके हुए नशेकी बहार
मुग़न्निए-तरब अफज़ाके साज़की[8] झंकार
फ़साना-गोकी[9] हिकायातका लतीफ़ बहाव[10]
अदीबे-सहरे-बयॉकी इबारतोंका बनाव[11]

---

१. दुर्भाग्यके, २. जीवनका दृश्य रुग्ण, ३. स्थाई, ४. माशूक़ बनानेवालेका, ५. सुरुचिपूर्ण निर्माणका शौक़, ६. शाइरकी रंगीन-सौन्दर्य शाइरीका भाव, ७. मद्यपके, ८. वाद्यकी आनन्दित झंकार, ९. उपन्यास-लेखककी, १०. शैलीका कोमल प्रवाह, ११. मंत्र-मुग्ध-कर देनेवाले साहित्यिकके वाक्योंका निर्माण।

तसव्वुराते-मुसव्विरकी पैकर अफ़रोज़ी[1]
अदा-फरोशिए-रक़्क़ासकी जिगर दोज़ी[2]

अब इतनी चीज़ें मिलाई गईं शबाब[3] बना
शबाब काहेको, इक दिल फ़रेब-ख़्वाब[4] बना

तुम और हम

ऐशे - दुनिया[5] जिसे कहते हैं, फ़िदा[6] है तुमपर
हम दिल अपना ग़मे-दौराँको[7] दिये बैठे हैं
समे-हस्तीकी[8] तुम इक मौजे-सकूँ परवर[9] हो
दिलमें हम हश्रके तूफ़ान लिये बैठे हैं
फूल झड़ते हैं, दमे-नुत्क़[10] तुम्हारे मुँहसे
तल्ख़ गुफ्तार[11] हैं हम होंट सिये बैठे हैं
बादए-नाबसे[12] सरशार[13] हो, शादाब[14] हो तुम
ग़म सलामत रहे, हम ज़हर पिये बैठे हैं
उम्र भर औरोंको बर्बाद किया है तुमने
और हम ख़ुदको ही बर्बाद किये बैठे हैं

---

१. चित्रकारके चिन्तनकी तूलिकाका कमाल, २. हाव भाव बेचनेवाली नृत्यांगनाका श्रम, ३. यौवन, ४. दिलको मोहित करनेवाला, धोखा देनेवाला स्वप्न, ५. संसारका सुख, ६. न्योछावर, ७. दुनियाके दुःखोंको, ८. जीवन-नदीकी, ९. चैनकी लहर, १०. जबान हिलते ही, ११. कटुभाषी, १२. मदिरासे, १३. मस्त, १४. प्रसन्न।

पैदाइशे-शेर

किस तरह होते हैं पैदा शेर - तर ?

अहले-दुनिया जिसको कहते हैं शबाब[1]
वह हक़ीक़तमें[2] है इक नाज़ुक रुबाब[3]
हुस्नकी तीखी अदा मिज़राब[4] है
जिसके छू जानेसे यह बेताब है
हुस्न दिखलाता है जब अपनी झलक
गाने लगती है जवानी यक-ब-यक

इस तरह होते हैं पैदा शेर - तर

—ख़न्दए-सहरसे

चाँदनी रातका एक मंज़र

देख अगर है चश्मे-बीना[5], देख ऐ दुनियाए-दूँ !
यह शबे-महका नज़्ज़ारा[6], देख ऐ दुनियाए-दूँ !

ढेर कूड़ेका है यह, यानी ग़िलाज़तका जहाँ
गन्दे पानी और कीचड़की अफ़ूनतका[7] जहाँ
इसके रग-रगमें भरी है किस बलाकी गन्दगी
सड़ती लाशोंमें न होगी इस बलाकी गन्दगी

---

१. यौवन जवानी, २. वास्तवमें, ३. कोमल वाद्य यत्र, ४. सितार बजानेका छल्ला, ५. दिव्य दृष्टि, ६. चाँदनीका दृश्य, ७. सडाइका ।

गजगजाते, रेंगते, नापाक कीड़े बे-शुमार
दूरसे भी देखना जिनका तबीयतपर है बार[1]
इस ग़िलाज़तकी[2] बताये कोई क्या तफ़सीले-हाल[3]
मारे बदबूके गुजरना भी इधरसे है मुहाल[4]
यह वह शै है, ध्यानसे भी जिसके उबकाई-सी आय
ख़ुल्दमें[5] भी सोचनेसे इसके उबकाई-सी आय
ढेर कूड़ेका है, यह यानी ग़िलाज़तका जहाँ
गंदे पानी और कीचड़की अफ़ूनतका जहाँ

इसको अपने नूरमें[6] नहला दिया है चाँदने
इस पै हुस्ने-सीमयाँ[7] बरसा दिया है चाँदने
हाथ किरनोंको बढ़ाकर ले लिया है गोदमें
बे-तकल्लुफ़ पास आकर ले लिया है गोदमें

देख, अगर है चश्मे-बीना देख ऐ दुनियाए दूँ!
यह शबे-महका नज़ारा देख ऐ दुनियाए दूँ!

---

१. बोझ, भार, २. गन्दगीकी, ३. विवरण, ४. कठिन, ५. जन्नतमें, ६ प्रकाशमें, ७ धवल सौन्दर्य।

गजलोंके चन्द शेर

अब तो रिन्द ! एक जहाँ ऐसा बना लें जिसमें
हरम-ओ-दैर[1] न हो, सब्हो-जुन्नार[2] न हो
हाय वह फ़िक्रो-तसव्वुरकी गुलामी 'अख़्तर' !
जिस गुलामीके लिए तौक़ भी दरकार न हो

रूहे-असरसे

क्या याद करके इशरते-रफ़्ताको[3] रोइए ।
इक लहर थी कि नाचती-गाती निकल गई ॥

तारोंको देखना और हर लहज़ा आहें भरना ।
कटती हैं मेरी रातें यूँ हौज़के किनारे ॥

अब कोई दममें ग़र्क़ हुआ चाहता हूँ मैं ।
जो मौजे-आबपर हो रवाँ[4], वोह दिया हूँ मैं ॥
मैंने भी इक बनाई है दुनिया यहाँसे दूर ।
ऐसा भी इक जहान है जिसका खुदा हूँ मैं ॥

यह शाइरी नहीं है, तमन्नाकी क़ब्रपर—
तामीर एक ताजमहल कर रहा हूँ मैं ॥
जो ज़िन्दगी थी अस्लमें 'अख़्तर' वोह कट गई ।
जीनेकी शर्म रखनेको अब जी रहा हूँ मैं ॥

---

१. मस्जिद-मन्दिर, २. माला-जनेऊ, ३. बीते हुए सुखके दिनोंको,
४. पानीकी लहरोंपर बहता हुआ ।

पस्त[1] कहता नहीं मैं पस्तीको[2] ।
अपनी फ़ितरत[3] बुलन्द[4] रखता हूँ ॥
चश्मे-बातिनसे[5] देखता हूँ मैं ।
चश्मे-ज़ाहिरको बन्द रखता हूँ ॥
कामयाबी मुहाल[6] है 'अख़्तर' !
ज़ौक़[7] इतना बुलन्द रखता हूँ ॥

आलम यह है शबाबमें जोशे-शबाबका[9] ।
गोया छलक उठा है पियाला शराबका ॥
अल्लाह, यह शगुफ़्तगीए-हुस्नकी[10] बहार ।
गोया चमनमें फूल खिला है गुलाबका ॥

रश्क[11] करते हैं जो 'अख़्तर'पै वोह क्या जानें आह !
रोज़ो-शब[12] अपने वोह किस तरह बसर करता है ॥

साफ़ ज़ाहिर है निगाहोंसे कि हम मरते हैं ।
मुँहसे कहते हुए यह बात मगर डरते हैं ॥
आम्मोंसे कभी देखी न गई अपनी ख़ुशी ।
अब यह हालत है कि हम हँसते हुए डरते हैं ॥

'अख़्तर' मज़ाक़े-दर्दका मारा हुआ हूँ मैं ।
खाते हैं अहले-दर्द मेरे नामकी क़सम ॥

१. बुरा, २. गिरी हुई हालतको, ३. प्रकृति, आदत, ४. उच्च, ५. अन्तरंग दृष्टिसे, ६. कठिन, असम्भव, ७. सुरुचि, ८. हाल, ९. यौवनके जोशका, १०. सौन्दर्यके खिलनेकी, ११. ईर्ष्या, १२. दिन-रात ।

मैं हँसता हूँ मगर ऐ दोस्त ! अक्सर हँसनेवाले भी—
छुपाये होते हैं दाग़ और नासूर अपने सीनोंमें ॥
मैं उनमें हूँ जो होकर आस्ताने - दोस्तसे महरूम[1]
लिये फिरते हैं सजदोंकी[2] तड़प अपनी जबीनोंमें[3] ॥

ज़िन्दगीभरकी अज़ीयतें[4] हैं यह जीना या रब !
एक-दो दिनकी मुसीबत हो तो कोई सहले ॥

यूँ तो जिये सारी उम्र लेकिन—
जीनेकी तरह न जी सके हम ॥

हसीन यादोंकी शमएँ मुझे जलाने दो ।
मज़ार हैं मेरे सीनेमें आर्ज़ूओंके ॥

अगर अश्कोंसे भी कोई न समझे मुद्दआ इनका ।
तो हमसे आगे हैं मजबूर मेरी बेज़बाँ आँखें ॥

वोह कैफ़ीयतें[5] और तौबा कि वहशियोंकी[6] तरह ।
दिले - सितमज़दों[7] सीनेमें सर पटकना था ॥

शबाब[8] नाम है उस जाँनवाज़ लम्हेका[9] ।
जब आदमीको यह महसूस हो "जवाँ हूँ मैं" ॥

१. प्यारेके द्वारसे वंचित, २. मत्था टेकनेकी, ३. मस्तकोंमें, ४. तकलीफ़ें, ५. आराम, ६. हालत, ७. पागलोंकी, ८. अत्याचार पीड़ित हृदय, ९. यौवन, १०. प्राण प्रेरक पलका ।

पस्त[1] कहता नहीं मैं पस्तीको[2]।
अपनी फ़ितरतें[3] बुलन्दें[4] रखता हूँ ॥
चश्मे-बातिनसे[5] देखता हूँ मैं।
चश्मे-ज़ाहिरको बन्द रखता हूँ ॥
कामयाबी मुहाल[6] है 'अख़्तर'!
ज़ौक़[7] इतना बुलन्द रखता हूँ ॥

आलम यह है शबाबमें जोशे-शबाबका[8]।
गोया छलक उठा है पियाला शराबका ॥
अल्लाह, यह शगुफ़्तगीए-हुस्नकी[10] बहार।
गोया चमनमें फूल खिला है गुलाबका ॥

रश्क[11] करते हैं जो 'अख़्तर'पै वोह क्या जानें आह!
रोज़ो-शब[12] अपने वोह किस तरह बसर करता है ॥

साफ़ ज़ाहिर है निगाहोंमें कि हम मरते हैं।
मुँहसे कहते हुए यह बात मगर डरते हैं ॥
आम्सोंसे कभी देखी न गई अपनी ख़ुशी।
अब यह हालत है कि हम हँसने हुए डरते हैं ॥

'अख़्तर' मज़ाक़े-दर्दका मारा हुआ हूँ मैं।
खाते हैं अहले-दर्द मेरे नामकी क़सम ॥

१. बुरा, २. गिरी हुई हालतको, ३. प्रकृति, आदत, ४. उच्च, ५. अन्तरंग दृष्टिसे, ६. कठिन, असम्भव, ७. सुरुचि, ८. हाल, ९. यौवनके जोशका, १०. सौन्दर्यके खिलनेकी, ११. ईर्ष्या, १२. दिन-रात।

समझता हूँ मैं सब कुछ सिर्फ़ समझाना नहीं आता।
तड़पता हूँ मगर औरोंको तड़पाना नहीं आता॥

लबरेज[1] होके दिलका साग़र छलक उठा है।
शायद इसी सबबसे बहती है मेरी आँखें॥

जहाँके गुलकदेसे[2] ऐ क़ज़ा मुझे ले चल।
मेरा वजूद[3] यहाँ ख़ार-सा[4] खटकता है॥

मैं वोह महरूमे-शादमानी[5] हूँ।
जिसे बरसों हँसी नहीं आती॥

मज़ाके-आर्ज़ूकी आफ़तें दिन-रात सहता हूँ।
मुझे 'अख़्तर' तआज्जुब है मैं ज़िन्दा कैसे रहता हूँ?

मुब्तलाए-दर्द[6] होनेकी यह लज़्ज़त देखिए।
ज़िम्मए-ग़म हो किसीका दिल मेरा धक-धक करे॥

बुझा सकोगे तुम 'अख़्तर' न आँसुओंसे इसे।
यह कोई आग नहीं जज़्बए-मुहब्बत[7] है॥

मुझे ख़ुद भी ख़बर नहीं 'अख़्तर'!
जी रहा हूँ कि मर रहा हूँ मैं॥

१. भरकर, २. चमनसे, ३. अस्तित्व, ४. काँटे-सा, ५. खुशीसे रहित, ६. दर्दमें घिरे, ७. प्रेम-भाव।

क्या हमसे बहस कैसे थे, जो दिन गुज़र गये।
अच्छे थे या बुरे हमें बरबाद कर गये॥
'अकबर' यह ग़मके दिन भी गुज़र जायेंगे यूँ ही।
जैसे यह राहतोंके[1] ज़माने गुज़र गये॥

ग़मसे नालाँ हूँ, ऐशसे बेज़ार।
हाय क्या हो गया तबीयतको?

जिसमें धड़का लगा रहे ग़मका।
क्या करूँ लेके ऐसी राहतको[2]॥

मुसीबत है, अज़ीयत[3] है, हुजूमे-यासो-हसरत[4] है।
जवानी और इतनी दुखभरी, कैसी क़यामत है॥

मेरे धड़कते हुए दिलपै हाथ रख दे कोई।
कि आज थोड़ी-सी तस्कीन[5] चाहता हूँ मैं॥

बेमुरादी[6] शराब पीता हूँ।
ग़मज़दोंके सहारे जीता हूँ॥
कोई मस्तोंके मन्द सपने आह।
याद करके उन्हींको जीता हूँ॥
शायद एक दिन उम्मीद बर आये[7]।
हाय किस आरामसे जीता हूँ?

१. सुख-चैनके, २. सुख-चैनको, ३. दौर्मनस्य, ४. इच्छाओं और निराशाओंकी भीड़, ५. शान्ति, चैन, ६. [illegible], ७. [illegible]।

अपने एक - एक साँसमें मैंने ।
उम्रभरका अज़ाब[1] देखा है ॥
ज़िन्दगीकी हरेक करवटमें ।
इक नया इन्क़िलाब देखा है ॥

किसीके हुस्ने - सीमींका[2] यह शायद इक भिखारी है ।
ज़मींपर चाँदने फैला दिया है अपने दामाँको ॥

ग़मके सदमे उठाये हैं बरसों ।
जब मसर्रतकी[3] क़द्र जानी है ॥

मेरे इरादे निहायत बुलन्द[4] थे, यानी—
कभी मैं अपने इरादोंमें कामयाब न था ॥

ज़ुहद[5] भी अस्लमें है ख़ुदग़रज़ी ।
मैं करूँ यह गुनाह नामुमकिन ॥

उजड़े दिलमें उमीदका आलम ।
जैसे सहरामें[6] जल रहा हो दिया ॥
नौजवानी थी ज़िन्दगी दरअस्ल ।
यूँ मैं जीनेको सारी उम्र जिया ॥

मुहब्बतकी सोज़िशसे[7] ख़ाली है सीना ।
यह जीना भी है कोई जीनेमें जीना ॥

१. दुःख, कष्ट, २. धवल रूपका, ३. ख़ुशीकी, ४. उच्च, ५. उपासना, ६. जंगलमें, ७. आगसे ।

उमंग अपने दिलमें है जैसे चमनमें ।
खड़ी मुसकराती हो कोई हसीना[1] ॥
यह शबनम[2] है 'अख्तर' कि फूले-हयामें[3] ।
झलकता है गुलकी जबींपर[4] पसीना ॥

शबेतार[5] ! तेरी खमोशीके फुसूँ[6],
चला आमद-आमद[7] है किस रश्के-महकी[8] ?
यह बज़्मे-फलक[9] क्यों सजाई गई है,
यह तारोंका छिड़काव क्यों हो रहा है ?

ज़िन्दगी इक हसीन धोखा है ।
हमने सोचा है हमने समझा है ॥
कौन समझेगा मेरे दर्दकी आह !
ज़हरका[10] ज़ख्म किसने देखा है ॥
है मेह्र[11] सीनेका यानी—
ज़िन्दगीमें मज़ा उनका[12] है ॥

१. सुन्दरी, २. ओस, ३. सवेरे सबेरे, ४. माथेपर, ५. अँधेरी रात, ६. जादूगर, ७. आगमन, ८. चन्द्रमा भी जिससे ईर्ष्या करे, ९. आकाशकी महफिल, १०. विष, ११. प्रेम, १२. एक वस्तु जो कभी देखी नहीं गई ।

आह मुतरिबे[1] ! यह तेरा धीमे सुरोंमें गाना।
जैसे दरिया शबे-महताबमें[2] आहिस्ता बहे॥

क्या बताऊँ मैं क्या है मनकी आग।
तुमने देखी तो होगी बनकी आग?
आबे-क़ुलज़ुम[3] जिसे बुझा न सके।
वोह है आज़ादिए-वतनकी आग॥

जिसकी वीरानियों हैं रश्के-बहार[4]।
मैं वोह उजड़ा हुआ गुलिस्ताँ[5] हूँ॥

हमको जिसका ग़म है, उसको कुछ हमारा ग़म नहीं।
यह मुसीबत उम्रभर रोनेको भी कुछ कम नहीं॥

मेरे दिले-मायूसमें[6] क्योंकर न हो उम्मीद।
मुरझाये हुए फूलमें क्या बू नहीं होती?

जो सच पूछो तो दुनियामें फ़क़त रोना ही रोना है।
जिसे हम ज़िन्दगी कहते हैं काँटोंका बिछौना है॥

मौसमे-गुलमें सितम हाय ख़िज़ाँ याद न कर।
चन्द घड़ियाँ हैं खुशीकी इन्हें बरबाद न कर॥

१. गानेवाली, २. चाँदनी रातमें, ३. समुद्रका पानी, ४. बहारें जिसपर ईर्षा करें, ५. उद्यान, ६. निराश हृदयमें।

हमें रईस साहबका अधिक परिचय नहीं, प्रयत्न करने पर भी प्राप्त न हुआ। अतः नहीं कहा जा सकता कि उम्र और शाइरीके मर्तबेसे आपका उल्लेख शाइरीके नये दौर या नये मोड़में होना चाहिए। बहरहाल आपने कते १६४८ से कहने प्रारम्भ किये हैं और आपके केवल कते ही यहाँ दिये जा रहे हैं। अतः आपका उल्लेख नये मोड़में ही जाना उचित समझा। कते रईस साहबने क्यों और कब कहने शुरू किये, यह दास्तान रईस साहबकी जबाने मुबारकसे सुनिए—

"जनवरी १६४८ की एक उदास शाम थी। मैं हस्बमामूल रोजनामा (दैनिक) 'जंग' कराचीके दफ्तरमें तरतीबे-इदारतके हंगामोंमें शर्फ़ (सम्पादकीय लिखनेमें व्यस्त) था। चन्द गजके फ़ासलेपर टेलीप्रिंटर मशीन एक गोशेमें दम-ब-खुद साकित (मौन) खड़ी थी कि अचानक मशीनमें जिन्दगीकी हरारत पैदा हुई और खट, खट, खटके शोरसे सारा दफ्तर गूँज उठा।

"टेलीप्रिंटर मशीन एक अहम (विशेष) खबर टाइप कर रही थी। अहम तरीन खबर—खबर यह थी कि 'नई दिल्लीमें ऐन प्रार्थनाके मौक़ेपर किसी अजनबी शख्सने गाँधीजीको गोली मारकर हलाक कर डाला।' जिस तरह अचानक किसी मकानपर एटमबम गिरे और उसके तमाम रहनेवाले पागलोंकी तरह उछल पड़ें। बिल्कुल यही हाल दफ्तरके तमाम कातिबों और ऐडीटरोंका हुआ। तय हुआ कि इसी वक्त जंगका जमीमा शाया (अतिरिक्त अंक प्रकाशित) किया जाये। तजवीज पेश की गई कि इस जमीमेमें रईस अमरोहवीके चन्द शेर भी हों। रईस अमरोहवी-के हवास बेक़ाबू थे। ताहम चार मिसरे फ़ौरन मौजूँ हो गये—

जिससे उम्मीदें-ज़ीस्त[1] थी बाँधी
ले उड़ी उसको मौतकी आँधी

---

१. जीवन-आशा।

रईस अमरोहवी

रईस अमरोहवी साहब भारत-विभाजनके बाद अब कराची बस गये हैं और वहाँके दैनिक 'जंग'के सम्पादकीय विभागमें कार्य कर रहे हैं। सम्पादकीय कार्योंके अतिरिक्त रोजाना एक कता भी आप जंगके लिए कहते हैं। जिसे वहाँकी जनता बहुत चावसे पढ़ती है। कार्टूनोंकी तरह आपका कता भी 'जंग' अखबारका महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक अंग बन गया है। चूँकि आपके कते पाकिस्तानकी तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक, दैनिक जीवन और अनेक विविध समस्याओंपर तीखे व्यंग्य लिये हुए होते हैं। इसलिए उनको पढ़ने-सुननेके लिए जनता आतुर रहती है।

इन कतोंकी कार्टूनोंसे भी अधिक लोकप्रियता मिली है और 'जंग' के अनुकरणमें वहाँके अन्य दैनिक पत्र भी कते छापने लगे हैं। कार्टून केवल पाठकको तनिक-सी देरको प्रफुल्ल कर पाता है। उसका प्रभाव स्थाई नहीं रहता और न उसका आनन्द श्रोता उठा पाते हैं। लेकिन कता पढ़ने-सुननेवाले सभीको आनन्द-विभोर करता है। वह व्याख्यानों और गोष्ठियोंमें बरमहल इस्तेमाल किया जा सकता है। दस वर्षसे निरन्तर कहे गये ये कते ऐतिहासिक महत्ता भी रखते हैं और हजारों वर्षके बाद भी इन कतोंके सहारे इस युगके पाकिस्तानकी गति-विधिकी झाँकी भी मिल सकेगी। तत्कालीन समस्याओंसे प्रभावित होकर रईससाहब जो कता कह गये, वह कह गये। अब चाहें कि गत दस वर्षकी समस्याओंपर कुछ और कते कह दें तो कतई नामुमकिन। अगर तबियत पर ज़ोर देकर कहें भी तो यह बात हरगिज़ हरगिज न आ पायगी। वे क़ते शादाब गुंचे न होकर कृतिम काग़ज़ी फूल होंगे।

हमें रईस साहबका अधिक परिचय नहीं, प्रयत्न करने पर भी प्राप्त न हुआ। अतः नहीं कहा जा सकता कि उम्र और शाइरीके मर्त्तबेसे आपका उल्लेख शाइरीके नये दौर या नये मोड़में होना चाहिए। बहरहाल आपने कते १९४८ से कहने प्रारम्भ किये हैं और आपके केवल कते ही यहाँ दिये जा रहे हैं। अतः आपका उल्लेख नये मोड़में ही जाना उचित समझा। कते रईस साहबने क्यों और कब कहने शुरू किये, यह दास्तान रईस साहबकी जबाने मुबारकसे सुनिए—

"जनवरी १९४८ की एक उदास शाम थी। मैं हस्बमामूल रोजनामा (दैनिक) 'जंग' कराचीके दफ्तरमें तहरीरो-इदारतके हंगामोंमें ग़र्क़ (सम्पादकीय लिखनेमें व्यस्त) था। चन्द गज़के फासलेपर टेलीप्रिंटर मशीन एक गोशेमें दम-ब-खुद साकित (मौन) खडी थी कि अचानक मशीनमें जिन्दगीकी हरारत पैदा हुई और खट, खट, खटके शोरसे सारा दफ्तर गूँज उठा।

"टेलीप्रिंटर मशीन एक अहम (विशेष) खबर टाइप कर रही थी। अहम तरीन खबर—खबर यह थी कि 'नई दिल्लीमें ऐन प्रार्थनाके मौक़ेपर किसी अजनबी शख़्सने गाँधीजीको गोली मारकर हलाक कर डाला।' जिस तरह अचानक किसी मकानपर एटमबम गिरे और उसके तमाम रहनेवाले पागलोंकी तरह उछल पड़ें। बिल्कुल यही हाल दफ्तरके तमाम कातिबों और ऐडीटरोंका हुआ। तय हुआ कि इसी वक्त जंगका जमीमा शाया (अतिरिक्त अंक प्रकाशित) किया जाये। तजवीज पेश की गई कि इस ज़मीमेमें रईस अमरोहवीके चन्द शेर भी हों। रईस अमरोहवीके हवास बेक़ाबू थे। ताहम चार मिसरे फ़ौरन मौजूँ हो गये—

जिससे उम्मीदें-ज़ीस्त[1] थी बाँधी
ले उड़ी उसको मौतकी आँधी

---

१. जीवन-आशा।

गालियाँ खाके, गोलियाँ खाके
मर गये उफ़ ! महात्मा गाँधी

"कातिब साहबने जमीनेमें गाँधीजीके हादसए-कत्लकी हौलनाक खबरके साथ इन चार मिसरोंकी किताबत कर दी। जमीमा छपकर कराचीमें फैल गया और यह कता भी। फिर यूँ ही मेरे जहनमें खयाल आया कि अगर जगमें रोजाना चार मिसरोंका एक कता भी शाया हुआ करे तो मजा आ जाये। यह है आग़ाज (प्रारम्भ) मेरी कतागोईका। ३० जनवरी १६४८ से अबतक मैं जंगके लिए रोजाना एक कता लिखता हूँ। पिछले दस सालमें शायद ही कोई मौका ऐसा आया हो कि इस अखबारमें मेरा कता शाया न हुआ हो। गिना नहीं, ताहम मेरा खयाल है कि पिछले नौसालमें तक़रीबन ढाई तीन हज़ार क़तआत इस तरह कहे गये होंगे। अब यह पूछ लीजिए कि यह क़तआत किस आलममें कहे गये हैं।

"जिन लोगोंने रोज़नामो (दैनिक पत्रों) में काम किया है, उन्हें मालूम है कि रोजाना अखबारोंमे ऐडीटरोंको किस तरह काम करना पड़ता है? खबरें बराबर चली आ रही हैं। तर्जुमा मुसलसल (लगातार) हो रहा है। तर्जुमेके सिलिप कातिबोंके पास चले जा रहे हैं। मुंशीजी (यानी हेड कातिब) हर पाँच-दस मिनिटके बाद नारा बुलन्द करते हैं कि 'खबरें लाइए, मैटरकी कमी है।' ऐडीटर बेचारा बैलकी तरह खबरोंके तर्जुमे और तरतीबमें जुता हुआ है और बाकी है कि जोड़ी जा रही है। बहरहाल यह हंगामा होता है रोजनामोंमें। मैं भी इसी ज़मानेमें व हज़ार शौक़ इन्हीं हगामोंमे ग़र्क़ रहा करता और रोज़ाना किसी न किसी वक्त अचानक यह खुश गवार आवाज मेरे कानोंमें आया करती कि 'कृता लाइए।' सैकड़ों कते इसी आलममें लिखे गये, किस तरह, याद नहीं। बाक़ी क़तआत चलते फिरते, सोते-जागते और उठते-बैठते नज़्म हुए।"

"क़तआगोईका आग़ाज़ करते वक़्त मुझे वहमो-गुमान भी न था कि इन चार मिसरी क़तआतको इस दर्जा मक़बूलियत हासिल होगी। मैंने पिछले दस सालमें इन क़तआतकी मक़बूलियतका जो आलम देखा है, उसको बयान करना ग़ालबन ख़ुदसताई (आत्मप्रशंसा) होगी। बिला शुबह (बिना किसी सन्देहके) सैकड़ों क़तआत आज लोगोंकी ज़बानपर हैं। मुत्तअद्द अहबाब (बहुत से इष्ट-मित्र) ऐसे हैं, जिन्होंने इन क़तआतके मजमूए (सकलन) मुरत्तिब (तैयार) किये हैं। अलग़रज़ ख़वास हों या अवाम (ख़ास हों या सर्वसाधारण) तालीमयाफ़्ता हों या नाख़्वान्दा (शिक्षित हों या अशिक्षित) क़ौमी लीडर हों या आमसियासी वरकर। मैंने हर जगह और हर महफ़िलमें अपनी क़तआगोईके मद्दाहों (प्रशंसकों) को पाया है और बड़े जोशो-ख़रोश और ज़ौक़ो-शौक़के साथ। बहुत इक्सारीके साथ मेरा ख़याल यह है कि इन क़तआतकी इस दर्जा क़द्र-अफ़ज़ाईका सबब क़तआतसे ज़्यादा उनके मौज़ूआत (विषय, शीर्षक) हैं। तंज़िया सियासी और समाजी (व्यंग्यपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक) क़तआतको पाकिस्तानमें जो मक़बूलियत हासिल है। उसका नतीजा यह हुआ कि उर्दूके बेश्तर अख़बारातने क़तअको अपना मख़सूस फ़ीचर क़रार दे लिया (विशेष स्थाई स्तम्भ बना लिया) है।[1]"

आपका 'क़तआत रईस अमरोहवी' सकलन २४० पृष्ठका हमारे समक्ष है। इदारहे-जहनेजदीद कराचीने मार्च १९५७ में प्रकाशित किया है। इसमें १९४८ से १९५५ ई० तक कहे गये ४३६ क़तआत मुद्रित हैं। जिनमें से ८७ चुनकर यहाँ दिये जा रहे हैं। इन क़तआतके दर्पणमें पाकिस्तानके प्रतिबिम्बके साथ-साथ कहीं-कहीं भारतकी वर्तमान झलक भी दिखाई देगी।

१. क़तआत रईस अमरोहवी पृ० १७-२१।

–१९४८ ई०–

इन्किलाब जिन्दाबाद

अगर्चे आज ब-ज़ाहिर अवाम[1] हैं आज़ाद
मगर वही है हुकूमतका जब्रो-इस्तब्दाद[2]
हम इन्क़िलाबकी करते थे आर्ज़ू कितनी ?
यह इन्क़िलाब हुआ ? इन्किलाब ज़िन्दाबाद

शिकवा-जवाबे-शिकवा

मुझे थी फ़िक्र निहायत कि आके यह देखूँ
नये निज़ाममें[3] 'इक़बाल'की जगह क्या है
नये निज़ाममें देखा तो आके यह देखा
कि क़ौम शिकवा, हुकूमत जवाबे-शिकवा[4] है

वज़ारते-आज़माके[5] ज़वालपर

बुझ गया एक ही झोंकेमें वज़ारतका चिराग़
यूँ भी दुनियामें कोई शीशए-दिल चूर न हो
इस बुरे वक़्तमें देखा न कोई काम आया
हम न कहते थे मेरी जान ! कि मग़रूर[6] न हो

१. सर्व-साधारण, जनता, २. ज़ुल्मो-सितम, ज़बर्दस्ती, ३. नई शासन व्यवस्थामें, ४. क़ौम शिकायत करनेपर मजबूर और हुकूमत शिकायतोंको दूर करनेके बजाय सिर्फ़ शिकायतोंका जवाब दे रही है, ५. प्रधान मन्त्रित्व पद छिन जानेपर, ६. अभिमानी।

फ़ख़्रे-कराची[1]

यह बहस थी कि फ़ख़्रे-कराची है कौन लोग ?
इक रहनुमाए-कौमे[2] पुकारा किया कि "हम"
इक शोख़ नाज़नी[3] भी गुज़रती थी राहसे
पर्दा उलटके उसने इशारा किया कि "हम"

हसीन चोर

कराचीकी पुलिस पीछे पड़ी है उन लुटेरोंके
मुसाफिरको जो असनाए-सफ़रमें[4] लूट लेते हैं
इलाही उन हसीं चोरोंको आख़िर कौन पकड़ेगा ?
जो ज़ालिम राह चलते इक नज़रमें लूट लेते हैं

शाइर और कव्वाल

ग़ज़ल पढ़ रहे थे कहीं कोई साहब
ग़ज़लमें क़यामतके सुर - ताल निकले
मैं समझा कि यू० पी० के हैं कोई शाइर
मगर वह वहींदेके क़व्वाल निकले

१. कराचीके अभिमान योग्य, २. नेता, ३. चपल कोमलांगी,
४. महिलाओंके दलें, ५. यात्रामें।

कसरते औलाद[1]

एक महाजरने[2] यह फ़र्माया कि "पाकिस्तानमें
हूँ तो बद क़िस्मत मगर रखता हूँ ख़ूए-नेक[3], मैं
शौक़से छोटे-से इक कमरेमें करते हैं बसर
चार बच्चे, पाँच भाई, एक बीबी एक मैं"

हुक्मे-नमाज

दिया गया है कराची पुलिसको हुक्मे-नमाज़
यह हुक्म रहमते-बारी[4] है काम-चोरोंको
पुलिस नमाज़में मसरूफ़[5], लोग ऐशमें मस्त[6]
यह इन्क़िलाब मुबारक तमाम चोरोंको

महाजरके माअ़नी

महाजरका बड़ा दर्जा है इसलामी किताबोंमें[7]
महाजर फ़ातहीने-नफ़्से-अम्माराको[8] कहते हैं,
मगर इस लफ़्ज़के कुछ और माअ़नी है कराचीमें
ग़रीबो-ख़ानुमाँ, बरबादो-आवाराको कहते हैं

१. सन्तान-वृद्धि, २. भारतसे गये मुसलमानने, ३. भली आदत, ४. ईश्वरीय कृपा, ५. व्यस्त, ६. भोग-विलासमें लीन। ७. इस्लाम मज़हबके लिए जो अपना वतन छोड़कर दूसरे देशमें आश्रय लेनेको मजबूर हो जाये, उसे महाजर कहते हैं। महाजरका बहुवचन महाजरीन है। हज़रत मुहम्मद और उनके साथी विरोधियोंसे तंग आकर अपना देश 'मक्का' छोड़कर जब मदीने चले गये थे। तब उन्हें महाजरीन कहा जाता था, इसी ऐतिहासिक घटनाके आधारपर भारत-विभाजनके फलस्वरूप पाकिस्तान जा बसनेवाले मुसलमान अपनेको महाजरीन समझते हैं। ८. इन्द्रिय दमन करनेवालेको।

शर्मिन्दगी

महाजर जब क़दम रखते हैं पाकिस्तानकी हदमें
तो बेख़ुद होके पाकिस्तान ज़िन्दाबाद कहते हैं
मगर जब लौटते हैं तंग आकर हिन्दकी जानिब
तो हफ़्तों झेंपते हैं मुद्दतों ख़ामोश रहते हैं

एहसासे-दीगराँ

इक मुहतरमे वज़ीरने जल्सेमें यह कहा—
"तकलीफ़ सख़्त मैंने उठाई तमाम रात
हिन्दोस्ताँके ख़ाक-नशीनोंकी यादमें
सोफ़ों पै मुझको नींद न आई तमाम रात"

गुज़र औक़ात

न पूछो क्या गुज़रती है करांचीमें गरीबोंपर
ब-बातिन हाल अबतर है ब-ज़ाहिर बनके रहते हैं
न जीनेका सलीक़ा है, न मरनेका ठिकाना है
महाजर बनके आये हैं, मुसाफ़िर बनके रहते हैं

१. माननीय, २. अन्दरूनी, ३. शोचनीय।

चार चीजें

चार चीजें है जो छुप सकती हं पाकिस्तानमें
लाख उनकी जुस्तजूमें[1] ठोकरें खाये निगाह
रहनुमाओंकी हिमाकत[2], पारसाओंका फरेब[3],
बा-असर लोगोंकी रिशवत, अहले-दौलतके गुनाह[4]

वजारते-सिन्ध

मुझ पै इलजाम तलव्वनका[5] अजब है ऐ दोस्त !
कुछ सही फिर भी तलव्वन मेरी आदत तो नहीं
क्यों यह कहते हो कि दम भरमें बदल जाऊँगा
मै कोई सिन्धके सूबेकी वज़ारत तो नहीं ?

चार तबके

चार तबके[6] है जो मिल सकते हैं पाकिस्तानमें
आपको हो ख्वाह[7] इन तबक़ोंसे कितना ही गुरेज़[8]
हाकिमाने - बेलियाक़त[9] - आलिमाने-बे - अमल[10]
रहबराने-बे-तदब्बुर[11] वाइज़ाने-फ़ितना खेज़[12]

---

१. तलाशमें, २. नेताओंकी मूर्खताएँ, ३. धर्मात्माओंके छल, ४. धनिकोंके पाप, ५. अस्थिरताका, कभी किसी रंगमें, कभी किसी रंगमें, ६. दल, गिरोह, ७. चाहे, ८. परहेज़, ९. अयोग्य अफ़सर, १०. चरित्रहीन धर्मात्मा ११. गम्भीरता रहित नेता, १२. झगड़ा फिसाद करानेवाले उपदेशक।

याद दहानी

माना कि मैं हूँ ख़ाक-नशीं आप हैं वज़ीर
फिर भी न तर्क-रस्मे-मुलाक़ात कीजिए
जिसने दिया था वोट इलेक्शनमें आपको
सरकार मैं वही हूँ ज़रा याद कीजिए

ख़िदमते-इस्लामका चक्कर

कल इक दिल्लीके अहले-दिल कराचीमें नज़र आये
यहाँ भी ख़िदमते-इस्लामके चक्करमें फिरते हैं
मुअज़्ज़िज़ थे यह दिल्लीमें भी लेकिन फ़र्क़ इतना है
वहाँ पैदल घिसटते थे, यहाँ मोटरमें फिरते हैं

हवा ही हवा

बहुत हम हवा बाँधते थे यहाँकी
कराची नहीं जन्नते-एशिया है
यहाँ आके हम इस नतीजेपे पहुँचे
कराचीकी बातें हवा ही हवा है

१. मद (पेट भरनेके शौक़ीन दिखनेवाले)।

हमारे हुक्काम

अपने हुक्कामको ऐ क़ौम हिक़ारतसे[1] न देख
गो यह नाकारा[2] भी हैं, बानिए - बेदाद[3] भी हैं
तुझको इन अर्श - नशीनोंको[4] अदब लाज़िम है
इनमें फ़रऊन[5] भी नमरूद[6] भी शद्दाद[7] भी हैं

किसपै छोड़ आये ?

जब एक क़ाइदे-मिल्लतने[8] यह कहा मुझसे
कि "हम तो हिन्दसे रिश्ते वफ़ाके तोड़ आये हैं"
तो मैंने दस्ते-अदब जोड़कर सवाल किया —
"हुज़ूर ! मुसलिमे-हिन्दीको किसपै छोड़ आये हैं ?"

---

१. घृणासे, २. अयोग्य, ३. मुसीबतोंके लानेवाले, ४. ऊँचाई पर रहनेवालोंका, ५. अत्याचारी, घमण्डी ६. काफिर, जालिम, ७. आदकौमका एक बादशाह, जिसने बहिश्तके नमूनेपर एक बाग बनवाया था, जो बागे-इरमके नामसे मशहूर है। मगर बाग़े - इरमके तैयार होनेपर जब वह उसे देखने गया तो दर्वाजे पर ही मर गया।
८. नेताने।

यह फ़रियादें

ग़रीबोंकी फ़ुग़ाँ[1], मिल्लतके नाले[2], क़ौमकी आहें
बराबर[3] तुम भी सुनते हो मुसल्सल हम भी सुनते हैं
मगर यारब ! हमें इस सिलसिलेमें पूछना यह है,
यह फ़रियादें हमारे क़ायदे-आज़म[4] भी सुनते हैं ?

हमारा जुर्म

मुहाजरें[5] जो नज़र आते हैं, हरजानिब[6] यह बेचारे
दयारे-हिन्दमें अपनी बचाकर जान आये थे
हमारे जुर्मकी अब जो सज़ा भी हो मुनासिब है
हमारा जुर्म इतना था कि पाकिस्तान आये थे

गलती

कोई नदीम[7] नहीं है, दयारे-ग़ुरबतमें[8]
किसी नदीमकी किस तरह जुस्तजू करते
अगर यह जानते दर-दरकी ख़ाक छानेंगे
तो हम कभी न फ़राग़तकी आरज़ू[9] करते

१. आहें, दीर्घनिश्वास, २. मुस्लिम-संगठनके निश्वास, ३ लगातार, ४. मि० जिन्ना, ५. भारतमे आये मुसल्मान, ६. हरतरफ़, ७. साथी, ८. दरिद्रतामें, ९. शौक, इच्छा।

शेख़-ओ-बुते-कमसिन

सुना है शेख़ने कल इक बुते-कमसिनसे फ़र्माया—
"मैं इस ज़ुल्फ़े-सियाहो-आरिज़े-दिल ख़्वाहके सद्क़े[1]"
बुते-काफ़िरने शर्माकर कहा मासूम लहजेमें—
"मैं इस रीशे-दराज़ो-दामने-कोताहके सद्क़े[2]"

यह अल्लामा

बरहना[3] हमने देखा है हर-इक रहबरकी फ़ितरतको[4]
अगर्चे है सभीके जिस्मपर इख़लासका जामा[5]
ग़रीबोंके तो कोई भी न काम आया मुसीबतमें
यह मौलाना, वह मौलाना, यह अल्लामा वह, अल्लामा

अब्रे-बहार और महाजर

अब्रे-बहारने[6] कल यादे-वतन दिलादी
बादलके साथ मैं भी बे-इख़्तियार रोया
वह मुस्तकिल[7] महाजिर मैं ख़स्ता दिल महाजर
वह जार-जार रोया, मैं बार-बार रोया!

---

१. काली जुल्फों और हृदय आकर्षक कपोलोंपर न्योछावर, २. लम्बी दाढी और ठिगने कदपर न्योछावर, ३. नग्न, ४. नेताओंकी आदतोंको, ५. सदाचारका परिधान, ६. बादलोंने, ७. स्थायी, सदैवके लिए बे-वतन।

महाजर बापकी फरियाद

इक महाजर-कैम्पसे[1] लड़की कोई गुम हो गई
दिल-शकिस्ता बापने हसरतसे छाती कूट ली
रोके बोला—"काफिरोंने घर ही लूटा था फ़क़त
इन मुसलमानोंने घरकी आबरू तक लूट ली"

परमिट सिस्टम

बेगम हैं हिन्दमें तो मियाँ सिन्धमें मुक़ीम
दोनोंको है फिराकके शिकवे[2] नसीबसे
क्या क़हर है, कि इनकी मुलाकातके लिए
परमिट है शर्त, वह भी मिलेगा रक़ीबसे[3]!

बन्दगी

कल इक महाजर हिन्दी यहाँसे घबराकर
चले कि थे उन्हें सद्मातें वाक़ई पहुँचे
क़दम जहाज़ पै रखते ही वह यह चिल्लाये—
"हुज़ूर क़ायदे-आज़मको बन्दगी पहुँचे"

---

१. शरणार्थी कैम्पसे, २. जुदाईकी शिकायतें, ३. शत्रुसे, ४. कष्ट।

ग़ैर मुल्की

सर-सरे-ग़मसे[1] दिल हुआ ताराज[2]
आँधियोंने यह शमअ़[3] गुल[4] की है
जिसने बख़्शी थी ज़िन्दगी हमको
अब वही ख़ाक ग़ैर मुल्की है

रिक्शा

चली जाती है रिक्शामें कोई नाज - आफ़री देवी[5]
किसी मोटरसे कतराकर किसी रहरवसे[6] टकराकर
हजारों हादसे[7] पेश आते रहते हैं तसादमके[8]
दुआ परमात्मासे है कि इस रिक्शाकी रक्षा कर

जीग़मे-इस्लाम[9]

नोचकर क्यों रहनुमाए-क़ौमको[10] खाती है क़ौम ?
रहनुमाए - क़ौम बिरयानीका[11] बकरा तो नहीं ?
जीग़मे - इस्लामको कुर्बानियोंसे वास्ता[12] ?
जीग़मे - इस्लाम कुर्बानीका बकरा तो नहीं ?

---

१. ग़मोंकी तेज हवासे, २. बर्बाद, नष्ट, ३. चिराग, ४. बुझाया, ५. नजाकतवाली सुन्दरी, ६. राहगीरसे, ७. वाक़ये, ८. दुर्घटनाओंके, ९. इस्लामी शूरवीर, १०. नेताको, ११. नमकीन पुलावका, १२. इस्लामी नेताओंको पाकिस्तानके लिए क़ुर्बानीसे क्या वास्ता ?

पाक रेडियो

हम पाक रेडियोसे नहीं ग़ैर मुतमइन[1]
कानोंमें नग़्मो-नज़्मका रस घोलता तो है
ऐ क़ौम! इसकी नग़्मा-सराईकी[2] क़द्र कर
माना कि बे-सुरा है, मगर बोलता तो है

जवाबे-अज़ान

अज़ाँन दी जो कल रात मैंने इशाकी[4]
ग़मे-दहरसे[5] दिलको आज़ाद करके
तो होटलका रेकार्ड फ़ौरन यह चीख़ा—
"चले दिलकी दुनियाको बर्बाद करके"

नामो-निशाँ

किसी दरवेशने[6] यह लिखवाया
अपना नामो-निशाँ ख़ुदाकी क़सम
पेशा हिजरतें, दयार पाकिस्तान
बापका नाम क़ायदे - आज़म

---

१. असन्तुष्ट, २. गद्य-पद्यका, ३. सगीतकी, ४. रातकी नमाज़के लिए, ५. दुनियाके ग़मोंसे, ६. फ़क़ीरने, ७. देश-त्याग, ८. वतन।

–१९४९ ई०–

अपनी दुनियामें

अपनी दुनियामें हाकिमोंके बजाय
इन्क़िलाबातकी हुकूमत है
ज़िन्दगीका कुछ एतबार नहीं
सूबए - सिन्धकी वज़ारत है

इन्किलाब

रास आया खुश नसीब अफरादको[1] वह इन्क़िलाब
अक़्ल हो जाती है मख़्तल[2] जिसकी याद आनेके साथ
लुट गये गो सैकड़ों अफराद, पर यह भी तो देख
बन गये कुछ लोग पाकिस्तान बन जानेके बाद

यह इन्क़िलाब

इस इन्क़िलाबकी आख़िर कुछ इन्तहा[3] भी 'रईस' !
फ़लक नशीं[4] नज़र आते हैं, रहनशीनोंमें[5]
जो ख़स्ताहालोंको[6] कल तक पनाह[7] देते थे
शुमार आज है उनका पनाह - गज़ीनोंमें[8]

१. भाग्यवान व्यक्तियोंको, २. परेशान, ३. हद, अन्त, ४. गगनचुम्बी अट्टालिकाओंमें रहनेवाले, ५. रास्तोंमें पड़े रहने वालोंमें, ६. मुसीबतज़दोंको, ७ शरण, ८. शरणार्थियोंमें ।

डाकख़ाने

निगली शानके या रब ! हमारे डाकख़ाने हैं
जो तार आया सो लेट आया, जो ख़त आया ग़लत आया
मेरे इक दोस्तने लिक्खा था आता हूँ करांचीमें
वह आकर चल दिये और छः महीने बाद ख़त आया

तरमीम

था किसी दोस्तका मामूल यह रमज़ानमें क़ब्ल[1]
यादे-हक़[2] करते थे हर शामकी तफ़रीहके बाद
रविश इस माहमें तब्दील हुई है इतनी
सिनेमा जाते हैं, इफ़्तारों - तरावीहके[3] बाद

क़िब्ला

वाज़िदे - क़िब्लाको टोका इक मआदतमन्दने
लोग कहते क़िब्ला-गाहीको और क्या कर दिया ?
वह मआदत - मन्द फ़र्माने लगे "कुछ भी नहीं
क़िब्ला टेढ़ा हो गया था उसको सीधा कर दिया"

१. पहिले, २. ख़ुदाकी याद, ३ रोज़ा खोलने और तरावीह नमाज़ पढ़नेके बाद।

नुमाइश गाह

दंग हैं अहले नज़र क़ौमी नुमाइश देखकर
वाह वा क्या शान मसनूआते - पाकिस्तान[1] है
इक बड़ी बी ने मगर क्या बर-महल तनक़ीद[2] की
"यह नुमाइशगाह मस्नूराते - पाकिस्तान[3] है"

– १९५० ई० –

अदाकार और लीडर

इक अदाकार[4] आ फँसा था कल कराचीमें 'रईस'!
देखनेको उसके इक ख़िल्क़त[5] छतोंपर चढ़ गई
यह तमाशा देखकर इक मसख़रा कहने लगा—
"इन अदाकारोंकी क़ीमत लीडरोंसे बढ़ गई"

फ़िल्म, शाइरी, रेडियो

शेरो-शाइर इनको फ़िल्म और रेडियोसे क्या ग़रज़ ?
कम-से-कम हमने तो इस मैदाँमें हिम्मत हार दी
शाइरीका फ़िल्मवालोंने किया गर क़त्ल - आम
शाइरोंकी रेडियोवालोंने गर्दन मार दी

१. दिखावटी, २. आलोचना, सम्मति दी, ३. पाकिस्तानी महिलाओं की प्रदर्शनी, ४. सीनेमा ऐक्टर, ५. भीड़ ।

दूल्हा भाई

कराचीमें बहुत-से लोग इस दावे पै जीते हैं
कि अरबाबे-हुकूमतसे[1] हमारी आशनाई[2] है
फ़लाँ डिप्टीकमिश्नरके हम इकलौते जवाँई है
फ़लाँ सेक्रेटरी रिश्तेमें अपना दूल्हा-भाई[3] है

मीज़ान

बताऊँ क्या कि पाकिस्तान आकर
तरक़्क़ी शेख़जीने की तो क्या की
ब-ज़ाहिर बेशो-कमकी है यह मीज़ान
घटा दी अक़्ल गो दाढ़ी बढ़ा दी

तसलीफ़

मुस्तअद[4] बेगम मुसन्निफ़[5] एक बच्चेकी बनीं
इक मुसव्विदा[6] हमने लिख मारा बड़ी तहक़ीक़में[7]
बीवी-ने मौलूदको[8] देकर मेरी आगोशमें[9]—
"आपकी तसनीफ़[10] बढ़िया है मेरी तसनीफ़से"

१. शासन अधिकारियोंसे, २. रिश्तेदारी, ३. बहनोई, ४ ५ निर्माण करनेको प्रस्तुत, बालक रूपी पुस्तककी रचना करनेको तत्पर, ६. निबन्ध ७. खोजबीनके बाद, ८. नवजातको, ९. गोदमें, १०. कृति, रचना।

नसीहत

कल एक अफ़सरे - दीदारने[1] कहा मुझसे—
"कि हौसले हैं अगर हजके और जियारतके[2]
तो ले के ख़ैर सगालीका वफ़्द[3] सूए-हिजाज़
ख़ुदाके घरको चलो खर्चपर हुकूमतके"

—१९५१ ई०—

गन्दुम

गेहूँ मिलता ही नहीं ख़ुल्दे-कराचीमें[4] कहीं
इन्तकाम[5] आज भी आदमसे[6] लिया जाता है
क़हते-गन्दुमका[7] यह आलम है कराचीमें 'रईस'
गन्दुमो रंग पै हर शख़्स मरा जाता है,

मीरास

कौन कहता है कि पाकिस्तानकी अर्ज़े-जमील[8]
दर हक़ीक़त मिल्लते - आज़ादकी मीरास[9] है
साथियो! यह क़ौम चन्द अशख़ास[10] पर है मुश्तमिल[11]
दोस्तो! यह मुल्क चन्द अफरादकी[12] मीरास[13] है,

---

१. धार्मिक अफसरने, २. मक्का-मदीनाकी यात्राकी इच्छा, ३. सरकारी प्रतिनिधि दल, ४. कराची रूपी जन्नतमें, ५. बदला, ६. मानवसे, ७. गेहूँके अकालका, ८. सुन्दर भूमि, ९. जनताकी सम्पत्ति, १०. थोड़े से व्यक्तियोंपर, ११. बटी हुई, १२. व्यक्तियोंकी, १२. जागीर।

नतीजे

जब तक कि न हूँ मैं किसी ज़ीजाहका फ़रज़न्द[1]
जब तक कि न हूँ मैं किसी हाकिमका भतीजा
ऐ शख़्स! मेरी हिम्मतो एसार से हासिल[2]?
ऐ दोस्त! मेरे इल्मो-लियाक़तसे नतीजा?

–१९५२ ई०–

औलिया

गर यही हुक्कामे-राशनकी[3] इनायत[4] है 'रईस'!
महवे-हैरत[5] हूँ कि हम सब क्या-से-क्या हो जायेंगे
तर्के-गन्दुम[6], तर्के-जौ[7], तर्के-शकर[8], तर्के-बरंज[9]
शहर वाले रफ़्ता-रफ़्ता औलिया[10] हो जायेंगे

तमाम रात

कल रात इक क़यामते-कुबरा गुज़र गई
ख़ुफ़्तानसीब[11] डरसे न सोये तमाम रात
कोसा महाजरीनने बादलको रात भर
बादल महाजरीनपै रोये तमाम रात

१. प्रतिष्ठित व्यक्तिका पुत्र, २. साहस और अध्ययनसे क्या लाभ, ३. राशन अफ़सरोंकी, ४. कृपा, ५. आश्चर्यान्वित, ६. गेहूँका त्याग, ७. जौका त्याग, ८. चीनीका त्याग, ९. चावलोंका त्याग करना, १०. साधु, ११. अभागे।

तुम बताओ

हमने इस अर्ज़े-पाककी[1] ख़ातिर
सारी दुनियाको तज दिया गोया
तुमको इश्क़े-वतनके दावे हैं,
तुम बताओ कि तुमने क्या खोया?

हराम

मै[2] किसी रंगमें हलाल[3] नहीं
ब-खुदा[4] ऐ फ़क़ीहे-ख़ूँ आशाम[5]!
लेकिन इक बात पूछनी है मुझे
ख़ूने-आदम[6] हलाल है कि हराम"?

भला

भूका भारत, ग़रीब पाकिस्तान
ख़ाक इनमें मुआहिदा[7] होगा
दोनों इक-दूसरेसे कहते हैं—
"ला भला कर तेरा भला होगा"

---

१. पाकिस्तानके लिए, २. मदिरा, ३. उचित, ४ ख़ुदा जानता है, ५. रक्तका दरीया पीनेवाले ज्ञानी। ६. मानव-रक्त, ७. परस्पर मैत्री सम्बन्ध।

हुजरा नशीं

जब भी देखो इन्तज़ामे-मुल्को-मिल्लत है ख़राब
जब भी पाओ-इनहताते-अज़मते दुनिया-ओ-दीं[1]
ख़ुद समझ जाओ कि इस मुल्की ख़राबीका सबब
या कोई हुजला नशीं[3] है या कोई हुजरा-नशीं[4]

यादे-ख़ुदा

तामीर हो रही हैं दफ़्तरमें मस्जिदें
यह नुक्ता जो समझ न सके वे शऊर हैं
यानी ज़माना साज़ी-ओ-रिशवतके बावजूद
यादे-ख़ुदा-ओ-ज़िक्रे-ख़ुदा भी ज़रूर है

– १९५३ ई० –

दुआ

इधर गिज़ाकी[5] है, किल्लत उधर है भूकका ज़ोर
यह मुल्क क्यों न हमए-दज़नराव[8] हो जाये
दुआ यह माँग रही है यज़ाग्ते - सूरार्क
इलाही क़ौमका मअ़दा ख़राब हो जाये

१. देश और धर्मकी प्रतिष्ठाका पतन, ३. महलोंमें रहनेवाली, ४. एकान्तवासी (फ़क़ीर), ५. खाद्यकी, ६. कमी, ७. परेशानियोंमें घिरा हुआ, ८. पाचन-अग्नि- मण्डल, ९. पाचन-शक्ति ।

ट्रैफ़िक बन्द

> है जो बाज़ारमें ट्रैफिक बन्द
> सबब इसका न जाने क्या होगा?
> या तो एच.एमकी[1] आमद-आमद[2] है
> या कोई ऊँट गिर गया होगा!

गुण्डे

> कराचीमें गुण्डोंकी क़िस्में नई हैं
> असूली, फ़रोई, क़दीमी, रिवाजी
> पुराने,नये, मुस्तक़िल,ख़ाम,पुख़्ता,
> गिरोही, मआशी,सियासी, समाजी

ला जवाब

> बारिश अगर न हो तो जहन्नुम है ज़िन्दगी
> बारिशका हो नज़ूल तो जीना अज़ाब है
> अलक़िस्सा किस अदाए-कराची पै जान दूँ?
> जो बात है ख़ुदाकी क़सम लाजवाब है

सवाल

> एक मच्छरने मेरे कानमें कल रात कहा
> "आप अमराजवबाई की है पहचान कि हम
> हम पै इलज़ाम है ख़ूँरेज़ी-ओ-सफ़्फ़ाकीका
> ख़ून इन्सानका पीता है, ख़ुद इन्सान कि हम"

---

१. ऑनरेबिल मिनिस्टरकी, २. आगमन।

हिन्दुस्तान

बहुत था ज़ौक़ तमाशाए-हिन्द, आख़िरकार
वहाँके क़ायदे-अज़मत निगाँको[1] देख लिया
बस एक वजूदमें भारतके कर लिये दर्शन
बस इक शख़्समें हिन्दोस्ताँको देख लिया

जुलूस

अल्लह-अल्लह ख़वातीने-कराचीका[2] जलूस!
वाह क्या मंज़रे - दिलचस्पो - दिलेराना था
मर्द सहमे हुए, सिमटे हुए आते थे नज़र
और अन्दाज़ ख़वातीनका मर्दाना था

ब्लैकमार्केट

किसी सेठको नसीहत यह गिरहमें बान्ध ज़ाहिद!
"जो निगाहे-वक़्त कज[3] है तो ब्लैक मार्किट कर
न दयानते-अमलसे[4] कभी राहे-हक़ मिलेगी
अगर आर्ज़ू-ए-हज है तो ब्लैक मार्किट कर"

१. प० जवाहरलाल नेहरूके पाकिस्तान जानेपर, २. कराचीकी महिलाओंका, ३. दुर्दिनोंकी निगाह टेढ़ी है, ४. सदाचारसे।

आटा

यह माना शहरमें चावल मयस्सर है न आटा है
मै क्यों चीखूँ, मेरे क्या बावले कुत्तेने काटा है
वफ़ूरे-क़हतसे[1] क्या क़हतके मारोंको घाटा है
जहन्नुम पेटका हमने ग़मे-गन्दुमसे[2] आटा है

नजरे-अक़ीदत

अहले मुआमिलासे जो लेते हैं अहले-कार
रिशवत नहीं, वह नज़रे-अक़ीदतका माल है
फ़तवा है मुफ्तियाने-दफ़ातरका इसलिए
रिशवत हराम, नज़रे-अक़ीदत हलाल है

चाहनेवाले

अहले अमरीका हैं पाकिस्तानवालोंपर फ़िदा
लीजिए गोरोंको उल्फ़तके लिए काले मिले
इनका दावा है कि मादिहे हैं हमारा अज़्ने-दर्द
हमको हैरत है कि अच्छे चाहनेवाले मिले

१. महँगाईकी अधिकतासे, २. गेहूँ रूपी ग़मसे, ३. सखा, ४. प्रेम भाव।

– १९५४ ई० –

नंगो

ऐ कराचीके अनगिनत नंगो !
तुमने सर्दीमें क्या किया होगा
हम तो सरगर्म नाव-नोश[1] रहे
तुमने ख़ूने-जिगर पिया होगा

बोल पपीहे बोल

पाकिस्तानी नग़्मे क्या है ढोलका गोया पोल
अमरीकाके नग़्मे कितने नाज़ुक और अनमोल
डालरकी ज़रपाश फ़ज़ामें अपने बाज़ू खोल
गेहूँ - गेहूँ बोल पपीहे, गेहूँ - गेहूँ बोल

शुहदा

ख़ुदाया क्या मुसीबत है यह कुर्सी
इलाही क्या क़यामत है यह ओहदा
सिखाता है शरीफ़ इनसाँको साज़िश
बनाता है भले मानसको शुहदा

१. मदिरामें मग्न।

चूरा

जो शै मिलती है राशन - शॉपसे लोगोंको कार्डपर
न आटा है, न मैदा है, न भूसी है, न बूरा है,
हुए हैं बदमज़ा कामो-दहन[1] मसमूम हैं मअ़्दे[2]
यह अमरीकाका गेहूँ है कि ऐटम बम का चूरा है ?

रो

अज़ीज़ाने - वतनके[3] हाल पर हँस
वतनकी इज्तमाई[4] शानको रो
फ़क़त उर्दूके मातमसे नतीजा ?
जो रोना है तो पाकिस्तानको रो

लँगोटी

पारचा[5] फी आदमी दो गज़ मिलेगा शहरमें
लीजिए अरबाबे-वहशतका[6] गुज़ारा हो गया
बन सकेगी गो न इस कपड़ेमें लैलीकी नक़ाब
ख़ैर मजनूँकी लँगोटीका सहारा हो गया—

१. हलक़ और मुँह, २. ज़हरखाई हुई पाचनशक्ति, ३. देशके प्रियजनों पर, ४. सगठित ५. कपड़ा, ६. जनताका।

शर्क़ो-ग़र्ब

शर्क़ो-ग़र्ब[1]-पाक हैं इक-दूसरे पर मुनहसिर[2]
फ़ैसला चाहेंगे हम बाहोश दुनियासे यहाँ
वेस्ट[3] पाकिस्तानमें रक़्बा[4] है, आबादी उधर
ईस्ट[5] पाकिस्तानमें पानी है और प्यासे यहाँ

कोसने

भाकड़ा बन्द पै भारतके मुक़ाबिल हम हों !
कोई सोचे शुर्फ़ा यूँ मुफ़हासे लड़ जाँय
दूरसे बैठे हुए कोसने देंगे हम तो
भाकड़ा - बन्द तेरी नहरमें कीड़े पड़ जाँय

मशविरा

जो ज़िन्दगी ब-फ़रागत[6] गुज़र नहीं सकती
तो ज़िन्दगीको रहे-तंगसे[7] गुज़र जाओ
महाजरीन ग़रीबुल दयार पाकिस्तान !
तुम्हारे हक़में मुनासिब यह है कि मर जाओ

रोटी

इस शहरमें एक ग़रीब औरत
इस्मतके एवज़ न पाये रोटी
इंसाँकी यह क़द्र ? हाय अल्लह
रोटीका यह मोल ? हाय रोटी !

---

१. पूर्व-पश्चिम पाकिस्तान, २. निर्भर, ३. पश्चिमीय, ४. क्षेत्र विस्तृत, ५. पूर्वी, ६. निराकुलता पूर्वक, ७. तंग रास्तेमें, संकट-मार्गसे ।

इन्हीं सड़कोंपर

मैंने देखे हैं कराचीमें अनोखे मंज़र[1]
हर रविश इस चमनिस्तॉकी[2] है फिरदौस नज़र[3]
मगर अफ़सोस कि फिरते हैं हज़ारों मुफ़लिस
उन्हीं सड़कोंपै मेरे दोस्त! उन्हीं सड़कोंपर

•

कह मुकरनी

हारसे दम कुछ उखड़ा-उखड़ा
जगके शिकवे, देसका दुखड़ा
दामन गीला ऑखें भीगी
ऐ सखी साजन ? ना सखी लीगी

बैंगन

अगर सरकार बैंगनके मुख़ालिफ़ हैं तो फिर बैंगन
मुज़िर[4] है और अगर हज़रत मुआफ़िक है तो हाज़िम है
बहर सूरत नमक ख्वारोंको बैंगनसे तअल्लुक क्या
कि हम सरकारके नौकर है हजरतके मुलाज़िम है

---

१. दृश्य, २. उद्यानकी क्यारी, ३. स्वर्गीय दृश्य, ४. नुकसान पहुँचानेवाला।

अछूत

चार ज़ातोंमें यहाँकी ज़िन्दगी है मुनक़सिम[1],
हुक्मराँ[2] अपने बरहमन, फ़ौजवाले राजपूत
तबक़ए-अहले-तिजारत[3] खत्री है और वैश्य
रह गये अहले-क़लम[4] वह शूद्र है यानी अछूत

गिरवी

ख़ुश्क रोटी वह बला है, कि बशर[5] जिसके लिए
रेहन दुनिया ही नहीं दौलते-दीं[6] भी रख दे
दिलको मअ़देसे गराँ-क़द्र समझनेवाले[7]
क़ैस भूका हो तो लैलीको भी गिरवी रख दे

पंज दरिया

पाँच दरियाए-सियासत[8] है हमारे मुल्कमें
'गोरमानी' 'फ़ज़्ले हक़', 'ग़फ़्फ़ार', 'भाशानी', 'ख़ुरो'
एक गहरा, दूसरा पायाब[10], टेढ़ा तीसरा
सख़्त बे-हंगाम[11] चौथा, पाँचवाँ बे राह रौ[12]

---

१. विभाजित, बटी हुई, २. शासक, ३. व्यापारी वर्ग, ४. क्षत्री और वैश्य हैं, ५. क़लमके मज़दूर, ६. मनुष्य, ७. धर्मरूपी निधि, ८. हृदयको पेटसे क़ीमती समझने वाले! ९. राजनैतिक दरिया, १०. उथला, ११. चाहे जब उतार-चढ़ाववाला, १२. लक्ष्यहीन।

नामो-निशान

आपका इस्मे-गरामी ? "मीर, वाइज़, वाज़गो[१]"
आपका मक़सद ? "फ़क़त तहरीफ़े दीनो-एतक़ाद[२]"
आपका मसकन? "मसाजिद"! आपकी मंज़िल "बहिश्त"[३]
आपका ओहदा? "मुबल्लिग़[४]" आपका पेशा? "फ़िसाद"

आवे-का-आवा

मुझे कहना नहीं अहले-वतनसे
कोई नुक़्ता फ़क़त इसके अलावा
किसी इक शख़्सका शिकवा करें क्यों
कि है बिगड़ा हुआ आवे-का-आवा

१५ जुलाई १९५८ ई०]

---

१. आपका शुभनाम क्या है ? जी, मुझे सरदार, उपदेशक औ[र] व्याख्याता कहते हैं, २. आपका उद्देश्य क्या है ? धर्मग्रन्थोंके आश[य में] परिवर्त्तन करते रहना, ३. आपका निवास स्थान ? मस्जिदमें रहता हू[ँ, मंज़ि]ल क्या है ? बहिश्त जाना ४. रंग बदलना ।

अहमद नदीम क़ासिमी

अहमद शाहका जन्म २० नवम्बर १९१६ ई० को शाहपुर ज़िले (पश्चिमीय पाकिस्तान) के गाँव अंगामें हुआ। शाइरीमें 'नदीम' तख़ल्लुस फ़र्माते हैं और पीरदादाका नाम मुहम्मद क़ासिम था, इसी कारण क़ासिमी कहलाते हैं। अहमद नदीम क़ासिमीके नामसे मशहूर हैं।

आप एक प्रतिष्ठित पीरवंशमें उत्पन्न हुए हैं। आपके ख़ान्दानके हज़ारों मुरीद (भक्त) काश्मीर, गुजरात और स्यालकोट ज़िलोंमें बसे हुए हैं। आपके वंशके साथ उनकी श्रद्धा-भक्ति असीम है। आप स्वयं फ़र्माते हैं—

"एक मर्तबा मैंने भी अपने जूतोंको उन अक़ीदतमन्दोंके गिरोहमें इस हालतमें गुम होते देखा है कि हर शख़्सकी आँख उन्हें चूमकर चमक उठी और हर मुरीदके चेहरेपर एक बहुत बड़े मज़हबी बुज़ुर्गके साहबज़ादेके जूतोंको मिस करके एक आस्मानी जलाल छा गया[1]।"···

आपके पिता मीर गुलामनबी मज़हबी बुज़ुर्ग थे। दिन-रात ख़ुदाकी इबादतमें लीन रहने और क़ुरआन शरीफ़का पाठ करने रहनेके सिवा उन्हें सांसारिक कार्योंसे कोई सरोकार न रहता था। परिणामस्वरूप परिवारपर दरिद्रता छाई रहती थी। नदीम उस वक़्तकी क़लमी तस्वीर यूँ खींचते हैं—

"पुख़्ता मकान और खुले सहन, मगर पहननेको मोटा खद्दर और खानेको जंगली साग, आग तापनेको अपने ही हाथोंसे चुने हुए उपले। मुद्दतों बाद शहरोंमें आकर मालूम हुआ कि बच्चोंके पास कोई चीज

१. जलालो-जमाल पृ० ११।

'जेबखर्च' नामी भी होती है। आस-पास अक्सर तमाम रिश्तेदार लड़के, अमीर और खुशलिबास थे। उनकी किताबें नई थीं। उनकी सलेटोंके साथ मोटे मोटे सुनेहरी इसंज लटकते थे, और उनकी तख्तियों पर हथेलियाँ थिरक जाती थीं। और यहाँ तवेकी कालकसे रोशनाई तैयार होती थी। अनगिनत किनारोंवाले सलेटके टुकड़ोंपर सवालात हल होते थे। एक ही क़लमको दोनों तरफसे तराश लिया जाता था। मिट्टीकी दवातोंमें रोशनाईसे ज्यादा सूफ़ (कपड़ा) होता था[1]।"

रिवाजके मुताबिक़ 'नदीम' ५ सालकी उम्रमें कुरआन पढ़नेके लिए मस्जिदमें दाखिल किये गये। अभी आप ७ वर्षके भी न हो पाये थे कि आपके पिता अल्लाहको प्यारे हो गये। चौथा दर्जा पास करके नौ सालकी उम्रमें १६२५ ई० में अपने चचा खानबहादुर पीर हैदरशाहके पास कैंवलपुर चले गये। उन दिनों आपके चचा अटकमें एक्स्ट्रा असिस्टैंट कमिश्नर थे। वहाँ आपका बहुत लाड-प्यारमें लालन-पालन हुआ। मगर यह लाड-प्यार और नाजो-नेमतकी जिन्दगी आपको कचोटती रहती थी। दस मास चचाके पास बहुत ठाठ-बाटसे रहनेके बाद दो माहकी छुट्टियोंमें जब आप अपनी माँके पास गाँव आते तो घरकी गरीबी देखकर कलेजा मुँहको आने लगता। चूँकि उम्रके साथ समझ भी बढ़ रही थी। अतः आप सभी ऊँच-नीच धीरे धीरे समझने लगे। रिश्तेदारोंकी तोताचश्मी, धोके फरेब और खान्दानी खोखली इज्जतसे नफरत होने लगी। साधारण-से-साधारण-सी घटनासे कोमल भावोंपर असर पड़ने लगा। तनिक-तनिक से आघातोंसे आपके दिलपर चोट लगने लगी। फ़र्माते हैं—

"ग्यारह-बारह बरसका जो लड़का दस महीने निहायत आराममें गुज़ारनेके बाद गाँव आकर अमीर रिश्तेदारोंसे वापिसीका किराया तलब करनेकी खातिर उनकी ड्योढ़ियों तक जाकर रुक गया हो, और गरूरे-नफ्स (स्वाभिमान) से मजबूर होकर चुपचाप पलट आया हो और अपनी

१. जलालो जमाल पृ० ११।

उदास माँकी गोदमें सर रखकर घण्टों रोता-बिलकता रहा हो, वह अगर वक़्तसे पहले हस्सास या इन्तहा दर्जेका जज़्बाती (अत्यन्त भावुक) हो जाये तो यह तअज्जुबका मुक़ाम नहीं।"

शाइरी और साहित्यमें रुचि क्यों और कैसे हुई, इसपर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं—"चचाजान अरबी-फ़ारसी दोनोंके आलिम थे। लेकिन उनकी तबियतका रुझान ज्यादातर अरबीकी तरफ़ था। अरबी और फ़ारसीके अलावा उर्दूमें भी ख़ासे रवाँ शेर कह लेते थे। क़ीमती किताबोंसे ठँसी हुई अलमारियाँ उनके कमरेकी ज़ीनत थीं। पाँचवींमें था कि उन्होंने हम सब भाइयोंको तफ़सीरे-दक़ानीका दर्स देना शुरू किया। दर्सके दौरानमें जगह-जगह सईदी, हाफ़िज, ग़ालिब, हाली, इक़बालके अशआरसे मतालब वाज़ह फ़र्माते (भाव समझाते)। तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) दुरुस्त करते। अशआरसे सही तौरपर महज़ूज़ (लाभान्वित) होनेके तरीक़े बताते। अमीर और दाग़की शाइरीसे बेज़ार (नफ़रत करते) थे।''''''इस इल्मी ओ-अदबी माहौल (विद्या और साहित्यके वातावरण) का मेरी तबियतपर इतना गहरा असर पड़ा कि छठी जमाअतसे मैंने एक ब्याज़ (डायरी) में उर्दूके पाकीज़ा अशआर लिखने शुरू कर दिये। मुझे अबतक याद है कि उन दिनों भी मुझे 'ग़ालिब' का यह शेर आज ही की तरह पसन्द था—

सरापा रहने-इश्क़ो-नागुज़ीरे - उल्फ़ते-हस्ती
इबादत बर्क़की करता हूँ और अफ़सोस हासिलका"[1]

---

१. मैं भी कैसा विचित्र हूँ। एक तरफ़ तो इश्क़को अपना सर्वस्व दिया हुआ (सरापा रहने-इश्क़) है, जिसके कारण मर जाना अवश्य-म्भावी है। दूसरी तरफ़ जीवनका मोह भी मुझसे नहीं छूटता है (ना गुज़ीरे उल्फ़ते-हस्ती) भला बताओ यह दोनों बातें कैसे निभेंगी? यह तो वैसा ही है, जैसे एक तरफ़ बिजली (बर्क़) की पूजूँ और जब बिजली खेत (हासिल) को जला दे तो, उस हानिपर अफ़सोस करूँ!

१२ वर्षकी उम्रमें ८० पृष्ठका उपन्यास लिख डाला। १६३१ में आपने मैट्रिक पास किया। अब आप अशआर भी कहने लगे। खान्दानी दुर्घटनासे प्रभावित होकर पहली नज़्म कही। दूसरी नज़्म आपने मौलाना मुहम्मदअलीकी मृत्यु पर कही, जो कि दैनिक सियासतके सण्डे एडीशनके प्रथम पृष्ठपर आकर्षक ढंगसे प्रकाशित की गई।

मैट्रिक करनेके बाद आप बहावलपुर कॉलेजमें पढ़ने चले गये। वहाँ सौभाग्यसे पीरजादा अब्दुलरशीद साहब जैसे योग्य प्रोफेसर आपको नसीब हो गये। उनके तत्त्वावधानमें, नाटक, शास्त्रार्थ, मुशाअरे, साहित्यक जल्से होने लगे। कॉलेजमें जिन्दगीकी लहरें दौड़ने लगीं और नदीम साहबकी शाइरी उन्हीं दिनों परवान चढ़ने लगी। उन्हीं दिनों आपने कहानियाँ लिखनेकी तरफ भी ध्यान दिया। १६३४ ई० में आपके हितैषी और संरक्षक चचाका हृदयगति बन्द हो जानेसे निधन हो गया। इतने बड़े अविलम्ब और सच्चे हितैषीके उठ जानेसे आपके कोमल हृदयको बहुत अधिक ठेस पहुँची। फिर भी आपने मर-मिटकर किसी भी तरह १६३५ ई० में बी० ए० कर लिया।

बी० ए० करनेके बाद असहाय परिवारके भरण पोषणकी चिन्तामें आप नौकरीकी तलाशमें इधर-उधर भटकते फिरे। उस परेशानीका उल्लेख करते हुए लिखते हैं—

"बी० ए० का परवाना (प्रमाणपत्र) हाथमें लेकर और खान्दानी सनदोंका एक पुलिन्दा काँधों पर रखकर और मगरबी तरीक़े-आदाब (पाश्चात्य शिष्टाचारके ढंग) रटकर मैंने मुलाज़मतकी भीक माँगना शुरू की। १९३५ से १६३६ तक तक़रीबन सारे पंजाबके चक्कर लगाये। खान्दानके पुराने मुरब्बियोंने मुसकराकर देखा और इज़हारे-हमदर्दी फर्माते सैरको निकल गये। एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नरी, तहसीलदारी, नायब तहसिलदारीसे लेकर अंजुमने हिमायते-इस्लाममें क्लिर्की तकके लिए नित नये ढंगकी दरख़्वास्तें लिखीं। रिफार्म कमिश्नरके दफ़्तरमें

तीन बजे वहाँसे निकलकर एक और फ़िल्मघरमें घुस गया। शामको वहाँसे फ़ारिग़ होकर एक और तफ़रीहगाहमें चला गया। नौ बजे रातके वहाँसे निकला तो जेबमें एक और तफ़रीहका सामान मौजूद था। सो एक मशहूर सिनेमा हाउसमें एक अच्छे दर्जेका टिकिट लेकर बैठ गया। एक बजे वहाँसे निकला तो जेबमें सिर्फ़ एक दुअन्नी थी। भूका-प्यासा बग़ैर किसी मक़सदके एक तरफ़ चल दिया। नहरके पुलपर पहुँचकर एक तरफ़ पलट गया। सुस्तरौ पानीमें सितारोंके मद्धियाले अक्स देख रहा था कि पौ फटी और मुझे एहसास (भान) हुआ कि मैं कल सुबहसे अपने आपमें नहीं हूँ। यह और इस क़िस्मकी और आवारगियाँ मेरे ऐसे कई नौजवानोंकी जिन्दगियोंके आम्ताउल वक़ू औ-वाक़ियात-(साधारण आम घटनाएँ) हैं। लेकिन यहाँ मैं अपना ज़िक्र कर रहा हूँ—एक शाइरका ज़िक्र। जिसकी नज़्मोंपर अगर उन वाक़्यात (घटनाओं) का असर न पड़े तो वह मुख़लिस (वास्तविक) नहीं। वह महज़ नक़्क़ाल और मुक़ल्लिद (अनुकरण करनेवाला) है।"

"लाहौरमें 'अख़्तर' शीरानीकी रूहनवाज़ (प्राण-प्रेरक) सुहबतें मयस्सर आईं। बल्कि चार महीने मैं उनका मेहमान रहा। लेकिन तअज्जुबकी बात यह है कि उन्होंने मेरी सआदत मन्दी (ख़ुशक़िस्मती) और पाकीज़ नफ्सीके मद्देनज़र (अच्छे चाल चलनका ख़याल करते हुए) मुझे आतिशे-सैय्याल (शराब) की, उन जन्नतोंका इल्म तक न होने दिया, जिनको मैं मुद्दतोंतक उनकी शाइराना सर शारियाँ (मस्तियाँ) समझता रहा। ऐन मुमकिन है कि मैं उन दिनों एहसासात (भावों) के बेपनाह (असीम) तूफ़ानसे तंग आकर उधरका रुख़ कर लेता। मगर मैं ख़ुश हूँ और यह फख़् (अभिमान) नहीं, इज़हारे-इत्मीनान (सन्तोष) है कि मैं उन जन्नतोंसे आजतक महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहा हूँ।"

"३ जुलाई १९३६ ई० को मैंने मुलतानके दफ्तर आबकारीमें काम

करना शुरू किया। भाई किशन चन्दरने पैग़ाम भेजा—'बेकारीसे आबकारी भली।' हज़रत 'जोश' मलीहाबादीने तहरीर फर्माया—

जनाबे क़िब्ला-ओ-काबाकी आबकारी है।
शराब जो न पिये आजकल वह नारी है[1]॥"

जुलाई १९३९ से सितम्बर १९४२ तक नदीम आबकारी विभागमें घिस घिस करते रहे। एक शाइर और लेखक आबकारी जैसे ग़ैर शाइराना वातावरणमें ज़िन्दगी बितानेको मजबूर हो। जंगलोंमें कुलाँचें भरनेवाला हिरन चिड़ियाघरमें बँधनेको विवश हो; इसे ईश्वरीय मनोरंजनके अतिरिक्त और क्या कहा जाय? ब क़ौल 'अदम'—

तख़्लीक़े-कायनातके[2] दिलचस्प जुर्मपर[3]।
हँसता तो होगा आप भी यज़दाँ[4] कभी-कभी॥

लेकिन बेकार रहनेसे तो बा-कार रहना हर हालमें बेहतर, बक़ौल ग़ालिब—

अपना नहीं वोह शेवा कि आराममें बैठें।
उस दर पै नहीं बार तो काबे ही को हो आये॥

आबकारी विभागमें कार्य करते हुए आपके दिलो-दिमाग़की जो हालत थी, उसका अन्दाज़ा उन दिनोंकी आपकी लिखी डायरीसे कुछ कुछ मिलता है—

२८ फ़रवरी १९४१ ई०

" 'काम करनेकी आरज़ू', ज़िन्दा रहनेकी आरज़ू', लेकिन मेरे पास कोई काम नहीं। इसलिए ज़िन्दगीकी सही लज़्ज़त नसीब नहीं। यह कुढ़ना छुटनेसे रहा, साँस लो, आँखें झपकाओ और मर जाओ। अजीब माहौल (वातावरण) है। न घुँघरुओंकी झंकारें, न दोशीज़ाओं (किशोरी

१. बज़्मे-जमाल पृ० १४–१५, २ सृष्टि-निर्माणके, ३. मनोरंजनके लिए किये गये अपराध पर, ४. ईश्वर।

कुवारियों) की अलापें, न मैदाने-जंगका तब्ल, (बाजा, ढोल) न क़ौमी इज्तमाओं (क़ौमी जल्सों) का जोश ! बस दफ़्तरकी भारी और संगीन दीवारें, ग़लीज़ (गन्दे-मैले) क़लम और ख़्वाकिस्तरी (जीर्ण) काग़ज़। बूढ़े चपरासी और बदमज़ाक़ अफ़सर, चर्स और अफ़यूनके सौदे और बेचैन नींदें।"

२१ अक्तूबर १६४१ ई०

"...हर तरफ़ खराश-सी महसूस करता हूँ। पुरानी मिट्टी, नई और ताज़ी मिट्टीके नीचे दब गई है। लेकिन इस ताज़ा मिट्टीमें ताज़गीकी सड़ाँद-सी है। ताज़गी और सड़ाँद! उल्टी सी बात है। लेकिन यही उल्टी बातें अक्सर कैसी कड़ी हक़ीक़तें साबित होती हैं!"

१४ जून १६४२ ई०

"...मैं मनहूस मुख़बिरोंके एहसान उठाता हूँ। पुलिसकी मिन्नतें करता हूँ। छापे मारता हूँ, हथकड़ियाँ लगवाता हूँ। इस्तग़ाशा तहरीर करते हुए बड़े-बड़े झूट तराशता हूँ। अदालतोंमें क़सम उठाकर ग़लत बातें कहता हूँ। जब मैं देखता हूँ कि मेरे कई बेगुनाह शिकार इंसाफ़के शिकंजेमें फँसकर जेल जा रहे हैं तो मैं कटहरेके बालाई हिस्सेको हाथोंमें जकड़ लेता हूँ। मेरा एहसास (चेतन) मेरे चुटकियाँ लेता है और तमाम रात मेरे बदनपर चींवटियाँ-सी रेंगती रहती हैं।"

२० सितम्बर १६४२ ई०

"आज मेरी जिन्दगीका ज़र्रीतरी (सुनेहरा) दिन है। आज मैं अहमदशाह एक्साइज सब-इस्पैक्टरके बजाय, सिर्फ़ अहमदनदीम क़ासिमी हूँ। तजरुबातका एक अंबार समेटे मैं अपने माज़ी (भूतकालीन) के खण्डहरोंसे रुख़सत हो रहा हूँ।"[1]

२० सितम्बर १६४२ ई० को आप आबकारी विभागसे त्यागपत्र देकर लाहौर पहुँचे। वहाँ आप २५ सितम्बर १६४२ से १६४५ ई० तक

१. जलालो-जमाल पृ० १६–१७।

'फूल' और 'तहज़ीबुल्निसवाँ' के सम्पादक रहे। इसी अर्सेमें 'अदबे-लतीफ़' मासिक पत्रका भी कुछ दिनों सम्पादन किया। जिसके एक लेखके कारण आप एक साल तक मुक़द्दमेमें परेशान रहे। सितम्बर १९४६ से मार्च १९४८ ई० तक पेशावर-रेडियोमें कार्य किया। इसी दौरानमें 'सवेरा' मासिक पत्रका सम्पादन भी करते रहे। फिर लाहौर आगये और यहाँ से 'नक़ूश' माहवारी रिसाला जारी किया। इसके दस अंक सम्पादन किये थे कि मई १९५१ में सेफ़्टीएक्टके तहत नज़रबन्द कर लिये गये। नवम्बर १९५१ में रिहा हुए तो विविध साहित्यिक कार्योंमें व्यस्त रहे। ५ मार्च १९५३ को दैनिक 'इमरोज़' लाहौरके सम्पादक नियत हुए और वर्तमानमें वहीं कार्य कर रहे हैं। १९४८ ई० में शादी हुई। आपकी माता ख़दीजा मस्तूर आपकी क़लमी तसवीर यूँ खींचती हैं—

"गन्दुमी रंग, मोटी नाक, न दुबले न मोटे, ५ फ़िट ८ इंचके इन्सान हैं। एक कसूमार (कपोल) से ज़रा नीचे चाक़ूके ज़ख़्मका गहरा निशान है (यह निशान बड़े भाईसे एक गँडेरी छीननेका ख़मियाज़ा है) नदीमकी आँखें बड़ी अजीब-सी हैं। बादामी रंगकी आँखें जिनमें ज़हानत (मस्तिष्ककी स्फूर्ति) के साथ ऐसी भरपूर मासूमियत (सरलता) है, जो मैंने बहुत कम लोगोंकी आँखोंमें देखी है।"

नदीम साहबने कभी किसीसे इश्क़ किया भी है या यूँ ही शिकायतन शेर कहते हैं? इस जिज्ञासाके सम्बन्धमें ख़दीजा साहिबा लिखती हैं—

"नज़्मोंवाली 'सलूही' के अलावा मैंने नदीमका कोई स्कैन्डैल (Scandal अपवाद) नहीं सुना। और न कोई चौंका देनेवाली बात देखी। मैंने हज़ारों बार उन्हें कुरेदा कि यह सलूही कौन थी? क्या थी? कैसे चाहते थे तुम इससे मुहब्बत करते थे? मगर नदीम आजतक कुछ न फूटे। न वह हाँ करते हैं और न नहीं। हमेशा एक ही बात फ़र्माते हैं— 'बकवास न करो, वर्ना पीटूँगा।' नदीम मुझसे और हाजरा (लेखिकाकी छोटी बहन) से बेहद मुहब्बत करनेके बावजूद आजतक इस सिलसिलेमें

कुछ न बता सके। मुझे यक़ीन है कि यह क़िस्सा ज़रूर सच होगा क्योंकि जब नदीमको छेड़ो तो वे हज़रत कन्नी काटने लगते हैं। ज़्याद सताओ तो ऐसी नज़रोंसे देखने लगते हैं, जैसे कह रहे हों कि अच्छ तो फिर तुम्हारा इशारा है ? की थी मुहब्बत।"

नदीम साहब बहुत अधिक कहानियाँ लिखते और शेर कहते हैं। फि भी उन्हें अपनी इस प्रगतिसे सन्तोष नहीं। इस सम्बन्धमें ख़दीजा साहि फ़र्माती हैं—

"पढ़ने लिखनेसे नदीमको इश्क़ है। रातके बारह बजे तक मुतालअ करना या फिर लिखना, उनका सबसे महबूब (प्रिय) मशग़ला (काम है। यदि ख़ुदा न ख़्वास्ता वे चन्द दिन न लिख-पढ़ सकें तो सख़्त बेज़ा (परेशान) हो जाते हैं। अबतक उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह माश अल्लाह अच्छा ख़ासा ज़ख़ीम-सख़ीम जखीरा (काफ़ी बड़ा भण्डार) है इसपर एक लतीफ़ा याद आ गया। राजा मह्दीअली कहते हैं कि 'ए बार मैं किसीको रिसीव करने लाहौर रेलवे स्टेशन गया। वहाँ क्या देखत हूँ कि लाहौरके सारे पब्लीशर्स और ऐडीटर मौजूद हैं। पूछा कि भाई यह किसका इस्तक़बाल करने आये हो ? उन्होंने बताया कि नदीम साहबने अफ़सानों (कहानियों) और नज़्मोंकी बिल्टियाँ इसी ट्रेनसे आरही हैं वही छुड़ाने आये हैं।' इसके बावजूद नदीमसे पूछो कि कहो लाला कुछ लिख रहे हो तो फ़ौरन मुँह बिसूर लेंगे। 'क्या यार! एक हफ़्तेसे कुछ नहीं लिखा। बस चन्द शेर लिख सका हूँ। एक कहानी शुरू की थी और बस। काश मुझे हर तरफ़से सकून होता, यह रुपये कमानेकी फ़िक्रें न होतीं। यह ख़्वाहमख़्वाह मतोंका काम न करना पड़ता तो वाक़ई मैं कुछ लिखता।' यह कुछ लिखनेकी भूककर ग़म है जो उन्हें अक्सर सताया करता है।"

आपके स्वाभिमान और सदाचारपर ख़दीजा मस्तूर फ़र्माती हैं—

"नदीमने महकमए-आबकारीसे लेकर बेकारी तकको भुगता है। मगर

कभी खुद्दारी (स्वाभिमान) को चोट न लगने दी। एक बार नदीमके एक बदमिजाज अफसरको किसी बातपर गुस्सा आगया और उसने नदीम-की तरफ़ जलती हुई सिगरेट खींचमारी। नदीमने जवाबन दवात उसके मुँहपर दे मारी। जो इत्तफ़ाक़से दीवारपर जा लगी। यह उस जमानेकी बात है जब नदीमने तालीमके बाद पहली बाक़ाएदा मुलाजमत की थी। नदीम महकमए-आबकारीमें रहनेके बा-वजूद कभी शराब न पी सके। यानिकी (ताक़तके लिए दी गई दवाओ) मे मिली हुई जितनी शराब पी हो, ख़ैरसे उसका कोइ हिसाब नही। मगर यह हक़ीक़त है कि वैसे उन्होने कभी नहीं पी।"[1]

नदीम बहुत मिलनसार और सहृदय हैं। उनके मिलने-जुलनेवालोंकी सख्या काफी है। माँके बहुत अधिक भक्त हैं। स्त्रियोंको आदरकी दृष्टिसे देखते हैं। अपनी बहनोंको बहुत चाहते हैं। खाने-पहननेके शौक़ीन हैं। मुसीबतोसे घबरानेके बजाए, उनका डटकर मुक़ाबिला करते हैं। हर हालतमें खुश रहते हैं। आपके १ चौपाल, २ बगोले, ३ गरदाब, ४ तुलू-ओ-गरुब, ५ सैलाब, ६ आँचल, ७ आबले, ८ आस-पास, ९ दरोदीवार, १० सन्नाटा, ११ अँगडाइयाँ, १२ बिपता, १३ जेलके शब-ओ-रोज १४नकूश. १५ लतीफ, १६ केसर क्यारी और १७ बाजारे-हयात आदि उपन्यासो, कहानियों और गद्य लेखोंके सकलन प्रकाशित हो चुके हैं।

आपकी कहानियाँ और नज़्मे काफी लोक प्रियता प्राप्त कर चुकी हैं। मुशी प्रेमचन्दकी तरह आप भी देहाती जीवनके हृदयस्पर्शी और स्वाभाविक चित्रण करनेमे अनूठी क्षमता रखते हैं। आपकी शाइरीके निम्न संकलन हमारे समक्ष हैं—

१. जलाल-ओ-जमाल—प्रकाशक, नया इदारा लाहोर। १९४६ ई० मे प्रकाशित, पृष्ठ सख्या ३८४। इस सकलनमें ४० पृष्ठोंकी भूमिका, ४१ से ३३४ पृष्ठोंमें नज़्में और ३३५ से ३८४ तक गजलें हैं।

१. नकूश शख्सियात नं० १ पृ० ४०४–५।

२. रिम-झिम—प्रकाशक, इदारए-फ़रोग उर्दू, लाहौर। प्रकाशन तिथि मुद्रित नहीं। पृष्ठ २०८, यह नदीमके ३८६ क़तआतका संकलन है।

आपने क़ते लिखकर गागरमें सागर भरनेका सफल प्रयास किया है। अपने भावोंको इतने नपे-तुले शब्दोंमें इस ढंगसे व्यक्त किया है, कि हर क़ता अपने सीनेमें एक कहानी-सी छिपाये हुए मालूम होता है। आपके ३८६ क़तोंमें-से अपने पसन्दीदा १०० क़ते हम यहाँ दे रहे हैं—

कसबों और गाँवोंमें अमीर-ग़रीब सभीकी बहू-बेटियाँ कुओंपर पानी भरने जाती हैं। पनघट और पनिहारीके सम्बन्धमें न जाने कितनी रोमाँटिक कहानियाँ, रसीली कविताओं और लोक-गीतोंका हिन्दीमें और प्रान्तीय भाषाओंमें निर्माण हुआ है और होता रहेगा।

हर्ष है कि अब यह प्रयास उर्दूमें भी हो रहा है। अब उर्दूका शाइर अरब-ईरानके साथ-साथ अपने देशके रीति रिवाजों आदिकी ओर भी आकर्षित होने लगा है। नदीमके पनघट सम्बन्धी कुछ क़ते मुलाहिज़ा फ़र्मायें—

जानी पहचानी

ठुमक-ठुमकके चली जा रही है पनिहारी।
छलक-छलकके गरेबाँ तक आ गया पानी॥
फिर एक भीगी हुई रातका ख़याल आया।
फिर एक शबीह[1] नज़र आई जानी-पहचानी॥

ख़िरामे नाज़[2]

यह कोई चाल है? हर गामपै[3] महशरका गुमाँ[4]
पायलें बजती है, लँहगे की कमाँ तनती है॥
[illegible] ी है, कुहस्ताँसे[5] हवा।
[illegible] में[6] सबा चलती है॥

सैलाबे-जमाल[1]

सरपै गागर है लचकती है कमर रह-रह कर।
तर किये देता है, ज़ुल्फ़ोंको छलकता पानी॥
नन्हीं-सी धार वोह गरदनपे थिरककर लपकी।
सारी दुनियाको डुबो देनेकी तूने ठानी॥

पनघटपै कुछ इस तरहकी नारियाँ भी पहुँचती हैं, जिनके सती-तेजके समक्ष लोगोंकी आँखें नहीं उठतीं। उनके पहुँचते ही तमाशाई खिसक लेते हैं। अबलाओंको अपने फ़रेबे-जालमें फँसानेवाले कामुकोंको नदीमने बरजस्ता 'शिकारी' सम्बोधित किया है—

मलकए-नाज़[2]

यह किस शोख़ने[3] सरसे गागर उतारी?
ख़मोशी-सी है सारे पनघट पै तारी॥
यह किस मलकए-नाज़का दबदबा है?
कि सिमटे किनारोंमें बाँके शिकारी॥

हिजाब

गागरको उठाये कि दुपट्टेको सम्भाले।
जी चाहता है बढ़के ज़रा हाथ बटा दूँ॥
लेकिन यह दहकती हुई अंगार-सी आँखें।
किस तरह मैं सोये हुए शोलोंको[4] हवा दूँ॥

---

१. रूपका प्रवाह, २. सुन्दरियोंकी रानी, ३. चंचलाने, ४. अंगारोंको।

उसी पनघटपै एक ऐसी कुमारी भी आती है, जो किसी दिलफेंक छोकरेके वाग्जालमें फँस गई है और वह अहेरी उसकी सुध-बुध बिसार बैठा है। एक रोज वह उसे देख पाती है तो—

सरजनश[1]

पनघटपै कल किसीने मेरा हाथ थामकर।
यूँ आँख भरके देखा कि मैं लड़खड़ा गया॥
चिनगारियाँ चमकने लगीं दिलके आस-पास।
इक भूला-बिसरा अहद[2] मुझे याद आ गया॥

'नदीम' चूँकि प्रगतिशील शाइर हैं। अतः उनका ध्यान कुछ कोमलाङ्गनाओंकी दरिद्रताकी ओर भी बरबस चला जाता है। वे सौन्दर्य-आभा देखते-देखते सहसा कफे-अफ़सोस मलकर कहने लगते हैं—

हुस्नकी लूट

उफ ! यह नाजुक जिस्म और यह भारी-भारी गागरें।
उफ ! यह गोरे हाथ और यह बदनुमाँ उपलोंके ढेर॥
लुट गई भूके गुलामोंकी जवानी लुट गई।
जाने यह जागीरका उफरीत[3] कब होता है सैर[4] ?

फूल और काँटे

फूल तुमपर निसार होते हैं।
और तुम गागरें उठाती हो!
यह कोई चोट है, मशीय्यतपर[5] ?
या मुझे आईना दिखाती हो?

---

१. चेतावनी, मलामत, २. वायदा, ३. जागीरदाराना भूत, ४.सन्तुष्ट, ५. ईश्वरेच्छापर।

इस दरिद्रताका लाभ उठानेके लिए शहरके मन चले लोग शिकार फाँसनेको गाँवोंमें पहुँचते रहते हैं। क्योंकि उनका विश्वास है कि सौन्दर्य देहातोंमें बिखरा पड़ा है और वह बहुत सस्तेमें मिल जाता है[1]। ऐसे ही व्यक्तियोंकी बेहयाईका एक नमूना देखिए—

सुनेहरी हथियार

शहरसे आया हुआ बाँका शिकारी मुझको
किसी नव्वाबका फरज़न्द नज़र आता है॥
कि जब आता है टहलता हुआ पनघटके करीब।
झन - झनाता हुआ जेबोंको गुज़र जाता है॥

शायरी दरिद्रता और भोलापन कि जिसकी जेबमें पैसे बजते हुए देखती है, उसे ही यह निर्धन लड़कियाँ नव्वाबका बेटा समझ लेती हैं और इन कामुकोंकी धारणा है कि पैसेसे सबकुछ खरीदा जा सकता है। लगे हाथ इसी निर्धनताके चन्द नमूने और देख लीजिए—

दुख़्तर-फरोशसे[2]

फ़ाक़े बेशक खींचता जा लेकिन ऐ मुफलिस किसान!
अपनी इस मासूम और मग़मूम[3] बेटीको न बेच॥
उसकी आँखोंमें है वोह अन्दाज़ महवे- ख़्वाबे-नाज़[4]।
जिनके आगे लोग शाहीको समझ लेते हैं हेच॥

---

१. यहाँतक कि सिनेमाओं द्वारा इस तरहका प्रचार किया जाता है—"कहनेवाले सच कह गये हैं, हुस्न भरा है गाँवोंमें" २. कन्या बेचनेवालेसे, ३. दुःखी और भोली, ४. कोमल भावनाओंका प्रकाश।

जाने

कल ज़मीदारने तुझे शबको[1]।
अपनी ख़िलवतमें[2] क्यों बुलाया था ?
तेरे जाते ही तेरा बूढ़ा बाप।
मुझसे कुछ क़र्ज़ लेने आया था॥

बे रहम सवार

अफ़सोस लगान आज अदा कर नहीं सकता।
लेकिन मेरी बेटीका यह झूमर न उतारो॥
किस तरह मनायेगी कल यह ईदका त्योहार ?
ऐ अबलक़े-ऐय्यामके[3] बेरहम सवारो॥

मासूम नख़चीर[4]

परवतों पर हर तरफ़ शहरी शिकारी आये हैं
शहरियोंके दमसे हर गॉव पै रोनक़ छाई है॥
एक लडकी जिसको तारोंसे भी आता था हिजाब[5]।
निस्फ़ शबको[6] किसके चंगुलसे निकलकर आई है ?

१. रातको, २. एकान्तमें, ३. समयरूपी चितकबरे घोड़के, ४. शिकार किया हुआ, ५. लाज-शर्म, ६. आधी रातको।

तन और मन

"दो बीघा ज़मीं काश्तकी ख़ातिर मुझे देकर।
तुम करते हो छुपकर मेरी लड़कीको इशारा॥
महनत तो बिका करती है, ग़ैरत नहीं बिकती"।
इफ़लासका[1] मारा हुआ दहक़ान[2] पुकारा॥

भूका देहाती

बिलक रही है दमा-दम मशीन आटेकी।
गरज़ रहा है वोह पटड़ीपै शोलाबार[3] इंजन॥
वोह तंग बाड़ोंसे भेड़ें पुकारती है मुझे।
कि आज पेटके कहनेपै तज रहा हूँ वतन॥

मजबूर मुफ़लिस

लगान दूँगा मगर मेरे पास ख़ाक नहीं।
कोई सबील[4] मैं दो रोज़में निकालूँगा॥
ग़रीब हूँ मगर अब गालियाँ न दीजे मुझे।
मैं अपनी बेटीके दो बुन्दे बेच डालूँगा॥

१. दरिद्रताका, २. किसान, ३. आग उगलता हुआ, ४. उपाय, तरकीब।

जब निर्धनताके दृश्य देखे हैं तो साथकी-साथ जमींदारों और रईसोंके दर्शन भी कर लीजिए—

आक़ासे[1]

माना मैं महकूम[2] हूँ, लेकिन आदमकी औलादसे हूँ।
जिसको जन्नतके बदले मीरास मिली आज़ादी की॥
तेरा हर पैग़ामे-मसर्रत[3] लाता है सैलाबे-अलम[4]।
तेरा हर तहज़ीबी नश्तर मौत मेरी आज़ादी की॥

मशवरा

मेरे आक़ा-ओ-ग़म ग़ुसारों[5]!
मेरी बदबख़्तियोंके[6] ज़िम्मेदारों॥
मुझे रास आ ही जायेगा जहन्नुम।
अगर तुम अपनी जन्नतको सिधारो॥

ख़ुदासे

यह दिल ले और यह सोज़े-दरूँ[7] ले।
यह अपना इश्क़ ले, अपना जुनूँ ले॥
इलाही क्या यही है तेरा इंसाफ़?
कि मुनअ़िम[8] बहरे-में[9] मुफ़लिसका ख़ूँ ले!

१. मालिकसे, २. मातहत, नौकर, ३. ख़ुशीका सन्देश, ४. दुःखोंकी बाढ़, ५. मालिको, और मददगारो!, ६. दुर्भाग्योंके, ७. दग्ध हृदय, ८. धनिक, ९. शराबमें।

बहलावा

ग़रीबोंसे न कर जन्नतके वादे ।
न बहला मुझको रँग-आमेज़ियोंसे ॥
शबिस्तानोंकी रौनक़ है इबारत ।
मेरी औलादकी ख़ूँ-रेज़ियोंसे ॥

इस्तेदुआ[1]

मुझे सरमायेदारीसे[2] न बहला ।
मेरी क़िस्मतसे यह धब्बा मिटा दे ॥
दहकते है जो दोज़ख़के कनारे !
उन अंगारोंसे दिल मेरा बना दे ॥

एक सवाल

मोहताज किसीकी भी नहीं मेरी जवानी ।
मज़दूर हूँ, खाता हूँ, पसीनेकी कमाई ॥
ऐ रेशम-ओ-कमख़्वाबमें लिपटे हुए कोढ़ी !
क्यों तैंने मुझे देखके यूँ नाक चढ़ाई ?

---

१. प्रार्थना, अर्ज़, २. रईसीसे, धनसे ।

तहज़ीबकी मैराज[1]

जिसको मैंने रेशमी फ़रग़ल[2] दिये।
उसने बख़्शा है मुझे दामाने-चाक[3] ॥
क्या यही तहज़ीबकी मैराज[4] है ?
जमा कर लाता हूँ ज़र[5], पाता हूँ ख़ाक ॥

बंगाली कहत-ज़दाकी[6] जवानी

काश यह संगदिल[7] सियासत[8]-बाज़।
थपकियोंसे न हमको बहलाते ॥
ग़म-गुसारोंके[9] दर्दनाक अल्फ़ाज़।
काश, चावलके दाने बन जाते ॥

इस्लाम पूर्व-जन्मको नहीं मानता। इसीलिए 'नदीम' ख़ुदासे पूछते हैं कि अपराध और पुण्य किये बिना ही तूने यह भेद-भाव क्यों किया ?

बख़्शिश

किसीके हाथमें तूने थमा दी।
ग़रीबोंके मुक़द्दरकी लगामें ॥
किसी बद-बख़्तको[10] बख़्शीं बसदनाज़[11]।
फ़सुर्दा सुहबतें[12] और पज़मुर्दा शामें[13] ॥

---

१. सभ्यताका आदर्श, २. लम्बे परिधान, ३. फटा वस्त्र, ४. लब, ऊँचाई, ५. धन, ६. दुर्भिक्ष पीड़ितकी, ७. पत्थर-हृदय, ८. राजनीतिक, ९. सहानुभूति प्रकट करनेवालोंके, १०. अभागेको, ११. अभिमानपूर्वक, फ़ख़्रके साथ, १२. मुर्झाई हुई संगतें, १३. कुचली शामें, जीर्ण-शीर्ण सन्ध्याएँ।

रहमतका पास

गर यही है तेरी रज़ा[1] यारब !
सरपै अपने पहाड धर लूँगा ॥
हर्फ़ आये न तेरी रहमत पर ।
मैं तो दोज़ख़ क़ुबूल कर लूँगा ॥

और इस जीनेको क्या कहा जाय !

ज़ीस्तका जहर[2]

मेरा ईमान है रज़ा[3] तेरी ।
देख किस बे-दिलीसे जीता हूँ ॥
किस क़दर तल्ख़[4] है शराबे-हयात[5] !
सच समझता हूँ फिर भी पीता हूँ ॥

जब गाँवमें आ ही गये हैं तो इन अन्नदाता किसानोंको भी एक नजर देखते चलिए—

मर्गो-ज़ीस्त[6]

देहातियोंके लबोंपर[7] फनाके नग़मे[8] हैं ।
सुनेहरी फस्ल बिछी जा रही है कट-कटकर ॥
यह किसने छेड़ दिये बरबते-हयातके[9] तार ।
खँडरकी ओटमें खलियानसे[10] ज़रा हटकर ॥

---

१. इच्छा, २. जीवन-विष, ३. इच्छा, ४. कडवी, ५. जीवन सुरा, ६. जीवन-मृत्यु, ७. ओठोंपर, ८. मृत्यु-सगीत, ९. जीवन-वाद्यके, १०. खेतमें लगे अन्नके ढेरसे ।

आमद-आमद

हसीं लबोंपै[1] जड़ी-बूटियोंका रस मलकर।
'सबूही'[2] खेतसे चिड़िया उड़ाने आई है॥
बिछाके सुर्ख़ दुपट्टेको संगरेज़ोंपर।
न जाने किसके तसव्वुरमें[3] मुसकराई है॥

साँवला सलोना

ढोल बजते है दनादनकी सदा[4] आती है।
फ़स्ल कटती है, लचकती है, बिछी जाती है॥
नौजवाँ गाते हैं जब साँवले महबूबका[5] गीत।
एक दोशीज़ा[6] ठिठक जाती है, शरमाती है॥

डूबता चाँद

साफ़ खलियान पै[7] ग़ल्लेका सुनेहरी अम्बार।
चार-सू[8] बैठे है, दहक़ान[9] थके हारे-से॥
डूबते चान्दके हालेमें हों जैसे तारे।
रोये - रोये-से परेशान-से, बेचारे - से॥

१. सुन्दर ओठोंपर, २. प्रियतमाका नाम, ३. ध्यानमें, ४. आवाज़, ५. प्रियतमाका, ६. कुमारी, ७. खेतपर, ८. चारों तरफ़, ९. किसान।

जाने कहाँ

लड़कियाँ चुनती हैं गेहूँकी सुनेहरी बालियाँ।
काटते हैं घास मेड़ों परसे बाँके नौजवाँ॥
एक लड़की पस्तक़द बेरीकी हलकी छाँवमें।
देखती है घासपर लेटी हुई जाने कहाँ॥

अरे साहब आप यह आँखें फाड़-फाड़कर किधर देख रहे हैं—

ख़ूनी लचक

बाजरेकी फ़स्लसे चिड़ियाँ उड़ानेके लिए।
एक दोशीज़ा[1] खड़ी है कंकरोंके ढेरपर॥
वोह झुकी, वोह एक पत्थर सनसनाया, वोह गिरा।
कट गये हैं उनके झटकेसे मेरे क़ल्बो-जिगर[2]॥

और आप यह क्या गुन गुना रहे हैं? मालूम होता है आप तो यहाँ कई बार आ चुके हैं—

बे परवा जवानी

याद है अब भी तेरा बेबाक शबाब[3]।
सुर्ख़ गागरको अंगूठीसे बजाकर गाना॥
सर उठाते हुए आँचलका खिसकके गिरना।
छाज पटख़ाते हुए ज़ुल्फ़का लहरा जाना॥

---

१. कुमारी, २. दिल-कलेजा, ३. निश्छल यौवन

गाँवका चप्पा-चप्पा आपने देख टाला, मगर कभी आपने उन अभागी वधुओं और प्रेयसियोंका भी खयाल किया, जिनके पति या प्रेमी १०-२० रू० की नौकरीके लिए काले कोसों गये हुए हैं। मिलन तो दर किनार बिचारी पतिया पानेको भी तरसती है—

वेचारा

उनको खत लिक्खा था, लेकिन वोह अवतक खामोश ही हैं।
मुझको हैराँ देखके अक्सर हँस देता है हरकारा॥
चिट्ठी आ निकली तो दिलकी डाली कौंपल छोड़ेगी।
उसको क्या मालूम है आख़िर वोह क्या जाने वेचारा?

तर्के-मुहब्वतके बाद

मैं चक्कीकी घुमर-घुमरमें जाने क्यों खो जाती हूँ?
अक्सर पथरीले पाटोंपर सर धरकर सो जाती हूँ॥
मैं तो कबकी अपने मनसे पीतके धब्बे धो बैठी।
जाने किसकी यादमें ऐसी गुम-सुम-सी हो जाती हूँ?

बीवीका खत

मेरी चिट्ठीको वहुत तूल न देना भैया!
इस तरह राहमें खो जाती है, सब कहते हैं॥
कौन-सी फौजमें शामिल हैं मुझे याद नहीं।
बस यह मालूम है ईरानमें वोह रहते हैं॥

परदेसीकी प्रीत

सुन रहा हूँ देरसे चक्कीकी अफ़सुर्दा सदा[1] ।
इस सदामें एक चरवाहीका खोया-खोया गीत ॥
दिल चुराकर हाय जा बसते हैं क्यों परदेसमें ?
कितनी वहशतनाक है, हम बेवफ़ा मर्दोंकी रीत ॥

दाग़दार आँचल

रनमें जानेके लिए तैयार बैठे हैं जवाँ ।
मछलियाँ उभरी हुई शानोंकी[2] चहरों पर बहार ॥
वोह छतोंपर चढ़ रही हैं, भोली-भाली लड़कियाँ ।
आँसुओंसे साफ़ आँचल हो रहे हैं दाग़दार ॥

इस्तकबाल[3]

कच्ची दीवारों पै रक़्साँ[4] है दियेकी रोशनी ।
छतके इक सूराख़से उठता है रह-रहकर धुआँ ॥
किसकी आमद[5] है कि दरवाजे पै हैं बैठे हुए ।
भोले बच्चे, मस्त दोशीज़ाएँ[6] और बाँके जवाँ ॥

---

१. कुम्हलाई आवाज, २. बाहोंकी, ३. स्वागत, ४. नाचती हुई, ५. आगमन, ६. कुँवारियाँ ।

साम्यवादी शाइरके यहाँ यौन-भूख और पेटके भूखकी चीत्कार न हो तो फिर वह साम्यवादी कैसे कहलाये ? नदीमके यहाँ भी ऐसी भूख चीख़ती-चिल्लाती फिरती है। सिर्फ़ इस तरहका एक क़ता दिया जाता है—

बेचारगी

किसकी दस्तक[1] है ? ठहरना तो अभी आती हूँ।
आप ? वल्लाह मसर्रतसे[2] मरी जाती हूँ॥
लेकिन इस वक़्त ? वोह चौपालसे आ जाते हैं ?
जाइए आपके ही सरकी क़सम खाती हूँ॥

ढोंगी ईश्वर-भक्तोंके करिश्मे मुलाहिज़ाँ हों—

दाग़दार सज्दे

इंसाँको सीधी राहपै लानेके नामपर।
इंसानियतका ख़ून पिये जा रहा है तू॥
यूँ सज्देकर रहा है रऊनतसे[3] दम-ब-दम।
जैसे किसीको भीक दिये जा रहा है तू॥

हिन्दियोंकी अकर्मण्यता पर कितना तीखा व्यंग्य किया है—

जवानाने-हिन्दी

सहनमें इक मिट्टीकी इक ढेरीसे बासद इज़्तराब[4]।
एक चिड़िया कर रही है दाने-दुनकेकी तलाश॥
ज़िन्दगी तेरी है ऐ चिड़िया ! अमलकी ज़िन्दगी।
खाना और सोना है हम हिन्दी जवानोंका मआश[5]॥

१. किवाड़ोंपर ठुक ठुक, २. खुशीसे, ३. चालबाज़ीमें, घमण्ड पूर्वक, ४. बेचैनीके साथ, उत्सुकतापूर्वक, ५. काम, फ़र्ज़।

नदीमकी उपमा एवं उदाहरणोंके चन्द नमूने

फूल और मक़तूल

कीकरोंके सफ़ेद काँटों पर।
यूँ अटकते हैं पीले-पीले फूल॥
जैसे नेज़ोंमें हो पिरोये हुए।
हुर्रियत-दोस्त[1] नौजवाँ मकतूल[2]॥

बदलीमें चान्द

चान्द पीपलकी टहनियोंसे परे।
एक बदलीमें मुँह छुपाता है॥
चिलमनोंसे[3] उधर दुपट्टेमें।
तेरा घबराना याद आता है॥

क्या ख़ूब ?

तोड़ लूँ क्यों उमीदकी कलियाँ।
तुम पलटकर न आओगे क्या ख़ूब!
तुमने जो गुलसिताँ सजाया था।
उसको ख़ुद रौन्द जाओगे? क्या ख़ूब॥

१. स्वतन्त्रता प्रिय २. शहीद, ३. चिक़ोंसे।

आँसू

अश्क अटका है तेरी पल्कों पर ।
या मेरी आरज़ूका साया है ॥
या लजाते हुए सितारों का ।
एल्ची[1] आसमाँ से आया है ॥

फ़रेबे-नज़र[2]

रुख़सार[3] है या अक्स है बर्गे-गुलेतर[4] का ?
चान्दका यह झूमर है कि तारा है सहरका ?
यह आप हैं या शोब्दए-ख़्वाबे-जवानी[5] ।
यह रात हक़ीक़त है कि धोका है नज़रका ?

उड़ते हुए तिनके

दोपहर, लू, ग़ुबार, ख़ामोश ।
तिनके यूँ उड़ रहे हैं, गलियोंमें ॥
जैसे मरहूम[6] बापकी दौलत ।
नौजवॉकी रंगरलियोंमें ॥

---

१. सन्देश-वाहक, २. आँखोंका धोका, ३. कपोल, ४. फूलोंका प्रतिबिम्ब, ५. यौवन-स्वप्नका जादू, ६. मृतक ।

आँसुओंके मज़ार

मेरे दीवानावार हँसनेपर ।
मेरे बदख़्वाह[1] मुझसे बदज़न हैं[2] ॥
यह मेरे क़हक़हे नहीं लेकिन—
यह मेरे आँसुओंके मदफ़न[3] हैं ॥

दाग़ हाए-दिल

जब तसव्वुरमें[4] मुग़्हीं मुसकराए ।
यूँ चमक उठते है मेरे दिलके दाग़ ॥
शामके हंगाम[5] जैसे ऐ 'नदीम' !
झिलमिलाते है, धुँदलकोंमें चराग़ ॥

इबरत

फूलकी इक पज़मुर्दा[6] पत्ती घास पै बैठी हाँप रही है ।
नई नवेली एक कली, शाख़ोंमें छुपकर काँप रही है ॥
देखके एक भिकारनको इक मर्दके आगे हाथ बढ़ाये ।
शाहज़ादी ज़ुल्फ़ें बिखराकर, अपना सीना ढाँप रही है ॥

१. बुरा चाहनेवाले, २. नाराज, ३. क़ब्र, मजार, ४. ध्यानमे, ५. समयमें, ६. मुर्झाई ।

इस क़तेमें चार प्रश्नोंके उत्तर देखिए किस ख़ूबीसे दिये हैं कि प्रश्न ओझल हैं, और उत्तर जलवागर हैं—

चार-राज[1]

वलवलोंका नक़ीबें[2], दौरे-शबाब[3]।
अहदे-पीरी[4] है मेम्बर-ओ-महराब[5]॥
यह जहाँ है तग़ीयुरातका[6] नाम।
ज़िन्दगानी है रेशए-सीमाब[7]॥

नदीमके यहाँ इश्क़का मर्तबा—

मुहब्बत खेल नहीं

खेल नहीं है इश्क़की बाज़ी, दिल देना आसान नहीं है।
नोक पै तकलेकी पल्ता है रूईका बारीक-सा धागा॥
कोई मेरे जी में कहता है, यह तो हविर्स[8] है, इश्क़[9] नहीं है।
दिया जला परवाना आया, दिया बुझा परवाना भागा॥

भिन्न-भिन्न पहलुओंपर चन्द क़ते और दिये जा रहे हैं—

हुस्ने-मुन्तज़र

यह नर्म घास पै फूलोंकी महकी-महकी सेज।
यह हार जिनको मैं अब शाम तक पिरोती रही॥
इलाही! आज बरसने न दे घटाओंको।
कि आज शबसे इबारत है ज़िन्दगी मेरी॥

---

१. भेदकी बातें, २. उमगोंका सन्देशवाहक, ३. जवानीका युग है, ४. वृद्धावस्था, ५. व्याख्यान स्थल, ६. परिवर्तनका नाम, ७. पारेकी तरह निखरनेवाली, ८. कामुकता, ९. पवित्र प्रेम।

विचारा रकीब[1]

यह लेने आया तुझे कौन काले कोसोंसे ?
मुझे तो उसकी जवानीपै रहम आता है ॥
कि अनक़रीब खुलेगा वह तल्ख़ राज़[2] उसपर ।
तेरा जमाल[3] मुहब्बतको बेच खाता है ॥

गुफ़्तारे-किरदार

यह छतपै बैठके दामन हवामें लहराना ।
यह गोल-मोल इशारे मुझे पसन्द नहीं ॥
कभी ज़बाँसे मुझे अज़्ने-बारयाबी[4] दे ।
मेरे जुनूँके लिए अर्श[5] भी बुलन्द नहीं ॥

गुरेज़[6]

ख़मोश झीलपै क्यों दौड़ने लगा बजरा ?
हवाएँ तुन्द[7] नहीं है कनारा दूर नहीं ॥
भँवरका ज़िक्र न कर, जिन्दगीका लुत्फ़ न छीन ।
मुझे अभी किसी अंजामका[8] शऊर नहीं ॥

१. प्रतिद्वन्द्वी, २. कटु भेद, ३. सौन्दर्य्य, ४. उपस्थितिका अवसर, ५. आकाश, ६. परहेज, ७. तेज, ८. परिणामका ।

दयारे-हबीबको[1]

इस वक़्त कहाँ इज़्म[2] करके ?
दामनको सँभालकर चली तू ॥
महताबपै[3] तेवरी चढ़ाये ।
पाजेब निकालकर चली तू ॥

सादगी

खद्दरका नया लिबास पहने ।
किस शानसे तू गलीमें आई ॥
सद शुक्र कि जानती नहीं तू ।
कमख़्वाब-परस्त है ख़ुदाई ॥

ऐ मुहब्बत !

ऐ मुहब्बत ! ऐ मेरे जज़बातकी[4] रंगीं उड़ान ।
इब्तदा[5] कितनी रसीली थी तेरी, कितनी गुदाज़[6] ॥
और यह अंजाम[7] जैसे ख़ूँशुदा कलियोंका ढेर ।
और यह तेरी याद जैसे रातके जंगलमें क़ाज़[8] ॥

---

१. अभिसारको २. इरादा, ३. चन्द्रमापर, ४. भावनाओंकी, ५. शुरुआत, ६. आनन्ददायक, ७. परिणाम, ८. राजहंस ।

मुहब्बतके खण्डहरोंमें

हाँ इसी वादीमें[1] अपनी दास्तानें दफ़्न हैं।
हाँ इसी चोटीपै लहराया था आँचल आपका ॥
हाँ इसी झरनेमें जब जलते थे तारोंके चराग़।
किस क़दर शिद्दतसे दिल होता था वेकल आपका ॥

मासूमियत

देखरी तू पनघटपै आकर मेरा ज़िक्र न छेड़ाकर।
मैं क्या जानू कैसे हैं वोह, किस कूचेमें रहते हैं ?
मैंने कब तारीफ़ें की है, उनके बाँके नैनोंको।
"वोह अच्छे ख़ुशपोश जवाँ हैं" मेरे भैया कहते हैं ॥

अदम[2]

यह आया ज़ीस्तका[3] धुँधला कनारा।
यहाँसे अब कहाँ जाना पड़ेगा ?
न देखो घूरकर ज़ालिम अँधेरो !
समझता हूँ जहाँ जाना पड़ेगा ॥

---

१. घाटीमें, २. नास्ति, ३. ज़िन्दगीका।

निराले नाज

मेरी बेखबरियोंका राज़[1] क्या है ?
मेरा अंजाम[2] क्या आग़ाज़[3] क्या है ?
अगर यह नाज़[4] है तेरा तो या रब !
यह नाज़ औरोंसे कर यह नाज क्या है ?

फलसफ़ीसे[5]

तुझे मालूम क्या मर्दे-ख़िरदमन्द[6]
कि मेरे शौक़की मंज़िल कहाँ है ?
ख़िरद नन्हीं-सी इक महदूद[7] बस्ती[8] ।
मुहब्बत एक ख़ला-ए-बेकराँ[8] है ॥

राज़े-जानाना[9]

मुहब्बतमें गवाँदी ज़ीस्त[10] लेकिन ।
समझमें राज़े-जानाना न आया ॥
लगाया शमअने सीनेसे जिसको ।
पलटकर फिर वोह परवाना न आया ॥

१. भेद, २. नतीजा, ३. शुरुआत, ४. अभिमान, ५. दार्शनिकसे, ६. अक़्लमन्द, ७. सीमित, ८. असीमित क्षेत्र, ९. प्रेयसीका भेद, १०. ज़िन्दगी ।

हमा ओस्त

मैंने मासूम बहारोंमें तुझे देखा है।
मैंने मोहूम सितारोंमें तुझे देखा है॥
मेरे महबूब तेरी परदा नशीनीकी कसम।
मैंने अश्कोंकी क़तारोंमें तुझे देखा है॥

हमनफ़स

ऐ सखी! रूप यह क्या तूने बना रक्खा है?
पपड़ियाँ होंटोंपै और बाल तेरे आवारा॥
मैं सहेली हूँ तेरी, मुझसे यह परदा कैसा?
क्या कलेजेमें तेरे तीर किसीने मारा?

मेरे शेर

तुम भी ऐ दोस्तो अवामके साथ।
इस्तलाहोंकी रौ में बहते हो॥
यह जवानीके चन्द सपने हैं।
तुम जिन्हें मेरे शेर कहते हो॥

एक रात

उमड़ आई घटा, तारोंकी महफ़िल हो गई बरहम।
मुसाफ़िर थम गये सहराओंकी वीरान राहोंमें॥
हम उनकी धुनमें टीलेपर खड़े हैं दम-ब-खुद लेकिन।
वोह महवे-ख्वाब होंगे, अपनी रंगी बारगाहों में॥

घनघोर घटा

उफ़क़से इक घटा उट्ठी गरजती, गूँजती गाती।
गुज़रकर मेरे वीरों खेत परसे दूर जा बरसी॥
कुछ ऐसे मैंने देखा उसकी जानिब जिस तरह मुफ़लिस।
अमीरोंकी निगाहे-तुन्दमें ढूँढ खुदा तरसी॥

इन्तज़ार

उफ यह तवील रात यह पुरहौल ज़ुल्मतें।
बैठा हूँ कितनी रातसे आग़ोश वा किये॥
आराइशे-जमालमें तुम हो अभी मगन।
और मैंने आसमानके तारे भी गिन लिये॥

आमदे-शबाब

मेंहदी रचाके पाँवमें यह नाचनेका शौक़।
ज़ुल्फ़ोंमें शाना फेरके यह भागनेकी धुन॥
शायद किसीकी मस्त जवानीके हैं निशाँ।
यह सुबह-सुबह सोनेकी, शब जागनेकी धुन॥

मैं न भूलूँगा

काँटोंमें लोटता फिरूँगा मैं।
ख़ून पी लूँगा आग छूलूँगा॥
भूलनेवाले तेरी भूल मगर।
मैं न भूलूँगा, मैं न भूलूँगा॥

नफ़सी-नफ़सी

हर कोई है अपनी आशाइशकी[1] धुनमें बेक़रार।
अपने जाती मुद्दआसे[2] कोई भी बाला[3] नहीं॥
गो पतंगोंकी शिकायत भी बजा है मेरे दोस्त!
शमअके आँसू भी कोई पूछनेवाला नहीं॥

सोना और रोना

बादशाहोंकी मोअत्तर ख़्वाब-गाहोंमें[4] कहाँ?
वोह मज़ा जो भीगी-भीगी घासपर सोनेमें है॥
मुतमइन लोगोंकी उजली मुसकराहटमें कहाँ?
लुत्फ़ जो इक दूसरेको देखकर रोनेमें है॥

नग्मए-शादी, नोहे-ग़म

गूँज है शहनाइयोंकी धूम है गाँवोंमें आज।
फिर रही है खेलती, हँसती, मचलती क्यारियाँ॥
दूर वीरानोंमें इक चुपचाप क़ब्रिस्ताँके पास।
हो रही है एक सादा क़ब्रकी तैयारियाँ॥

---

१. सुखकी, २. स्वार्थसे, ३. व्यक्ति ऊँचा, ४. सुगन्धित शयन-कक्षोंमें।

धुँधली पगडंडी

शामको कल इक मुसाफ़िरने किया मुझसे सवाल।
"ख़त्म हो जाती है इस वादीकी[1] पगडंडी कहाँ" ?
उन धुँदलकोंकी तरफ़ मैंने इशारा कर दिया।
और भर्राई हुई आवाज़में बोला—"वहाँ" ॥

बे-मंज़िल सफ़र

आस्माँ मबहूत[2] था, तपती ज़मीं ख़ामोश थी।
एक वीराँ रास्ते पर आ रहा था एक जवाँ ॥
मैंने पूछा—"ऐ मुसाफ़िर ! किस तरफ़ जायेगा तू" ?
काँपती आवाज़में बोला—"मेरी मंज़िल कहाँ" ?

ख़ुश आमदेद[3]

दूर वोह नन्हेंसे स्टेशनपै इक गाड़ी रुकी।
सीना ताने इक जवाँ उतरा है किस अन्दाज़से ॥
पास ही बूटी-सी बेरीके तले एक ख़ूबरू।
झेंपती डरती सिमटती उठ रही है नाज़से ॥

---

१. घाटीकी, २. हक्का-बक्का हैराँ, ३. स्वागतम्।

वोट

वोह किसी बे-ख़ौफ़ दहक़ानीने[1] मोटर रोक ली ।
इक रईस उतरा है बरसाता हुआ नफ़रतकी[2] भाप ॥
क्या शिकायत है? वोह गुर्राया, यह दहक़ानी बढ़ा ।
"वोट ले लेते है और रोटी नहीं देते हैं आप" ॥

ज़िन्दगीका खेल

हाय क्यों फ़ितरतको[3] मासूमोंपै रहम आता नहीं ।
मुख़्तसर हैं किस क़दर, यह ज़िन्दगीका खेल भी ॥
सो रही है एक सादा-सी लहदमें[4] बेख़बर ।
वोह हसीं लड़की जो कल खेतोंमें महवे-रक़्स[5] थी ।

मौहूम आवाज

रूहके पुरहौल वीरानोंमें पिछली रातको ।
तैरती है एक दोशीज़ाकी यह मौहूम लै ॥
राह तकती हूँ तेरा, बैठी हुई परदेशमें ।
तू कभी धोका नहीं देगा मुझे मालूम है ॥

---

१. देहातीने, २. घृणाकी, ३. प्रकृतिको, ४. क़ब्रमें, ५. नृत्यमें लीन ।

दर्दे-बेदरमाँ[1]

किसे शिकवा है किस काफ़िरको ग़म है।
भला यह दर्द क्या दरमाँसे कम है॥
वोह आये इस तरह बहरे - अयादत[2]।
कि गरदन ख़म है चश्मे - नाज़ नम[3] है॥

मेरा वतन

जहाँ फूलोंकी ख़ुशबू बिक रही है।
मुझे ऐसे चमनसे दूर लेजा॥
जहाँ ईमानको सजदा रवाँ हो।
मुझे ऐसे वतनसे दूर लेजा॥

अयादत

ख़ता मुआफ़ अयादतका[4] वक़्त बीत गया।
मेरी उम्मीदके शोलोंपै[5] ओस पड़ने लगी॥
दवाए - दर्दे - निहाँकी[6] तलाश है बेसूद[7]।
मुझे ख़ुदाके लिए एड़ियाँ रगड़ने दो॥

—

१. असाध्य रोग, २, मिज़ाजपुर्सीको, ३. अभिमानी नेत्र अश्रुपूर्ण, ४ जाइज़, ५. बीमारका हाल-चाल पूछनेका, ६. अंगारोंपर, ७. गुप्त दर्दकी दवा, ८ व्यर्थ।

ग़म्माज़ लब[1]

ख़ुदाके वास्ते प्यारी मेरे क़रीब न आ।
मेरी तरसती हुई ज़िन्दगीपै रहम न खा॥
कि आज सुबहको देखा है तेरे होंटोंपर।
वोह बोसा[2] जिसमें लबे-ग़ैर[3] कपकपाता था॥

इब्तदा[4]

अभी तो चन्द बगोले उठे थे सहरामें[5]।
ग़ुबारे-राहमें[6] क्यों कारवाँ[7] भटकने लगा?
अभी तो आयेंगे पुरख़ौफ़ आँधियोंके परे।
अभीसे काँटा-सा क्यों क़ल्बमें[8] खटकने लगा?

ईदका रोज

ईदका रोज़ था सब पीरो-जवाँ हँसते रहे।
लड़कियाँ गाती रहीं नीमके छतनारोंमें॥
टक-टकी बाँधे हुए महव रहे मेरे ख़याल।
दूर उफ़क़ पारके उजड़े हुए नज़्ज़ारोंमें॥

---

१. चुगलख़ोर होंट, भेद बतानेवाले, २. चुम्बन, ३. किसी औरका, ४. प्रारम्भ, ५. जंगलमें, ६. मार्गके ग़ुबारोंमें, ७. यात्रीदल, ८ दिलमें।

मुसकराती हुई पटड़ी

घुस गई है वोह सुरंगोंमें लचककर गाड़ी।
और फ़ज़ाओंमें मुअ़ल्लक़ है वोह अंजनका धुआँ॥
जाने क्यों एक हसीं और परेशाँ लड़की।
देखती है वोह चमकती हुई बिजलीका समाँ॥

बेसूद दुआएँ

क्यों मेरे जीनेकी दिन-रात दुआ माँगती हो।
जंगमें ख़ाक बने कोई मेरा रखवाला॥
आजकल ही कोई ख़त आयेगा और सुन लोगी।
तोपने एक सिपाहीको भसम कर डाला॥

वीरान क़ब्र

दफ़्न है इस मिट्टीमें वोह दिल, जिसमें इश्क़का दोज़ख भड़का।
ऐ बिजली बादलसे उतरकर इस ढेरीका बोसा ले ले॥
जीते जी जिस बद किस्मतने इक लमहा भी चैन न पाया।
बहतर है मरकर भी उससे कोई तुन्द बगोला खेले॥

ऐतराफ़े-शिकस्त

ख़ाक-नशींपै रहम न फ़रमा किसरे-हसींमें रहनेवाली!
जड़की आख़िर क्या सुध लेगी, सरूकी सबसे ऊँची डाली॥
तू फूलोंमें सोनेवाली, मैं काँटोंमें बसनेवाला।
तेरा हुस्न नहीं कर सकता, मेरी मुहब्बतकी रखवाली॥

अब आपके जलालो-जमालसे चन्द नज़्में और ग़ज़लके शेर चुनकर दिये जा रहे हैं—

आख़िरी सिजदा

मेरी ज़िन्दगी तेरे साथ थी, मेरी ज़िन्दगी तेरे हाथ थी
मेरे क़ल्बमें[1] तेरा नूर[2] था, मेरे होंट पर तेरी बात थी
मेरी रूहमें[3] तेरा अक्स[4] था, मेरी साँसमें तेरी बास थी
तेरे बसमें मेरा शबाब[5] था, तेरे पास मेरी हर आस[6] थी
तेरे गीत गाती थी जब भी मैं, मुझे छेड़ती थीं सहेलियाँ
मगर उन पै खुल न सकीं कभी मेरी ज़िन्दगीकी पहेलियाँ
मैं तेरे जमालमें[7] महव[8] थी, मैं तेरे खयालमें मस्त थी
मुझे क्या समझतीं वह लड़कियाँ कि मैं अपने हालमें मस्त थी
तेरी शानमें मेरी शान थी, तेरा दबदबा मेरा नाज़[9] था
तेरी दिलबरी मेरी जान थी, तेरी आशिक़ी मेरा राज़[10] था

मगर अब शबाब गुज़र गया तो तेरा नियाज़[11] भी मर गया
मेरे रुख़पै[12] झुर्रियाँ देखकर तू पलटके जाने किधर गया ?
मैं तेरी तलाश करूँ मगर, मेरा पस्तियोंमें मुक़ाम[13] है
तू मिस्ले-माह तमाम[14] है, तू रहीने - रफ़अ़ते-बाम[15] है
अगर एक पलके लिए कभी तू बुलन्दियोंसे उतर सके
मेरे उजडे - पजड़े दयारसे[16] अगर एक बार गुज़र सके

---

१. दिलमें, २. प्रकाश, ३. आत्मामें, ४. परछाईं, प्रतिबिम्ब, ५. यौवन, ६. आशा, ७. रूप-यौवन, ८. लीन, ९. अभिमान, १०. भेद, ११. आकर्षण, १२. कपोलोंपर, १३. नीचे स्तरमें निवास है, १४. पूर्ण चन्द्रके समान, १५. ऊँची उड़ान लेनेका अधिकारी है, ऊपरी मंजिलोंमें निवास है, १६. स्थानसे।

तो, मेरे खलूसका वास्ता[1], मेरी आर्ज़ू[2], मेरी आस[3] आ
मेरी बात सुन, मेरी बात सुन, मेरे पास आ, मेरे पास आ
कोई इल्तिजा[4] न करूँगी मैं, कोई दोश भी न धरूँगी मैं
तेरे पाये-नाज़ पै[5] सर झुकाके बस एक सिज्दा[6] करूँगी मैं

मुनव्वर ज़ुल्मतें[7]

–१६ में से ९–

धुँदली शामोंमें लहकते हुए आँचलकी क़सम
जिन्दगी तुझपै है इतराई हुई
रफअते-कोहपै[8] मचले हुए बादलकी क़सम
खिल्वते-दिलपै है तू छाई हुई
मैं तुझे छोड़के परदेश चला आया हूँ
बात गो क़ाबिले-इज़हार नहीं
तेरे उम्मीदके महलोंको गिरा आया हूँ
अपने इस जुर्मसे इन्कार नहीं
लेकिन इखलाककी दुनियाके क़वानीने-कुहन[10]
इश्क़ पर रहम नहीं खा सकते
यह गुफाएँ, यह सनोबर[11], यह खँडर, यह गुलशन
किस्मतोंसे नहीं टकरा सकते

---

१. प्रेमकी सौगन्द, स्नेहकी दुहाई, २. अभिलाषा, ३. आशा, अविलम्ब, ४. माँग, फर्माइश, ५. चरणोंमें, ६. प्रणाम, ७. प्रकाशमान अँधेरियाँ, ८. पर्वतपर, ९. हृदयके अंतस्थलमें, १०. पुराने नियम, ११. चीड़के पेड़ ।

पेट भरनेके लिए हुस्नसे रिश्ता तोड़ा
बेचकर फूल ख़रीदे काँटे
जूए-ज़रींमें[1] मुहब्बतका सफ़ीना[2] छोड़ा
सीपियाँ पाईं सितारे बाँटे

....

हाँ मुझे याद है बालोंमें वोह छिपते हुए गाल
पतले होंटों का वोह हुस्ने-लरजाँ
वोह झपकती हुई आँखें, वोह बहकती हुई चाल
वोह हयाओंमें तक़ाज़ेसे निहाँ

....

आह लेकिन यह ज़माना था बस इक ख़्वाबे-हसीं[3]
नींदकी एक दिलावेज़[4] उड़ान
तेरी मासूम जवानीका ख़याले - शीरीं[5]
बरबते दिलकी[6] लरजती हुई तान
मादहे-रूह पै[7] इक संग-गराँ[8] बनके गिरा
पंखड़ी इश्ककी मुरझा-सी गई
नज़र आने लगा आलममें ग़ुबार उड़ता हुआ
रूह चौंक उठी थी,घबरा-सी गई

....

१. प्रकाशमान नहरमें, २. प्रेम-नौका, ३. सुन्दर स्वप्न, ४. चित्ताकर्षक, ५. मधुर चिन्तन, ६. हृदयरूपी बाजेकी, ७. शरीर और आत्मापर, ८. कठोर पत्थर।

तो, मेरे ख़लूमका वास्ता[1], मेरी आर्ज़ू[2], मेरी आस[3] आ
मेरी बात सुन, मेरी बात सुन, मेरे पास आ, मेरे पास आ
कोई इल्तिजा[4] न करूँगी मैं, कोई दोश भी न धरूँगी मैं
तेरे पाये-नाज़ पै[5] सर झुकाके बस एक सिजदा[6] करूँगी मैं

मुनव्वर ज़ुल्मतें[7]

-१६ में से ९-

धुँदली शामोंमें लहकते हुए आँचलकी क़सम
जिन्दगी तुझपै है इतराई हुई
रफ़अते-कोहपै[8] मचले हुए बादलकी क़सम
खिल्वते-दिलपै[9] है तू छाई हुई
मैं तुझे छोडके परदेश चला आया हूँ
बात गो क़ाबिले-इज़हार नहीं
तेरे उम्मीदके महलोंको गिरा आया हूँ
अपने इस जुर्मसे इन्कार नहीं
लेकिन इख़लाक़की दुनियाके क़वानीने-कुहन[10]
इश्क़ पर रहम नहीं खा सकते
यह गुफाएँ, यह सनोबर[11], यह खँडर, यह गुलशन
किस्मतोंसे नहीं टकरा सकते

---

१. प्रेमकी सौगन्द, स्नेहकी दुहाई, २. अभिलाषा, ३. आशा, अविलम्ब, ४ माँग, फर्मादश, ५. चरणोंमें, ६. प्रणाम, ७. प्रकाशमान अँधेरियाँ, ८. पर्वतपर, ९. हृदयके अंतस्थलमें, १०. पुराने नियम, ११ चीडके पेड।

बैठी होगी किसी दीवारके सायेमें ख़मोश !
अपनी नौख़ेज़[1] जवानीके नशेमें मदहोश
कैफ़[2] आँखोंमें तमन्नाओंका सीनेमें ख़रोश[3]
ऐशे-इमरोज़की[4] दुनियामें न फ़र्दा[5] है,न दोश[6]
ओढनी सरपै सियाह रंगकी डाले होगी
अपने उड़ते हुए बालोंको सम्भाले होगी

चाप सुनते ही मेरे पाँवकी चौंक उठ्ठेगी
दिले-मासूममें इक आग-सी हौंक उठ्ठेगी
जब मुझे सामने पायेगी तो शर्मायेगी
सर झुकायेगी, लजायेगी, सिमट जायेगी
मैं बुलाऊँगा तो पल्कोंको वह झपकायेगी
और जिस वक़्त बहम[7] हमको हँसी आयेगी
वह यह पूछेगी-"भला आप यहाँ क्यों आये" ?
मैं कहूँगा—"यह मेरे वस्लमें[8] पूछा जाये"

माँद पड़ जायेंगे जब चर्ख़पै तारोंके हजूम
फैल जायेंगे पुर इसरार गुबारोंके हजूम

१. उभरती हुई,नई, २. मस्ती, ३. शोर,४. वर्तमान गुज़री, ५. कल आनेवाला दिन, ६. गुज़री हुई रात, ७. परस्पर, ८. मिलनमें ।

यह बुज़ुर्गोंका बनाया हुआ बेकैफ़ निज़ाम[1]
एक लानत है जवानोंके लिए
उफ़ यह मुजरे, यह खुशामद, यह क़सीदे, यह सलाम
सीसा पिघला हुआ कानोंके लिए

. . . .

मेरी महबूब[2] मेरे इश्क़से बेज़ार न हो
इन अँधेरोंमें उजाला होगा
देख पैमाने[3]-वफ़ा कुश्तए-अफ़कार[4] न हो,
बोल इख़लासका[5] बाला होगा

परवाज़े-जुनूँ[6]

– ६ बन्द में से ४ –

. . . .

शाम पड़ते ही वह बस्तीसे निकल आती है
सामने उजड़े हुए क़स्रमें[7] छुप जाती है

---

१. कुरुचिपूर्ण व्यवस्था, २. प्रियतमे, ३. निर्वाह करनेकी प्रतिज्ञा, ४. चिन्ताओंसे नष्ट, ५. स्नेह प्रेमका। ६. उन्मादकी उड़ान, ७. खण्डहरमें,

नौकरी पर जाते हुए

– २७ में से १० बन्द –

मुँडेरकी आड़ लेके शायद ज़ईफ़[1] माँ मेरी रोती होगी
मेरे तसव्वुरमें[2] आँसुओंकी अटूट लड़ियाँ पिरोती होगी
पछाड़ें खा-खाके मेरी आपा[3] गरीब बेहोश होती होगी
मेरी सबूही[4] फ़राख़[5] आँगनके ऐन मरकज़में[6] सोती होगी
मेरे घरौंदेका ज़र्रा-ज़र्रा मुझे न पाकर उदास होगा
मगर सुना है कि अबके लाहोरका सफ़र मुझको रास होगा

तलाश है नौकरीकी लेकिन दिमागमें आग जल रही है
जिगरमें दोज़ख़ भड़क रहा है, रगोंमें बिजली मचल रही है
गला नजाबतका[7] कट रहा है, ख़ुदीकी[8] तलवार गल रही है
'नदीम'की आहनी जवानी[9] अजीब साँचेमें ढल रही है
मैं जानता हूँ कि रौंदी जायेगी नौकरीमें मेरी जवानी
फ़साना गोई[10] न हो सकेगी, पनप सकेगी न शेर-ख़्वानी[11]

उठूँगा दफ़्तरसे जब खुली मेज़पर कई फ़ाइलें जमाकर
तो अपने गाँओंपै आके मैं इलाऊँगा तसव्वुरके[12] पर लगाकर
"दिया बुझादे, दिया बुझादे, न रो, न रो, मेरी प्यारी अम्मी!
सितारे अश्कोंके इतनी इफ़रातसे[13] न खो मेरी प्यारी अम्मी!

---

१. वृद्ध, २. ध्यानमें, ३. बड़ी बहन, ४. सुबूही नामक बेटी, ५-६. विस्तृत चौकके बीचमें, ७. शराफ़तका, भद्रताका, ८. स्वाभिमानकी, ९. लोहे-जैसी सख़्त, फ़ौलादी जवानी, १०. उपन्यास-लेखन, ११. शायरी, १२. चिन्तनके, कल्पनाके, १३ अधिकतासे।

बोलेगी धीरेसे रखकर मेरे शानेपर[1] सर
"दिलमें क़ुव्वत[2] हो तो माहौलसे[3] क्या ख़ौफ़ो-ख़तर
मैं किसी औरकी हो जाऊँ तो तुफ़ है मुझपर
मेरे इस अहदके[4] ज़ामिन[5] हैं यह दो दीदए-तर[6]
दहरका[7] ख़ौफ़ नहीं, आप अगर मेरे हैं
आप इक आज नहीं, ज़िन्दगी भर मेरे हैं"

यह खँडर है ! यह फ़सीलें हैं ! मेरे दिल ! ख़ामोश
हो न जाये वह कहीं शर्मके मारे रू-पोश[8]
लेकिन अफ़सोस, यह क्या सानहा[9] अब याद आया
इसने माहौलके अफ़रीतसे[10] धोका खाया
इश्क़ो-उल्फ़तमें न ग़ुरबतका मदावा[11] पाया
सूरज उभरा तो मेरा चाँद गहनमें आया
बिक गई वह किसी ज़रदार[12] ज़मींदारके हाथ
और सौंपा मुझे तक़दीरे-फ़सूँकारके[13] हाथ

---

१. कन्धेपर, २. शक्ति, ३. वातावरणसे, दुनियासे, ४. प्रतिज्ञाके, ५. साक्षी, गवाह, ६. अश्रुपूर्ण नेत्र, ७. दुनियाका, ८. अन्तर्धान, ९. घटना, १०. बदनामीके भूतसे ११. ग़रीबीका इलाज, १२.धनिक, १३. जादूगर भाग्यके भरोसे।

तुम भी मेरे हाल पर हो नौहा-ख़्वाँ[1] ?
शमअ़ परवानेको रोये ! अल्लामाँ !
फ़स्ले-गुल आई नशेमन जल गये
हाय दीवानोंकी दूरन्देशियाँ
तेरी ठोकर है मदारे-ज़िन्दगी[2]
तेरे ठुकराये हुए जायें कहाँ ?

हाँ-हाँ अँधेरी शब है, चाँद आज उभरा कब है ?
कर लीजिए किनारा, गढ़ लीजिए बहाना
मुझको 'नदीम' हमदम[3] बे-ख़ानुमाँ[4] न जाने
सब्ज़ेका[5] मेरा बिस्तर, तारोंका शामियाना

थी उनको निगाहोंमें बहुत दूरकी मंज़िल
मंज़िलपे पहुँचते ही जो मंज़िलसे सिधारे

बस ऐ बहार ! तेरी ज़रूरत नहीं रही
बुलबुलने कर दिया है, नशेमन सुपुर्दे-आग

वह आड़में पर्देके तेरी नीम-निगाहों[6]
टूटे हुए इक तीरका टुकड़ा है जिगरमें

१. शोकाकुल, २. जीवनका लक्ष्य, ३. इष्ट मित्र, ४. बे घर-बार, ५. हरियाली गालिचा, ६. कनखियों अर्थात्, ७. अधखुली आँखें।

मैं लौट आऊँगा कुछ कमाकर हज़ाँ[1] न हो मेरी प्यारी अम्मी !
बस अब तो छतसे उतर खटोलेपै जाके सो मेरी प्यारी अम्मी !
तेरा 'नदीम' एक रोज लौटेगा नौकरीका खज़ीना[2] लेकर
खज़ीना लेकिन यह पायेगा अपनी शाइरीका दफ़ीना[3] देकर

ग़ज़लोंके अशआर

मुसकराना जिसे नसीब न हो
वह जवानी भी क्या जवानी है

इसी पै नाज़[4] करेगी मेरी फ़सुर्दा दिली[5]
कि मैं हज़ूरकी महफ़िलमें बारयाब[6] न था

जबसे मैं क़रीब हूँ तुम्हारे
हर चीज़को दूर देखता हूँ

रुकनेका नाम तक न लिया अहले-शौक़ने
दम लेनेको जो बैठे वह बैठे ही रह गये
सैले-हयातमें[7] है हम इंसान ख़ारो-ख़स[8]
मौजोंसे चन्द लमहे लड़े और बह गये
अहले हविश[9] तो पीके चले भी गये 'नदीम' !
और आप दस्ते-नाज़का[10] रुख तकते रह गये

१. दुःखी, २. खज़ाना, ३. गड़ा हुआ कोश, ४. अभिमान, ५. मुर्झाया दिल, नीरस हृदयता, ६. उपस्थित न होनेका अधिकारी, ७. जीवनके बहावमें, ८. काँटे-घास, ९. कामुक, १०. माशूक़के हाथका संकेत।

आप क्यों सामने नहीं आते
आप क्यों रूहमें[1] समाये हैं ?
मुख्तसर[2] यह है कि दास्ताने-हयात[3]
फूल ढूँढे हैं ख़ार[4] पाये हैं
मैं समझता हूँ बर्क़[5] चमकी है
लोग कहते हैं आप आये हैं
आप रस्ता न भूल जायें कहीं
आँसुओंके दिये जलाये हैं

खिज़ाँ नसीब मुक़द्दरका दिल न दुख जाये
चमनमें शोर है, फ़स्ले-बहार आनेका
ख़ुदा तो सुनता है लेकिन ख़ुदासे माँगे कौन
कि हौसला न रहा क़िस्मत आज़मानेका

दिया-सा मेरे क़ल्बमें[6] टिमटिमाया
ज़रा देखना यह हमीं कौन आया ?

पर्दा दर पर्दा, नक़ाब अन्दर नक़ाब
ज़िन्दगी कितना रसीला राज़[7] थी ?

मेरी निगाहका मक़सूद[8] रूए-यार नहीं
निज़ाए-जल्वा[9] हूँ दीवानए-बहार[10] नहीं

---

१. प्राणोंमें, २. संक्षिप्त, ३. जीवन-कथा, ४. काँटे, ५. बिजली, ६. दिलमें, ७. राज़, ८. मक़सद, उद्देश्य ९. जल्वा देखनेका इच्छुक १०. बहारका दीवाना।

गो मेरी बेकसीका कोई राज़दाँ[1] नहीं
तुमसे तो मेरी बेपरो-बाली निहाँ[2] नहीं
अब बर्क़को 'नदीम' मेरी क्यों तलाश है ?
मुद्दतसे शाख़े-गुलपै मेरा आशियाँ नहीं

तेरी क़सम कि सफ़ीने[3] मेरी उमीदोंके
डुबोके आज किनारे लगा दिये तूने

मैं ही परोंपै तिनके उठाकर बढ़ा उधर
बिजलीकी ज़दमें[4] वर्ना मेरा आशियाँ न था

नक़ाब डाल रखे हैं, दिले-फ़सुर्दापर[5]
कोई समझ न सका मेरे मुसकरानेको
मुझे भी रुख़सते-तामीरे-आशियाँ[6] दीजे
चले हैं, आप अगर बिजलियाँ गिरानेको

हर तरफ़ छा रही है तारीकी[7]
आओ मिल-जुलके ज़िक्रे-यार करें
जिस्म भी उनका जान भी उनकी
हाय क्या चीज़ हम निसार[8] करें ?

---

१. भेदी, २. पोशीदा, छिपी, ३. नौकाएँ, ४. रास्तेमें, निशानेमें, ५. कुम्हलाये दिलपर, ६. नीड़ बनानेकी आज्ञा, ७. अँधेरी, ८. न्योछावर।

मैं ज़ुल्मतोंसे[1] उलझ-उलझकर यह दौर[2] नज़दीक ला रहा हूँ
मुसाफ़िरोंकी तलाशमें जब नजूमके कारवाँ[3] रहेंगे

यह रोज़-रोज़का झगड़ा चुके तो चैन आये
रखूँगा बर्क़पै[4] बुनियाद आशियानेकी

वह कौन है जो मेरे गरजते सक़ूतका मुद्दआ न समझा
मेरे इरादोंकी चर्ख़गीरीको सिर्फ़ मेरा ख़ुदा न समझा

मैं ख़ुद-शनास[5] सही, ख़ुश मज़ाक़ है मैय्याद
सियाह दाममें तारोंके[6] नुक़रई दाने[7]

बिछादे उनको मेरी बेक़रार बाहों पर
कि बारे-ज़ुल्फ़से[8] थक जायेंगे तेरे शाने

मुझे बहिश्तमें[9] इन्कारकी मजाल कहाँ
मगर ज़मीन पै महसूस[10] यह कमी तो करूँ

यह तुझको देखके क्यों लोग मुझको देखते हैं
यह तेरी जल्वागिरी है कि मेरी पर्दादरी
ज़मीं उदास, सितारे उदास, चाँद उदास
यह पिछली रात है, या तेरी शाने-कमनज़री[11] ?

---

१. अँधेरोंसे, २. युग, ३. नक्षत्रोंके दल, ४. बिजलियोंपर, ५. स्वयंसे भिज्ञ, ६. काले तारोंके जालमें, ७. धवल श्वेत, रजत नाजके दाने, ८. बालोंके बोझसे, ९. जन्नतमें, १०. अनुभव, मालूम, ११. दृष्टिकी कमीकी शान।

यह बातें अहदे-जवानीकी मैंने किससे कहीं
मेरे क़रीब वह बैठे हुए भी है, कि नहीं ?
वह एक तंग-से कूचेमें सरसरी मुठभेड़
बस इतनी बात है, फिर क्या हुआ था, याद नहीं !

न डालो अक्से-रुख़े-नाज़ मेरी आँखो पर
बुझे चिराग़ ही अच्छे इन्हें जलाओ नहीं

कलियाँ रोती है कि भँवरोंने उन्हें क्यों ताका
भँवरे हैरान है, कलियोंको निखारा किसने ?

जब उलझना है तुझे काँटोंसे तपती धूपमें
सर्द तहख़ानेमें फूलोंका बिछौना छोड़ दे
उसके दामनमें अगर शब[1] है, सितारे भी तो है
गर्दिशे-अफ़लाकमे[2] मायूस[3] होना छोड़ दे

ख़्वाबोंकी बस्तियाँ न बसायें तो क्या करें
हिम्मत शिकिन हों उनकी हयाएँ तो क्या करें

पासबानोंको[4] जब्रकी ताकीद[5]
और दावा जहाँ-पनाहीका[6] !

---

१. रात, २. आकाशकी मुसीबतोंमे, ३. निराश, ४. द्वारपालोंको ५ सख़्ती करनेका आदेश, ६. संसारको शरण देनेका !

बहुत मुश्किल है, जीना तेरे वादोंके भरोसेपर
जिगर कट-कट गया तब जाके आख़िर वक़्ते-शाम आया

सर भी ऐसा हो जो मिज़्दोंकी[1] हक़ीक़त समझे
दर[2] भी ऐसा हो जो शाने-जबीं-साई[3] हो

तमहीदे-इल्तफ़ात[4] है, यह सुर्ख़िए-हया[5]
जैसे शफ़क़ दलील सहरके ज़हूरकी[6]

क्या जाने किस ख़यालमें गुम था असीरि-नौ[7]
अपने परोंको ख़्वाबमें फैलाके रह गया

मेरे-हश्र[8] यह कौन मसनद-नशीं है ?
कोई देखा भाला सुरैया-जबीं[9] है

मुझको ही तलबका ढब न आया
वर्ना तेरे पास क्या नहीं था

हश्रमें[10] रह-रहके क्यों गिरता है आँचल आपका
जाने किस आशुफ़्ता[11]-सरकी ख़ाक दामनगीर[12] है

१. मत्था टेकनेकी शौक़ीन, २. द्वार, ३ मत्था टेकने योग्य, ४. कृपा करनेकी भूमिका, ५. शर्मसे सुर्ख़ लाल होना, ६. जैसे प्रातःकाल होनेका संकेत करने लिए है, ७. नवीन क़ैदी, ८. क़यामतके, ९. नक्षत्र जैसा चमकता मस्तकवाला, (माशूक़), १०. क़यामतमें, ११. उद्विग्न, सिर फिरी, १२. काँटेके दामनमें अटकी हुई।

तेरी तलबका तक़ाज़ा है ज़िन्दगी मेरी
तेरे मुक़ामका कोई पता नहीं; न सही
तुझे सुनाई तो दी यह ग़रूर क्या कम है
अगर क़ुबूल मेरी इल्तिजा[1] नहीं न सही
तेरी निगाहमें हूँ तेरी बारगाहमें[2] हूँ
अगर मुझे कोई पहचानता नहीं न सही
मैं इब्तदाई[3] सुखोंके सहारे जी लूँगा
मेरे दुःखोंकी कोई इन्तहा[4] नहीं न सही

इस क़दर वज्द[5], इस क़दर मस्ती !
पहला-पहला गुनाह क्या कहने !

जहाँवाले हमें सिर्फ़ इसलिए दीवाना कहते हैं,
कि हम जो बात भी कहते हैं, वे-बाकाना[6] कहते हैं

हम खाक नशीनोंमें[7] इस ख़ाक नशीनीपर
क्यों तेरी मुरव्वतके[8] चर्चे हैं, ख़ुदा जाने ?
ज़ुल्फोंने 'नदीम' ऐसा तूफ़ान उठाया है
किस्मतको भी शायद ही यूँ आते हों बल खाने

तू सामने आ जाये तो बुझ जायें सितारे
तू देखे तो फूलोंको भी आ जायें पसीने

१. प्रार्थना, २. दरबारमें, ३. प्रारम्भिक, ४. अन्त, ५. तन्मयता
६ स्पष्ट, ७. धूल - धूसरित, विनीतोंमें, ८. मुहब्बतके, लिहाजके ।

बहुत मुश्किल है, जीना तेरे वादोंके भरोसेपर
जिगर कट-कट गया तब जाके आख़िर वक़्ते-शाम आया

सर भी ऐसा हो जो सिज़्दोंकी[1] हक़ीक़त[2] समझे
दर[3] भी ऐसा हो जो शाने-जबीं-साई[3] हो

तमहीदे-इल्तफ़ात[4] है, यह सुर्ख़िए-हया[5]
जैसे शफ़क़ दलील सहरके ज़हूरकी[6]

क्या जाने किस ख़यालमें गुम था असीरे-नौ[7]
अपने परोंको ख़्वाबमें फैलाके रह गया

सरे-हश्र[8] यह कौन ममनद-नशीं है ?
कोई देखा भाला सुरैया-जबीं[9] है

मुझको ही तलबका ढब न आया
वर्ना तेरे पास क्या नहीं था

हश्रमें[10] रह-रहके क्यों गिरता है आँचल आपका
जाने किस आशुफ़्ता[11]-सरकी ख़ाक दामनगीर[12] है

१-२. मत्था टेकनेकी क़ीमत, २. द्वार, ३. मत्था टेकने योग्य, ४. कृपा करनेकी भूमिका, ५. शर्मसे मुख लाल होना, ६. जैसे प्रातःकाल होनेका संकेत ऊषासे मिलता है, ७. नवीन पन्छी, ८. प्रलयमें, क़यामतमें, ९. नक्षत्र जैसा चमकता मस्तकवाला, (माशूक़), १०. क़यामतमें, ११. हटबुद्धि, सिर फिरेकी, १२. आँचलके पल्लेमें लगी हुई।

मै दुआ माँगता हूँ रस्मे-जहाँकी ख़ातिर
वर्ना मुद्दतसे नहीं ख़्वाहिशे-तासीर मुझे

हरम[1] फ़ज़ामें[2] उभरकर मेरे क़रीब आया
खड़ा हूँ जोशे-इबादतमें सर झुकाये हुए

मै इन खड़कती हुई खुश्क पत्तियोंके क़रीब
गरजता, गूँजता, अब्रे-बहार[3] देखता हूँ

हम नजर तक उठा नहीं सकते
आप मसरूफ़[4] मुँह छुपानेमें

वह मुझे भूलनेकी धुनमें हैं,
यह मेरी फ़तह[5] है, शिकस्त[6] नहीं

तूने इक रोज़ न मिलनेकी क़सम खाई थी
मै कहीं का न रहूँ तेरा कहा हो जाये

उसकी रहमतसे[7] किसे इन्कार है, लेकिन 'नदीम'
शमअकी तकदीरमें जलना था जलती रह गई

मैने समझा मेरी तक़दीरने पलटा खाया
जब बगोला कोई उट्ठा मेरे वीरानेमें

---

१. काबा, मस्जिद, २. वातावरणमें, अन्तरिक्षमें, माहौलमें, ३. बहार बादल, ४. व्यस्त, ५. जीत, ६. हार, ७. दयालुतासे।

यह ज़िन्दगी तो बस इक शमए-महफ़िले-शाम[1] है।
उधर जलाई गई और उधर बुझाई गई

क्या जानूँ आज किसका मुझे इन्तज़ार है
पलकोंकी इक झपक भी मुझे नागवार है

जानता हूँ, कि ख़ताकार[2] हूँ लेकिन या रब्बे !
यह भी कह दे कि तेरा अफ़्व[3] ख़ता-पोश[4] नहीं

जिधर देखो अदाए-नाज़में यह मुसकराते हैं
मुझे तो आजकल बेदारियोंमें[5] ख़्वाब[6] आते हैं

जब तूने पर्दे डाल दिये रूए-नाज़पर[7]
यूँ सोये हम कि भूलके भी आँख वा न की

जकड़ी हुई है, इसमें मेरी सारी कायनात[8]
गो देखनेमें नर्म हैं, तेरी कलाइयाँ

ज़िक्र इक रोज़ पलटनेका किया था तुमने
इक दिया दिलके अँधेरेमें जला रक्खा है

फ़लक भी नावक चलाने लगा है
कि अब चूकते हैं, निशाने तेरे

१. [illegible], २. [illegible], ३. [illegible], ४. [illegible], ५. [illegible], ६. स्वप्न, ७. [illegible], ८. [illegible], ९. [illegible]।

तू मेरी ज़िन्दगीसे भी कतराके चल दिया
तुझको तो मेरी मौतपै भी इख़्तियार था

मेरे आँसू तेरे दामनको तरसते ही रहे
तारे गर्दूँसे[1] उतारे तेरी अँगड़ाईने

दिये जो राहे-वफ़ापर[2] जलाये थे मैंने
वह बारगाहे-जफ़ासे[3] चुराये थे मैंने

तसव्वुर[4] आपका, एहसास[5] अपना, हमरही दिलकी[6]
मुहब्बतकी इसी तक़सीमने मंज़िलसे बहकाया

मैं तुझको भूल चुका, लेकिन एक उम्रके बाद
किया तेरा ख़याल था कि चोट उभर आई

१२ अक्टूबर १६५८ ई०]

१. आकाशसे, २. प्रतिज्ञा-पालनके मार्गमें, निर्वाहके पथमें, ३. ज़ालिम, मारक के यहाँ से, ४. चिन्तन, ५. भावना, चेतना, ६. दिलका सहयोग।

अनुक्रमणिका

शेरो शायरी, शेरो-सुख़न पाँचों भागोंमें, शायरीके नये दौरके दोनों भागोंमें और शायरीके नये मोड़के दोनों भागोंमें उल्लिखित शायरोंकी यथानुक्रम सूची

विषय-सूची

शेरो-शाइरी, शेरो-सुखनके पाँचो भागोंमें, शाइरीके नये दौर और नये मोडमें जिन महत्त्वपूर्ण-आवश्यक विषयोंपर विवेचन हुआ है, उनकी संक्षिप्त सूची यहाँ दी जा रही है। इस सूचीके अतिरिक्त बहुत-से उपयोगी अंगोंपर शाइरोंके परिचय एवं कलाममें जो व्याख्याएँ की गई हैं, उनकी सूची विस्तार-भयसे यहाँ नहीं दी जा रही है। वह प्रत्येक पुस्तकके प्रारम्भकी विषय-सूचीमें देखी जा सकती है।

शेरो-शाइरी

शेरो-सुखन

भाग पहला

शाइरीके नये दौर

पहला दौर

दूसरा दौर

प्राथमिक

[नज़्मका इतिहास]

शाइरीके नये मोड़

पहला मोड़

नई-लहर

नवीन धारा

बज़्मे-अदब